{ विश्वास वही रफ्तार नई }

बालाघाट
मंगलवार 15 सितम्बर 2026
भाद्रपद कृष्ण 15 विक्रम सम्वत 2083
वर्ष 16, अंक 352
पृष्ठ 12
मूल्य ₹ 7.00

पद्मेश मीडिया समूह का प्रकाशन

बालाघाट एक्सप्रेस

हिन्दी दैनिक

सेंसेक्स - 74,781.76
निफ्टी - 23,398.10
सोना - 1,62,946
चांदी - 2,45,000
डॉलर - 95.75

/padmeshmedia /padmeshmedia epaper.balaghatexpress.in E-mail: balaghatexpress@gmail.com

खास खबर

ममता बनर्जी बंगाल में उपचुनाव नहीं लड़ेंगी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की पूर्व सीएम ममता बनर्जी विधानसभा उपचुनाव नहीं लड़ेंगी। नंदीग्राम और रेजीनगर विधानसभा सीटों पर 6 अक्टूबर को उपचुनाव होगा। नंदीग्राम से संचिता प्रधान (डे) और रेजीनगर से रबीउल आलम चौधरी को उम्मीदवार घोषित किया गया है। नंदीग्राम सीट पर उपचुनाव मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के इसे खाली करने के बाद हो रहे हैं। रेजीनगर सीट आम जनता उन्नयन पार्टी के संस्थापक हुमायूं कबीर के इस्तीफे के बाद खाली हुई। ममता बनर्जी पहली बार विधायक 2011 में बनी थीं। उन्होंने पश्चिम बंगाल की भवानीपुर विधानसभा सीट से उपचुनाव जीतकर विधानसभा में प्रवेश किया था। इससे पहले वह लोकसभा सांसद थीं। यानी कि पिछले 15 सालों में यह पहला मौका है जब ममता विधानसभा से बाहर हैं।

दिशा सालियान केस में एफआईआर दर्ज

नई दिल्ली। दिवंगत सेलिब्रिटी मैनेजर दिशा सालियान की मौत का मामला एक बार फिर सुर्खियों में है। करीब छह साल पुराने इस केस में अब सीबीआई ने एफआईआर दर्ज कर ली है। बॉम्बे हाईकोर्ट के निर्देश के बाद केंद्रीय जांच एजेंसी ने मामले की जांच अपने हाथ में ली है। ताजा जानकारी के मुताबिक, दिशा के पिता सतीश सालियान ने भी सीबीआई अधिकारियों के सामने चार घंटे से ज्यादा समय तक अपना बयान दर्ज कराया। वह अपने वकील नीलेश ओझा के साथ अधिकारियों के सामने पहुंचे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि उनकी बेटी के साथ कथित तौर पर गैंगरेप किया गया और फिर उसकी हत्या कर दी गई। उन्होंने अपने बयान में एक अभिनेता, एक राजनेता का नाम शामिल किया।

पत्रकार तरुण तेजपाल भेजे गए जेल

गोवा। तहलका मैगजीन के पूर्व एडिटर-इन-चीफ तरुण तेजपाल ने सोमवार को गोवा की मापुसा कोर्ट में सरेंडर कर दिया। कोर्ट ने उन्हें नॉर्थ गोवा की कोलवाले सेंट्रल जेल भेज दिया, जहां उन्हें 10 साल की सजा काटनी है। 25 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने सरेंडर से छूट की उनकी याचिका खारिज कर दी थी। साथ ही तीन हफ्ते के भीतर सरेंडर करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने कहा था कि 22 सितंबर को उनकी अपील पर सुनवाई की जाएगी। तरुण तेजपाल के खिलाफ रेप का मामला 2013 का है। तेजपाल पर गोवा में अपने मैगजीन के एक कार्यक्रम के दौरान होटल की लिफ्ट में एक जूनियर महिला सहकर्मी के साथ रेप का आरोप लगा था। पीड़ित भी पेशे से पत्रकार थी। महिला पत्रकार ने सबसे पहले तहलका की मैनेजिंग एडिटर शोमा चौधरी को ई-मेल भेजकर शिकायत की।

कुछ ना कहना

ममता के 20 बागी सांसदों में 17 भाजपा में जाएंगे

यूसूफ पठान सहित तीन का बाहर से समर्थन; विधानसभा चुनाव हार के बाद टीएमसी टूटी थी

कोलकाता। टीएमसी के बागी नेता और कूच बिहार सांसद जगदीश चंद्र बर्मा बसुनिया ने बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा कि एनसीपीआई के 20 में से 17 सांसद भाजपा में शामिल होंगे। बसुनिया के मुताबिक, यह जॉइनिंग अक्टूबर में दुर्गा पूजा से पहले या बाद में होगी। सभी 17 सांसदों ने एक साथ भाजपामें जाने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा कि 20 सांसदों में से दो-तिहाई से ज्यादा के एक साथ दल बदलने पर एंटी-डिफेक्शन कानून लागू नहीं होगा। 20 में से कम से कम 14 सांसदों का साथ जाना जरूरी है।

बसुनिया ने सोमवार को पत्रकारों से कहा कि हम 17 सांसद एक साथ भाजपामें जा रहे हैं। चूंकि 20 सदस्यों में से दो-तिहाई से ज्यादा सांसद साथ जाएंगे, इसलिए एंटी-डिफेक्शन कानून हम पर लागू नहीं होगा। 14 जून को टीएमसी के 20 बागी सांसदों ने कम चर्चित नेशनलिस्ट सिटिजन्स पार्टी ऑफ इंडिया (एनसीपीआई) में विलय का ऐलान किया था। इन सांसदों ने सत्तारूढ़ एनडीए को समर्थन भी दिया था।

तीन सांसद भाजपा में शामिल नहीं होंगे

बसुनिया ने कहा कि एनसीपीआई के 20 सांसदों में से अल्पसंख्यक समुदाय के तीन सांसद औपचारिक रूप से भाजपा में शामिल नहीं होंगे। उन्होंने इसकी वजह अपने-अपने क्षेत्रों की राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिति बताई। उन्होंने दावा किया कि सांसद अबू ताहेर खान, खलीलुर रहमान और यूसुफ पठान बाहर से एनडीए को समर्थन देंगे। बसुनिया ने कहा कि वे एनडीए का समर्थन करेंगे। उन्हें महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां या विभाग दिए जा सकते हैं।

हिंदी दिवस पर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा ऐलान

अपनी भाषा में पढ़ और सुन पाएंगे अदालत के अहम फैसले

नई दिल्ली। अदालत के कामकाज में हिंदी भाषा के प्रयोग को लेकर मांग लंबे समय से उठती रही है। इस बार हिंदी दिवस के मौके पर सुप्रीम कोर्ट ने बड़ी पहल की है। शीर्ष अदालत ने हिंदी में नई जन सूचना सेवा शुरू करने की घोषणा की है। अब तय किया गया है कि अदालत के सभी महत्वपूर्ण फैसलों का सरल हिंदी में सारांश उपलब्ध कराया जाएगा। इसके अलावा इन फैसलों के हिंदी में ऑडियो और वीडियो बुलेटिन भी उपलब्ध होंगे। इस सेवा के तहत सुप्रीम कोर्ट के चयनित महत्वपूर्ण फैसलों और आदेशों का सरल हिंदी में सार उपलब्ध कराया जाएगा।

इसके अलावा रोजाना करीब 15 से 30 मिनट का हिंदी ऑडियो और वीडियो बुलेटिन भी उपलब्ध कराया जाएगा। इन बुलेटिन में सुप्रीम कोर्ट के महत्वपूर्ण फैसलों की जानकारी दी जाएगी और संबंधित आधिकारिक फैसले का लिंक भी उपलब्ध होगा। सुप्रीम कोर्ट के मुताबिक यह पहल आम नागरिकों, मुकदमा करने वालों और विशेष रूप से दिव्यांगजनों की सुविधा के लिए की जा रही है। इसका उद्देश्य लोगों को कोर्ट के महत्वपूर्ण फैसलों, उनके प्रभाव और आगे की प्रक्रिया को उनकी अपनी भाषा में आसानी से समझने में मदद करना है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यह सेवा पहले हिंदी में शुरू होगी और इसके बाद चरणबद्ध तरीके से अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध कराने की दिशा में काम किया जाएगा। इससे अलग-अलग भाषाई क्षेत्रों के नागरिक सुप्रीम कोर्ट के महत्वपूर्ण फैसलों की संक्षिप्त और सहज जानकारी अपनी भाषा में प्राप्त कर सकेंगे। इसके लिए आवश्यक व्यवस्थाएं पूरी की जाएंगी और फिर हिंदी में यह सेवा शुरू की जाएगी। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का अनुवाद भी एक बड़ा मसला रहा है। कई बार गलत अनुवाद के चलते भ्रामक जानकारियां भी मीडिया और सोशल मीडिया में प्रसारित हो जाती हैं। अब यदि सुप्रीम कोर्ट के स्तर पर ही अनुवाद करके फैसलों का सारांश प्रस्तुत किया जाएगा तो इससे गलत सूचनाओं के फैलने पर भी रोक लग सकेगी।

राहुल गांधी मानहानि मामले में बहस टली, अब 16 सितंबर को होगी सुनवाई

सुल्तानपुर। गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ कथित अपमानजनक टिप्पणी से जुड़े लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ चल रहे मानहानि के मामले में सोमवार को एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट कोर्ट में प्रस्ताव के कारण अंतिम बहस नहीं हो सकी। राहुल गांधी के अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ल ने बताया हाईकोर्ट ने निगरानी अर्जी खारिज होने के खिलाफ परिवादी की याचिका हाईकोर्ट ने खारिज कर दी है। वहीं परिवादी के अधिवक्ता संतोष पांडेय ने बताया एमपी-एमएलए कोर्ट ने बहस के लिए 16 सितंबर की तारीख नियत की है।

कोतवाली देहात के हनुमानगंज निवासी भाजपा नेता विजय मिश्र ने वर्ष 2018 में राहुल गांधी द्वारा गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ की गई कथित टिप्पणी से आहत होकर मानहानि का परिवाद दाखिल किया था। मामले की सुनवाई एमपी-एमएलए कोर्ट में चल रही है। साक्ष्य की कार्यवाही पूरी होने के बाद अदालत ने अंतिम बहस के लिए मामला नियत किया था। इसी बीच 12 मार्च को परिवादी विजय मिश्र की ओर से राहुल गांधी की आवाज की जांच और मिलान विधि विज्ञान प्रयोगशाला से कराने की अर्जी दाखिल की गई थी। अदालत ने दो मई को अर्जी खारिज कर पूर्व आदेश के अनुसार अंतिम बहस शुरू कराने का आदेश दिया था।

इसके बाद परिवादी की ओर से मजिस्ट्रेट कोर्ट के आदेश को सेशन कोर्ट में निगरानी याचिका के जरिए चुनौती दी गई। निगरानी याचिका भी खारिज हो चुकी है और मूल पत्रावली ट्रायल कोर्ट में वापस आ गई है। गौरतलब है कि राहुल गांधी पूर्व में इस मामले में न्यायालय में उपस्थित होकर जमानत प्राप्त कर चुके हैं। दंड प्रक्रिया संहिता के प्रावधानों के तहत उनका बयान भी अदालत में दर्ज हो चुका है। अब मामले में बहस के बाद कोर्ट अपना फैसला सुनायेगी।

दिशा केस में सीबीआई ने दर्ज की एफआईआर, आदित्य ठाकरे सहित कई नामों का जिक्र

मुंबई। दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व मैनेजर दिशा सालियन की जून 2020 में हुई मौत के मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की है। बॉम्बे हाईकोर्ट के निर्देश के बाद कार्रवाई हुई है। मामले में दिशा के पिता सतीश सालियन का बयान भी सीबीआई ने दर्ज किया है। जानकारी के मुताबिक, उनके बयान में शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे, अभिनेता डिनो मोरिया, रिया चक्रवर्ती और सूरज पंचोली सहित कई लोगों के नामों का उल्लेख है। हालांकि, किसी व्यक्ति का नाम बयान या एफआईआर में आना अपने आप में अपराध सिद्ध होने के बराबर नहीं है।

दिशा सालियन की 8 जून 2020 को मुंबई के मालाड इलाके में एक इमारत की 14वीं मंजिल से गिरने के बाद मौत हुई थी। मुंबई पुलिस की पिछली जांच में आत्महत्या बताया गया था और किसी तरह की आपराधिक साजिश के प्रमाण नहीं मिलने की बात कही गई थी। हालांकि, दिशा के पिता ने मौत की परिस्थितियों पर सवाल उठाकर नए सिरे से जांच की मांग की थी। बॉम्बे हाईकोर्ट ने 2 सितंबर 2026 को मामले की जांच सीबीआई को सौंपने और एफआईआर दर्ज करने का निर्देश दिया। सीबीआई ने दिशा के पिता सतीश का बयान दर्ज किया है। उन्होंने जांच अधिकारियों के सामने कई लोगों के नाम और मामले से संबंधित अपनी आशंकाओं का उल्लेख किया। उनके बयान में आदित्य, डिनो मोरिया, रिया चक्रवर्ती और सूरज पंचोली के नाम बताए जाने की खबर है। सतीश की ओर से पहले भी आरोप लगाए गए थे कि उनकी बेटी की मौत की परिस्थितियां संदिग्ध थीं और मामले की जांच में गंभीर सवाल हैं। मामले से जुड़े आरोपों में तत्कालीन पुलिस अधिकारियों और जांच से जुड़े अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की मांग की गई है। खबरों के अनुसार, पूर्व मुंबई पुलिस आयुक्त परमबीर सिंह और तत्कालीन पुलिस अधिकारी सचिन वाझे सहित अन्य पुलिस अधिकारियों का भी उल्लेख किया गया है। सीबीआई अब पुराने केस रिकॉर्ड, पुलिस जांच से जुड़े दस्तावेज और उपलब्ध अन्य साक्ष्यों की समीक्षा कर रही है। दिशा की मौत और उसके कुछ दिनों बाद सुशांत सिंह राजपूत की मौत के कारण यह मामला लंबे समय से चर्चा में रहा है। अब सीबीआई द्वारा एफआईआर दर्ज करने के बाद जांच नए चरण में पहुंच गई है। एजेंसी घटनाक्रम, उपलब्ध साक्ष्यों, पुराने जांच रिकॉर्ड और संबंधित लोगों के बयानों की पड़ताल करेगी। फिलहाल जांच शुरुआती चरण में है और सीबीआई की ओर से सामने आने वाले सबूतों के आधार पर स्पष्ट होगा कि दिशा की मौत के पीछे वास्तव में क्या परिस्थितियां थीं और मामले में लगाए गए आरोपों में कितनी सच्चाई है।

मीरवाइज की ईरान को सलाह- भारत के मार्ग पर चलें, युद्ध नहीं संवाद चुनें

नई दिल्ली,। ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव के बीच, कश्मीरी प्रमुख धर्मगुरु मीरवाइज उमर फारूक ने ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान को महत्वपूर्ण संदेश दिया है। उन्होंने युद्ध की बजाय संयम, टकराव की बजाय संवाद और सैन्य कार्रवाई की बजाय कूटनीति को अपनाने की बात कही है। मीरवाइज ने स्पष्ट कहा कि लंबे संघर्ष और अनसुलझे विवाद केवल मानवीय पीड़ा बढ़ाते हैं और अंततः सबसे कठिन विवादों को बातचीत की मेज पर लौटना पड़ता है। उन्होंने भारत की पहचान महात्मा गांधी की अहिंसा की विरासत से जोड़कर कहा कि भारत संयम, संवाद और कूटनीति को बढ़ावा देने में रचनात्मक भूमिका निभा सकता है।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान मीरवाइज ने ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अराघची से मुलाकात की, जहां राजनीति, संघर्ष, शांति और संवाद के रास्तों पर विस्तार से चर्चा हुई। इस दौरान महात्मा गांधी की अहिंसा के मार्ग को भी एक संभावित समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया। हालांकि, ईरानी राष्ट्रपति पेजेशकियान के साथ मीरवाइज की सीधी, अलग बैठक संभव नहीं हुई।

इसके बावजूद, मीरवाइज ने पेजेशकियान के लिए लिखे पत्र में ईरान के साथ एकजुटता जताकर संवाद को ही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता बताया। उन्होंने लिखा कि यह ऐसा समय है जब विवेक, संयम और दूरदृष्टि की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।

गोवा नाइटक्लब अग्निकांड : तीन मुख्य आरोपियों ने किया सरेंडर

-सुप्रीम कोर्ट से याचिकाएं खारिज होने के दो सप्ताह बाद अदालत पहुंचे आरोपी, 25 लोगों की हुई थी मौत

पणजी। गोवा के 'बर्च बाय रोमियो लेन' नाइटक्लब अग्निकांड मामले में तीन मुख्य आरोपियों ने सोमवार को मापुसा की अपर जिला एवं सत्र अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। यह कार्रवाई सुप्रीम कोर्ट द्वारा जमानत रद्द किए जाने के खिलाफ उनकी याचिकाएं खारिज किए जाने के करीब दो सप्ताह बाद हुई है। आत्मसमर्पण करने वालों में नाइटक्लब के मालिक सौरभ लूथरा और गौरव लूथरा तथा उनके कारोबारी साझेदार अजय गुप्ता शामिल हैं।

उत्तरी गोवा के अरपोरा स्थित नाइटक्लब में 6 दिसंबर 2025 को भीषण आग लगी थी। हादसे में 25 लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हुए थे। मुंबई हाईकोर्ट ने मामले की गंभीरता और कानूनी कार्यवाही की आवश्यकता को देखते हुए 18 अगस्त को तीनों आरोपियों की जमानत रद्द कर उन्हें दो सप्ताह के भीतर आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया था। आरोपियों ने हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी, लेकिन शीर्ष अदालत ने 31 अगस्त को

उनकी याचिकाएं खारिज कर दीं। सुप्रीम कोर्ट ने निचली अदालत को मामले की सुनवाई में तेजी लाने का भी निर्देश दिया था।

आरोपियों की ओर से पैरवी कर रहीं अधिवक्ता सौम्या ड्रागो ने बताया कि अदालत ने उनके मुवक्किलों का आत्मसमर्पण स्वीकार कर आवश्यक हिरासत संबंधी आदेश जारी किए हैं। उन्होंने बताया कि आरोपियों के चिकित्सा दस्तावेजों और चिकित्सकों की सलाह के आधार पर अदालत में कुछ चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए आवेदन दिया गया था। अदालत ने दवाओं और गद्दे से संबंधित अनुरोध स्वीकार कर लिए हैं, जबकि विशेष जूतों की मांग पर जांच अधिकारी से जवाब मांगा गया है।

मामले में दाखिल आरोपपत्र के अनुसार आरोपियों के खिलाफ गैर-इरादतन हत्या, मानव जीवन को खतरे में डालने वाले कृत्य, आग और ज्वलनशील पदार्थों के संबंध में लापरवाही, धोखाधड़ी, जालसाजी, जाली दस्तावेजों को असली के रूप में इस्तेमाल करने और आपराधिक साजिश समेत भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

पाकिस्तान से यूएई के रास्ते भारत लाया जा रहा 362 टन सूखा खजूर जब्त

नासिक। पाकिस्तान से वस्तुओं के आयात पर भारत सरकार की पाबंदी के बावजूद तीसरे देश के रास्ते माल भारत लाने की कोशिश का मामला सामने आया है। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान से कथित तौर पर भेजे गए करीब 362 मीट्रिक टन यानी 3 लाख 62 हजार किलोग्राम से अधिक सूखे खजूर की खेप जब्त की है। डीआरआई अधिकारियों को मिली खुफिया सूचना के आधार पर नासिक स्थित सीएफएस अंबड़ में कार्रवाई की गई। जांच के दौरान खजूर से भरे 13 कंटेनर जब्त किए गए। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि यह खेप मुंबई स्थित एक कंपनी ने आयात की थी। अधिकारियों के अनुसार, यह माल संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के जेबेल अली बंदरगाह के रास्ते भारत पहुंचा था। हालांकि, आयात संबंधी दस्तावेजों में माल का मूल देश यूएई बताया गया था। जांच में संदेह है कि पाकिस्तान में बने माल की वास्तविक उत्पत्ति छिपाने के लिए सुनियोजित तरीके से ट्रांसशिपमेंट का सहारा लिया गया। जांच के मुताबिक, सूखे खजूर की खेप सबसे पहले पाकिस्तान के कराची बंदरगाह से कंटेनरों में लादकर यूएई के जेबेल अली बंदरगाह भेजी गई। वहां माल को दूसरे कंटेनरों में स्थानांतरित किया गया। इसके बाद पाकिस्तानी नागरिकों द्वारा संचालित संस्थाओं के माध्यम से इसे भारत भेजने के लिए दूसरे जहाज पर लोड किया गया।

यूनिफॉर्म सिविल कोड पर एनडीए में खींचतान, जदयू बोली... बिहार में लागू नहीं होने देंगे यूसीसी

पटना। यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बयान के बाद बिहार में सियासत गरमा गई है। अमित शाह ने दावा किया है कि 2029 से पहले बीजेपी और एनडीए की सरकार वाले सभी 21 राज्यों में समान नागरिक संहिता लागू करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि देश के कई राज्यों में यूसीसी लागू हो चुका है। शाह के इस बयान के बाद बिहार एनडीए में खींचतान शुरू हो गई है।

जदयू ने साफ तौर पर कहा है कि यूसीसी बिहार में लागू नहीं होगा। विधायक श्याम रजक ने कहा, 'जब यह बिल संसद में आया था, तब हमारे नेता (नीतीश कुमार) ने साफ कहा था कि मैं बिल का समर्थन करता हूं, लेकिन अपने राज्य में इसे लागू नहीं होने दूंगा। हम उस बात पर कायम हैं। वहीं हम पार्टी के अध्यक्ष संतोष सुमन ने गृह मंत्री के बयान का समर्थन किया है। उन्होंने कहा, 'यह मामला किसी पक्ष-विपक्ष का नहीं है। एक सरकार का मामला है। सरकार को लागू करना है तो गठबंधन के सभी दलों के साथ कॉर्डिनेशन कर उनसे बात की जाएगी। उसमें जो बातें होंगी, उसे फिर हम आपके सामने रखेंगे।'

एक व्यक्ति का बोलना, पूरे पार्टी का बयान नहीं

यूसीसी बिल को लेकर केंद्रीय गृहमंत्री के बयान पर मंत्री संतोष सुमन ने कहा कि इसकी जानकारी मुझे नहीं है और हम लोगों के संज्ञान में यह मामला नहीं आया है। ऐसी कोई बात होगी तो एनडीए के सभी घटक दलों के नेताओं को कॉन्फिडेंस में लिया जाएगा। उनसे बात होगी। अभी इस पर कुछ भी बोलना विवाद बढ़ाना है। श्याम रजक के बयान पर संतोष सुमन ने कहा, 'एक व्यक्ति का बोलना, पूरे पार्टी का बयान नहीं होता है। इस मुद्दे पर मेरा व्यक्तिगत राय रखना अभी सही नहीं होगा। एनडीए में कोई घमासान नहीं है। हम सभी घटक दल मिलकर इस पर विचार करेंगे, फिर फैसला होगा। सीएम से हम लोग बात करेंगे और यदि बिल में कोई गलती, कोई गड़बड़ी नहीं है तो यूसीसी निश्चित तौर पर लागू होगी।

गिरिराज सिंह ने किया समर्थन

यूसीसी पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा है कि दुर्भाग्य है देश का, आजादी के बाद ही नेहरू जी को लागू करना चाहिए था। लेकिन वोट बैंक की राजनीति ने बहुत नुकसान पहुंचाया है।

कटिहार रेलवे स्टेशन पर म्यांमार के चार नागरिक हिरासत में

कटिहार। बिहार के कटिहार रेलवे स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने म्यांमार के चार नागरिकों को बिना वैध दस्तावेज यात्रा करने के आरोप में हिरासत में लिया है। जिला अधिकारियों ने बताया कि हिरासत में लिए गए लोगों में एक वयस्क पुरुष और 3 नाबालिग लड़कियां शामिल हैं। यह कार्रवाई कटिहार रेलवे स्टेशन पर की गई।

आरपीएफ निरीक्षक विक्रम कुमार ने जानकारी दी कि कामाख्या-आनंद विहार सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12505) के स्टेशन पहुंचने पर आरपीएफ की टीम ने संदिग्ध गतिविधि देखकर इन चारों से पूछताछ की। पूछताछ के दौरान वे कोई वैध पासपोर्ट, नागरिकता प्रमाण पत्र या अन्य कानूनी पहचान संबंधी दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सके, जिसके बाद उन्हें हिरासत में ले लिया गया। पूछताछ में चारों के म्यांमार मूल के होने की पुष्टि हुई। इसके बाद आरपीएफ ने उन्हें आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) के हवाले कर दिया। जीआरपी ने इस मामले में इमिग्रेशन एंड फॉरिनर्स एक्ट, 2025 की धारा 21 तथा पासपोर्ट एक्ट, 1920 की धारा 3 के तहत मामला दर्ज किया है। तीनों नाबालिग लड़कियों को बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) और किशोर न्याय बोर्ड (जेजेबी) के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। आरपीएफ और जीआरपी इस बात की जांच कर रही हैं कि ये विदेशी नागरिक कटिहार तक कैसे पहुंचे, उनका गंतव्य क्या था, और क्या उन्हें यहां लाने या ले जाने में किसी अन्य व्यक्ति की संलिप्तता है।

हरितालिका तीज का महिलाओं में दिखा उत्साह

निर्जला व्रत,धारण कर बनाया रेत का शिवलिंग, जलाशयों में गौर विसर्जन आज

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। पति की दीर्घायु और सुयोग्य वर की कामना के लिए सुहागन महिलाओं और युवतियों में हरितालिका तीज का खासा उत्साह देखा गया।जिन्होंने सोमवार को हरितालिका तीज पर निर्जला व्रत धारण कर विशेष पूजा अर्चना की। सुबह निर्जला व्रत रखने वाली महिलाओं और युवती ने रेत से शिवलिंग बनाकर विधि विधान से गौरपूजन किया। प्रथम पहर की इस पूजा के बाद देर शाम को महिलाएं और युवतियों ने, विधि विधान से भगवान शंकर और माता पार्वती का पूजन किया। इस अवसर पर स्थानीय वार्ड क्रमांक 24, वैनगंगा नदी के शंकरघाट,छोटा पुल सहित अन्य स्थानों पर एकजुट हुई व्रतधारी महिलाओं ने एक दूसरे को तीज की शुभकामनाएं देकर पहले साफ रेत निकाली जिसके बाद बालू से गौरा बनाकर पूजा-अर्चना की है।यहां शिवशक्ति को पूजन सामग्री और सुहाग का सामग्री चढ़ाई गई। वही फल एवं व्यंजनों का भोग लगाकर पति की दीर्घायु सुयोग्यवर, परिवार की सुख समृद्धि सहित अन्य मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए विशेष प्रार्थना की गई।

भगवान शिव और माता पार्वती के अखंड जुड़ाव का प्रतीक है हरितालिका

आपको बताए कि भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पर मनाए जाने वाले हरितालिका तीज का निर्जला व्रत, भक्ति भाव से मनाया जा रहा है।जो गौर विसर्जन तक रहेगा।भगवान शिव और माता पार्वती के अखंड जुड़ाव के प्रतीक इस दिन में भगवान शिव एवं माता पार्वती की विधिवत पूजा की जाती है। मान्यता है कि इस दिन गौरी-शंकर की विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना करने से अखंड सौभाग्य और सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है। हरितालिका तीज पर्व जिला मुख्यालय सहित पूरे जिले में मनाया जा रहा है।प्रथम पहर और द्वितीय पहर की पूजा में व्रत रखने वाली महिलाओ और युवतियों ने भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना करके पति की दीर्घायु और सुयोग्य वर की मनोकामना का आशीर्वाद मांगा। प्रथम पहर की दिन में हुई पूजा में गौरपूजन किया गया और सुंदर मंडप के नीचे गौर को विराजित कर उसका विधि, विधान से रात्रि में पूजन किया जाएगा।

पति की लंबी उम्र के लिए महिलाओं ने रखा हरितालिका व्रत

जिले भर में महिलाओ ने हरितालिका व्रत रखा।जहा प्राचीन और धार्मिक मान्यता अनुसार महिलाओ ने हरितालिका का तीज व्रत रखने के लिए गौर निकाला।जहा महिलाए बाजे गाजे के साथ हाथों में पूजा की थाली लेकर नदियों और अन्य जलाशयो में पहुंची।जहा महिलाओ ने पूजा अर्चना कर हरितालिका तीज पर माता पार्वती और भगवान शिव की विधि विधान से पूजा अर्चना कर, सुहागन महिलाओं ने अखंड सौभाग्य प्राप्ति की कामनाए की।बताया गया कि सुहागन महिला अपने पति की लंबी उम्र के लिए निर्जला व्रत रखती है उपवास का समापन अगले दिन सूर्य उदय के बाद किया जाता है सुहागन महिला के अलावा कुंवारी कन्या भी इस व्रत को रखती है कहा जाता है कि कुंवारी कन्या इस व्रत को रखती है तो उन्हें भविष्य में अच्छे वर की प्राप्ति होती है।

गौर विसर्जन आज

बताया जा रहा है कि यह व्रत वर्ष में एक बार आने वाला कठिन व्रत है, व्रत सभी सौभाग्यवती स्त्रियां निर्जला निराहार रहकर करती है, यह सबसे लंबी अवधि का व्रत माना गया है। जो सूर्योदय से शुरु होकर दूसरे दिन सूर्योदय तक उपासक निराहार निर्जला रहकर व्रत करते हैं।जबकि हरितालिका तीज के दूसरे दिन गौर का विसर्जन मंगलवार 15 सितंबर को नगर के विभिन्न जलाशयों में किया जाएगा।

हर स्त्री के लिए यह व्रत जरूरी है- महिलाएं

हरितालिका तीज को लेकर की गई चर्चा के दौरान व्रतधारी महिलाओं ने बताया कि हरितालिका तीज पूजन में पांच प्रकार के व्यंजन अर्पित कर रेत से भगवान शंकर और पार्वती के अक्श को हल्दी, कुमकुम, चंदन, बेलपत्र और भगवान शंकर एवं माता पार्वती को चढ़ने वाले फल एवं सुहाग की सामग्री चढ़ाकर शुभमुहुर्त पर भगवान शिव और माता पार्वती का पूजन किया जाता है और रात्रि में व्रतधारी महिलायें, एकदूसरे के घरो में पहुंची और हल्दी कुंमकुंम का अखंड सौभाग्य का तिलक लगायेगी और रात्रि जागरण करती है। उन्होंने आगे बताया कि यह व्रत पति की दीर्घायु ,सुयोग्यवर परिवार की सुख समृद्धि, सहित अन्य मंगल कामनाओं के लिए किया जाता है जो स्त्रियों के लिए बहुत जरूरी है।

बड़ा कठिन होता है हरतालिका का व्रत

व्रतधारी महिलाओ ने बताया कि हरतालिका व्रत की पूजा-अर्चना पति की लंबी आयु व पति की खुशहाली के लिए है। उन्होंने बताया कि गौर निकालने में कम से कम पांच व सात व्रतधारी महिलाए तीज का गाना गाकर पूजा-अर्चना करती है। इस वर्ष हरतालिका व्रत की पूजा मुहूर्त में करने के बाद शाम के समय फुलेरा बांधकर रतजगा किया जाएगा और सुबह होते ही पूजन-सामग्री का विसर्जन कर व्रत को पति के हाथों जल पीकर तोड़ा जाएगा। उन्होंने बताया कि हरतालिका का व्रत बड़ा ही कठिन होता है। इस व्रत को रखने के लिए भौर में ही उठकर दातून करना होता है जिसके बाद जब तक पूजा-अर्चना समाप्त नहीं होती है तब तक जल को पीना भी वर्जित माना गया है।

54 साल के संघर्ष को खत्म करने के लिए समाज एक हो - मुरचुले

पदमेश न्यूज।परसवाड़ा। पनिका समाज मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में क्षेत्रीय बंधन (जिलों के आधार पर आरक्षण का भेद) को समाप्त करने और अपनी जाति को अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) से हटाकर पुनः अनुसूचित जनजाति (एसटी) श्रेणी में शामिल करने के लिए रणनीति बना रहा है। तत् संबंध में अखिल भारतीय पनिका समाज के मध्य-प्रदेश के मीडिया प्रभारी विशाल महानंद ने बताया कि पनिका/पनका समाज 16

दिसंबर 1971 तक पूरे देश में अनुसूचित जनजाति में शामिल था। 17 दिसंबर 1971 को क्षेत्रीय बंधन कानून लागू होने के बाद पनिका समाज को दो वर्गों में बांट दिया गया - एक भाई अनुसूचित जनजाति में और दूसरा भाई सामान्य/ओबीसी वर्ग में। इसका विरोध समाज के लोग पिछले 54 सालों से लगातार कर रहे हैं, पर आज तक सफलता नहीं मिल पाई है जिससे समाज आहात है। जिसको लेकर अब युवा सामने आया है और युवाओं ने बिहारी दास मुरचुले के अगुवाई में अखिल भारतीय पनिका/पनका समाज संगठन का निर्माण किया है। जिसमे देश और सभी प्रदेशों के युवाओं और बुजुर्गों सहित समाज के समस्त लोगों को जोड़कर मध्यप्रदेश के बैहर तहसील, माँ नर्मदा उद्गम स्थल अमरकंटक तथा छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में बैठकें आयोजित की गईं। सभी वरिष्ठजनों को संरक्षक बनाकर युवा टीम के माध्यम से लड़ाई लड़ने का संकल्प लिया गया। और सर्व सम्मति से संगठन का राष्ट्रीय संयोजक के रूप में बिहारी दास मुरचले को नियुक्त कर सभी अधिकार दिए गए। इस दौरान बिहारी दास मुरचुले ने एक देश,एक संविधान,एक जाति,एक अधिकार - आदिवासी का नारा देते हुए पनिका समाज को उनका अधिकार दिलाने के लिए दो साल का समय मांगा गया और किसी सहयोग राशि/चंदा के, दो साल के समय में एक झंडा, एक बैनर के नीचे सभी कार्यक्रम, आंदोलन, शासन-प्रशासन को पत्राचार, राजनैतिक और न्यायालयीन प्रक्रिया से खोया अधिकार वापस लेने का संकल्प लिया। इस दौरान बैठक में उपस्थित सभी समाजिक बंधुओं ने बिहारी दास मुरचुले के कार्ययोजना की सराहना किया, और अपने खोए अधिकार को पाने के लिए बिहारी दास मुरचुले के हर संभव मदद और साथ खड़े रहने की बात कही। बैहर,अमरकंटक और बिलासपुर की बैठक में सर्वसम्मति से तय हुआ था कि दो साल तक कोई भी पुरानी समिति अलग से कोई ऐसी बैठक या कार्य नहीं करेगी जिससे समाज में विखंडन दिखे और संगठन की गति में अवरोध उत्पन्न हो। लेकिन समाज की कुछ समितियां गति में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। जिसको लेकर अखिल भारतीय पनिका समाज के राष्ट्रीय संयोजक बिहारी दास मुरचुले ने खेद प्रकट करते हुए कहा कि आज जरूरत है कि हम सभी मतभेद भुलाकर एकजुटता दिखाएं। यदि किसी की पुरानी समिति 15 साल से काम कर रही है और उसे सफलता नहीं मिली है, तो मेरा उनसे आग्रह है कि आप दो साल तक शांत रहकर इस युवा संगठन को सहयोग करें। सहयोग नहीं कर सकते तो कम से कम बाधा न बनें। उन्होंने कहा कि यदि इन दो सालों में हम सफल नहीं हुए, तो इसकी जिम्मेदारी मेरी होगी। पर यदि हम बिखर गए तो इसका आरोप इतिहास हम सभी पर लगाएगा कि हम संगठित नहीं हो सके। साथ ही उन्होंने 54 साल के बंटवारे को खत्म करने के लिए एक होने समाज से अपील की।

आवश्यकता है
लड़कों की
आवश्यकता है
10वीं पास नो डी फार्मा
नो बी फार्मा
मो. 9340308019

दि बुद्धिस्ट सोसायटी ऑफ इंडिया की जिला और नगर शाखा का पुर्नगठन सम्पन्न

अशोक मेश्राम जिलाध्यक्ष, अभिराज मेश्राम महामंत्री और प्रफुल्ल डोंगरे नगर अध्यक्ष निर्वाचित

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। भारतीय बौद्धों की सर्वोच्च धम्म संस्था दि बुद्धिस्ट सोसायटी ऑफ इंडिया (भारतीय बौद्ध महासभा) की बालाघाट जिला एवं नगर शाखा का पुनर्गठन, बूढ़ी स्थित एक लान में किया गया। कार्यक्रम में जिलेभर से पहुंचे सैकड़ों उपासक-उपासिकाओं और सदस्यों की मौजूदगी रही। प्रथम सत्र में

सामूहिक पूजा-वंदना के बाद संगठन के उद्देश्यों, धम्म कार्य तथा पदाधिकारियों की भूमिका को लेकर मार्गदर्शन दिया गया।इसके बाद पुरानी शाखा को भंग कर संविधान के अनुरूप नई कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया पूरी की गई। सहमति पत्र प्राप्त होने के बाद निर्वाचन अधिकारियों की उपस्थिति में जिला एवं नगर इकाई के पदाधिकारियों की घोषणा की गई।कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं निर्वाचन अधिकारी डॉ. चरनदास ढेंगरे, अध्यक्ष केंद्रीय शिक्षक एवं जीओसी मध्यप्रदेश ने की। प्रमुख अतिथि के रूप में डॉ. शांताराम वाघ, हेमलता डोंगरे, आर.के. कठाने तथा राजकपूर कामडे मौजूद रहे।इस अवसर पर संस्था के पूर्व राष्ट्रीय संगठक दिवंगत सी.एल. बौद्ध, सेवानिवृत्त तहसीलदार दतिया तथा बालाघाट के पूर्व जिलाध्यक्ष दिवंगत एस.एल. रंगारे को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इनके हाथों में सौंपी गई जिले की कमान

जिला शाखा में अशोक कुमार मेश्राम को जिलाध्यक्ष और अभिराज मेश्राम को महामंत्री चुना गया। हेमलता डोंगरे, खुशीयाल मेश्राम, प्रमीला चौहान और बी.आर. रामटेके को विभिन्न उपाध्यक्ष पदों की जिम्मेदारी दी गई। सचिव पद के लिए रविन्द्र कुमार शेण्डे, पृथ्वीराज चौरे, गजेन्द्र कुमार नागदेवे, आर.सी. मनघटे, शीतल कावड़े, रोमेश मेहरा (मासुरकर) और शैलेश सुखदेवे का चयन हुआ।संगठन की जिम्मेदारी देवानंद रंगारे, हरिदास मेश्राम, रत्नशील मेश्राम, इंद्रकला कठाने, धरम श्यामकुंवर, पुरनलाल मेश्राम और धनराज खोब्रागढ़े को सौंपी गई। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में आनंद कुमार रामटेके, तिलकचंद्र गजभिये, मंजु महेन्द्र सूर्यवंशी और के.एल. धाकड़े को शामिल किया गया।

नगर की कमान इनके हाथों में

उधर नगर शाखा के लिए प्रफुल्ल (राजा) डोंगरे को अध्यक्ष एवं इंजी. डी.डी. डोंगरे को महासचिव बनाया गया। पूर्णिमा गनवीर, प्रमीला पटले और आनंदराम वैध को उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली। आयुष मेश्राम को कार्यकारी सचिव चुना गया। सचिव पद पर अल्का मेश्राम, श्रद्धा गडपाल, रीता चौहान, बुधराम भीतेकर, स्मीता उके और सपना नागवंशी का चयन हुआ। संगठन की जिम्मेदारी उर्मिला मेश्राम, श्यामाताई डोंगरे, उर्मिला ताई वासनिक और मीनाक्षी डोंगरे को दी गई। समारोह में जिले एवं प्रदेश के वरिष्ठ पदाधिकारियों के मार्गदर्शन में मुख्यालय सहित विभिन्न तहसीलों से आए प्रतिनिधियों को संगठन में जिम्मेदारियां दी गई। दोनों इकाइयों को शाखा मान्यता पत्र प्रदान कर नवनियुक्त पदाधिकारियों का अभिनंदन किया गया।

सभी को निष्ठा और निरंतरता के साथ कार्य करना चाहिए- ढेंगरे

निर्वाचन अधिकारी डॉ. चरनदास ढेंगरे ने अपने उद्‌बोधन मे कहा कि संस्था का मुख्य उद्देश्य शीलवान समाज का निर्माण करना है। इसके लिए प्रत्येक पदाधिकारी को संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निष्ठा और निरंतरता के साथ कार्य करना चाहिए। वहीं डॉ. शांताराम वाघ ने कहा कि पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता दो नाव की सवारी न करें और संगठन के प्रति पूरी निष्ठा के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें।

गणपति बप्पा मोरिया के जय घोष से गूंजा शहर

घर और सार्वजनिक पंडालों में स्थापित की गई भगवान गणेश की प्रतिमाऐं

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी जिला मुख्यालय सहित अन्य तहसील व ग्रामीण अंचलों में गणेश उत्सव की धूम देखी जा रही है।जहां गणेश उत्सव के अवसर पर जगह-जगह सार्वजनिक स्थानों और घरोंन घर भगवान गणेश की प्रतिमाएं स्थापित कर उनकी विशेष पूजा आराधना शुरू कर दी गई है। जहां पूजा अर्चना का यहां सिलसिला आगामी 10 दिनों तक जिले में देखने को मिलेगा।जहां 10 दिनों बाद स्थापित की गई इन गणेश प्रतिमाओं का जिले के विभिन्न जलाशयों में विसर्जन किया जाएगा।आज 14 सितंबर को प्रथम पूज्य भगवान गणेश के आगमन को लेकर घर, मंदिर और पंडालो में भगवान गणेश की भक्तों द्वारा मनोहारी प्रतिमा को विराजित किया गया।

10 दिनों तक होगी विशेष उपासना

सभी देवी देवताओं में प्रथम पूज्य भगवान गणेश के दस दिवसीय गणेशोत्सव की शुरूआत आज 14 सितंबर से हो गई। सोमवार को भगवान गणेश की मनोहारी और आकर्षक प्रतिमाओं को पूरे भक्तिभाव के साथ मंदिर, पंडालों और घरो में विराजित किया गया और दस दिनों तक भक्तिभाव से उनकी पूजा-अर्चना, आराधना और उपासना की जायेगी।

भक्तगणों ने किया गणपति बप्पा मोरिया का जय घोष

10 दिनों तक मनाये जाने वाले गणेशोत्सव पर्व को लेकर घरो में भक्ति का माहौल है।इस वर्ष सार्वजनिक स्थलों और घरो में गणेश स्थापना को लेकर खासी रौनक देखी जा रही है। कहते है कि विघ्नहर्ता, रिद्धी-सिद्धी के दाता एवं

बुद्धि के विधाता भगवान गणेश की इन दस दिनों में की जाने वाली सच्चे मन से आराधना और उपासना से भक्त की हर मनोकामना पूर्ण होती है।जगत के कल्याण के लिए भगवान गणेशजी, भगवान शिव और देवी पार्वती की तपस्या से प्रसन्न होकर भाद्र मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को कैलाश पर भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र के रूप में प्रकट हुए थे। इसलिए इस चतुर्थी के दिन भगवान गणेश का जन्मोत्सव मनाया जाता है। ऐसी कहा जाता है कि अन्य किसी भी दिनों की अपेक्षा इस दिन गणेशजी की पूजा और आराधना का फल जल्दी प्राप्त होता है। पूरे जिले में मनाये जाने वाले दस दिवसीय गणेशोत्सव पर्व को लेकर भक्तों मे जोश और उत्साह दिखाई दे रहा है। आज प्रतिमा को घर और विभिन्न पंडाल ले जाते समय भक्तों में खासा उत्साह नजर आया और भक्तगण गणपति बप्पा मोरिया की जय घोष लगाते हुए नजर आए।

25 सितंबर को होगा विसर्जन

14 सितंबर से शुरू हुए गणेश उत्सव का 25 सितंबर को गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के साथ समापन किया जाएगा। जहां जिले के विभिन्न जलाशयों में पहुंचकर विशेष पूजा अर्चना की जाएगी। इसके उपरांत प्रतिमाओं का विसर्जन कर गणेश उत्सव का समापन होगा,इसके पूर्व विभिन्न समितियो व भक्तों द्वारा पंडालों और घरों से विसर्जन स्थल तक ढोल नगाड़ो ,बैंड बाजे व डीजे के साथ भक्ति भाव में यात्रा निकाली जाएगी। जहां भक्तगण गणपति बप्पा मोरिया अगले बरस तू लौकरयां के नारे के साथ बप्पा को विदाई देंगे तो वही प्रतिमाओं का विसर्जन कर परिवार की सुख समृद्धि मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थनाएं करेंगे।

कार्यालय तहसीलदार तहसील लालबर्रा
जिला बालाघाट (म.प्र.)

रा.प्र.क्र. 0040/ड-154/2026-27
मौजा जाम, रा.नि.मं. लालबर्रा

एतद् द्वारा आम जनता को सूचित किया जाता है कि आवेदक राजेंद्र परते पिता गोविंदराम परते, जाति गोंड, निवासी ग्राम जाम, तहसील लालबर्रा, जिला बालाघाट द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया गया है कि मौजा जाम, रा.नि.मं. लालबर्रा, तहसील लालबर्रा, जिला बालाघाट में स्थित आवेदक द्वारा अपनी माता समोता पति गोविंदराम का अनुज्ञा प्रमाण पत्र रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1969 की धारा 12 (2), म.प्र. मृत्यु पंजीयन 1999 नियम 12 (2) प्रावधानों के अंतर्गत उपरोक्त मृत्यु की घटना दिनांक 12.04.2005 मृत्यु स्थल ग्राम जाम के अंतर्गत आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है। जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति हो तो वह दिनांक 17.09.2026 के पूर्व स्वयं या अपने अभिभाषक/अधिवक्ता सहित उपस्थित होकर इस न्यायालय में दावा आपत्ति पेश कर सकते है। नियत तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। आज दिनांक 09.09.2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया।

स्थान - लालबर्रा
दिनांक - 15.09.2026

भूपेन्द्र अहिरवार
तहसीलदार
तहसील लालबर्रा जिला बालाघाट म.प्र.

डॉ. संजय खोबरागड़े बने महाबोधि महाविहार मुक्ति आंदोलन समिति के प्रदेश अध्यक्ष

भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय सम्मेलन में सौंपा गया नियुक्ति पत्र

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। महाबोधि महाविहार बोधगया मुक्ति आंदोलन समिति मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष पद पर बालाघाट के अधिवक्ता डॉ. संजय खोबरागड़े को नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति 13 सितंबर को भोपाल के आम्रपाली बुद्ध विहार, लहारपुर में आयोजित राज्य स्तरीय सम्मेलन के दौरान की गई।सम्मेलन में महाबोधि महाविहार बोधगया मुक्ति आंदोलन राष्ट्रीय समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूज्य भदंत प्रज्ञाशील, राष्ट्रीय महासचिव डॉ. आकाश लामा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पूज्य भदंत धम्म शिखर सहित विभिन्न पदाधिकारी एवं सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरुआत तथागत बुद्ध एवं डॉ. बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई। इसके बाद त्रिशरण, पंचशील एवं बुद्ध वंदना का आयोजन किया गया।इस अवसर पर महाबोधि महाविहार बोधगया मुक्ति आंदोलन को लेकर उपस्थित पदाधिकारियों ने अपने विचार रखे। राष्ट्रीय अध्यक्ष पूज्य भदंत प्रज्ञाशील ने डॉ. अधिवक्ता संजय खोबरागड़े को प्रदेश अध्यक्ष का नियुक्ति पत्र प्रदान किया। बताया गया कि डॉ. खोबरागड़े लंबे समय से बुद्ध-अंबेडकर मिशन से जुड़े सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थी जीवन में डॉ. अंबेडकर स्टूडेंट्स फेडरेशन की स्थापना की थी। वारासिवनी के बनियाटोला में धम्म शिखर सद्धम्म प्रचार केंद्र की स्थापना में भी उनकी भूमिका रही है, जहां प्रतिवर्ष बौद्ध सम्मेलन आयोजित किया जाता है।इसके अलावा वे बालाघाट जिला बौद्ध संघ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। महाबोधि महाविहार बोधगया मुक्ति आंदोलन को लेकर 11 मार्च 2025 को बालाघाट में आयोजित विशाल रैली एवं जनसभा में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई थी। उनके सामाजिक एवं धम्म कार्यों के लिए विभिन्न अवसरों पर सम्मानित भी किया जा चुका है।प्रदेश

अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर सामाजिक एवं बौद्ध अनुयायियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उम्मीद जताई कि डॉ. खोबरागड़े महाबोधि महाविहार बोधगया मुक्ति आंदोलन को प्रदेश में मजबूती देने के लिए सक्रियता से कार्य करेंगे। सम्मेलन का संचालन अशोक कुमार मेश्राम अश्वघोष ने किया।

बारबेड वायर (कांटेदार तार)
एवं चेन लिंक जाली
उचित दाम पर उपलब्ध
लघु उद्योग निगम भोपाल से संबद्ध

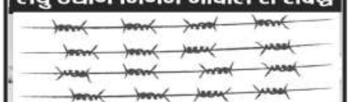

-निर्माता-
तिरूपति इंजीनियरिंग वर्क्स
मयूर टॉकिज के सामने हनुमान चौक, बालाघाट
फोन:- 07632-243531
मो:- 8989976858, 9425139998

युवक ने चाकू से खुद का गला रेत कर किया आत्महत्या का प्रयास

अस्पताल में मचाया जमकर हंगामा, करीब 1 घटे चला हाई वोल्टेज ड्रामा, हाथ पैर बाधकर,जिला अस्पताल में किया जा रहा था उपचार, वार्ड से भाग गया युवक

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। सोमवार की सुबह नगर के वार्ड नं 2 भटेरा चौकी परिसर में उस वक्त हड़कंप मच गया, जब एक युवक ने सब्जी काटने वाले चाकू से अपना गला रेतकर आत्महत्या का प्रयास किया। घटना के बाद घायल युवक को 108 एम्बुलेंस की मदद से उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया गया, लेकिन यहां उसने इलाज कराने से ही इनकार कर दिया और करीब एक घंटे तक अस्पताल परिसर में इधर-उधर भागता रहा। युवक के इस रवैये से अस्पताल में अफरा-तफरी की स्थिति निर्मित हो गई। जहां करीब 1 घंटे तक हाई वोल्टेज ड्रामा चलता रहा।उधर अस्पताल चौकी पुलिसकर्मी, चिकित्सक, कोतवाली स्टाफ, वार्ड बाय, एम्बुलेंस चालक परिचालक सहित अन्य उसके पीछे-पीछे घूमकर उपचार करने की मिन्नते करते हुए नजर आए। लेकिन युवक मानने को तैयार नहीं था आखिरकार जबरदस्ती पुलिसकर्मियों ने युवक को धर दबोचा।हाथ पैर बाधकर उपचार किया गया।वार्ड में शिफ्ट करने के बाद युवक फिर से भाग गया।

हाथ पैर बांधकर शुरू किया उपचार

अस्पताल में चले करीब 1 घण्टे के हाई वोल्टेज इस ड्रामे के बाद, पुलिसकर्मियों ने युवक को पकड़कर उसके जेब से चाकू निकालकर जप्त कर लिया।साथ ही कैजुअल्टी ले जाकर उसका उपचार शुरू किया गया। लेकिन युवक उपचार कराना नहीं चाहता था जिसको लेकर युवक ने वहां से भी भागने की कोशिश कि।नहीं मानने पर अस्पताल चौकी पुलिस कर्मियों चिकित्सकों वार्ड बॉय सहित अन्य स्टाफ ने पलंग पर उसे जबरदस्ती लेटाकर उसके हाथ पैर बांध दिए और युवक का प्राथमिक उपचार किया गया।प्राथमिक उपचार के बाद युवक को वार्ड में शिफ्ट किया गया लेकिन वह वार्ड से भी भाग गया।

स्वयं के गले मे चाकू क्यो चलाया कारण अज्ञात

प्राप्त जानकारी के अनुसार भटेरा चौकी वार्ड नं 2 निवासी 32 वर्षीय युवक हरितोष पिता स्व. चिंतामन दशहरे सोमवार को घर पर अकेला था।अज्ञात कारणो के चलते उसने सब्जी काटने वाले चाकू से अपने गले पर वार कर लिया था। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची।जिसे 108 एम्बुलेंस क्रमांक सीजी 04 एन.डब्ल्यू 2564 से अटेंडर रेखा भोयर और पायलेट मनीष चंदेले ने अपनी सूझबूझ से तत्काल उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया।लेकिन अस्पताल पहुंचते ही युवक ने उपचार कराने से साफ इनकार कर दिया।जिसको लेकर करीब 1 घण्टे तक ड्रामा चलता रहा।

डॉक्टर-पुलिस करते रहे मिन्नतें

अस्पताल में युवक को समझाने के लिए चिकित्सकों और पुलिसकर्मियों ने काफी प्रयास किए।पुलिसकर्मी व डॉक्टर उसे उपचार कराने के लिए समझाते और मिन्नतें करते रहे,लेकिन युवक उनकी बात मानने को तैयार नहीं था। वह अस्पताल परिसर में इधर-उधर भागता रहा, जिससे करीब एक घंटे तक अस्पताल में हाई वोल्टेज ड्रामा चलता रहा।स्थिति बिगड़ने पर पुलिस और अस्पताल के कर्मचारियों ने युवक को नियंत्रित किया। युवक के लगातार विरोध और उपचार से इनकार करने के चलते उसके हाथ-पैर बांधकर चिकित्सकीय निगरानी में उपचार शुरू किया गया था।वार्ड में शिफ्ट करने के बाद युवक वहां से भी भाग गया।

उसने ऐसा क्यों किया इसकी जानकारी नही है- रेखा बाई

भटेरा चौकी पटेल गली निवासी युवक की माँ श्रीमती रेखा बाई पति स्व चिन्तामन दशहरे 65 वर्ष ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि उनके 2 बेटे थे, जिसमे बड़े बेटे की 25 साल पहले सर्पदंश में मौत हो चुकी है। जबकि छोटा बेटा हरितोष उनके साथ मे रहता है। रविवार 13 सितंबर को वह ग्राम भटेरा में अपने मामा के घर गई थी।आज सोमवार की सुबह मामा के घर दो लड़के आए और बताए कि आपके बेटे ने चाकू से स्वयं का गला काट लिया है।युवको के साथ घर गई देखा तो डायल 112 पुलिस मेरे बेटे को पकड़ रहे है और वह भाग रहा है।फिर पुलिस वालो ने पकड़कर एम्बुलेंस से उसे जिला अस्पताल लाए।जो इलाज करने से मना करने लगा।उसने ऐसा क्यों किया इसकी जानकारी नही है।

पुलिस ने जब्त किया चाकू,जांच शुरू

पुलिस ने युवक के पास से चाकू जब्त कर लिया है। युवक ने आखिर किन परिस्थितियों में यह कदम उठाया, इसका फिलहाल स्पष्ट खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

वार्ड में शिफ्ट करने के बाद भाग गया युवक

उधर केजुल्टी में प्राथमिक उपचार के बाद, वार्ड बाय द्वारा युवक को उपचार के लिए वार्ड में भर्ती कराया गया था। जहां उसका उपचार जारी था।युवक के शांत होने पर वार्ड बाय सहित अन्य वार्ड से निकल गए और अपने अपने काम मे जुट गए।उधर युवक मौका पाकर पलँग से उठा और चकमा देकर वार्ड से फरार हो गया।जिसकी तलाश अस्पताल परिसर में की गई।लेकिन उसका कही कुछ पता नही चला।उधर युवक की माँ श्रीमती रेखा बाई की तबियत अचानक से खराब हो गई।जिसे उपचार के लिए उसी वार्ड में भर्ती कराया गया है जहां उसका उपचार जारी है।खबर लिखे जाने तक अस्पताल के वार्ड से भागे युवक का पता नही चल सका था।

पात्रता परीक्षा ई-अटेंडेंस और पदोन्नति के मुद्दे पर शिक्षकों का आंदोलन का ऐलान

आजाद अध्यापक शिक्षक संघ की बैठक में फैसला, 20 सितंबर को जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। शिक्षकों की लंबित मांगों को लेकर अब आंदोलन की तैयारी तेज हो गई है। आजाद अध्यापक शिक्षक संघ जिला बालाघाट की महत्वपूर्ण बैठक 14 सितंबर को मोतीनगर गार्डन में जिलाध्यक्ष आशीष बिसेन के नेतृत्व में आयोजित हुई। बैठक में शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं और सरकार की नीतियों को लेकर विस्तार से चर्चा के बाद 20 सितंबर 2026 को जिला स्तर पर प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया। बैठक में आजाद अध्यापक शिक्षक संघ मध्यप्रदेश के प्रांतीय आह्वान पर प्रदेशभर में प्रस्तावित रैली, उपवास और ज्ञापन कार्यक्रम को लेकर रणनीति तैयार की गई। संगठन का कहना है कि शिक्षकों की समस्याएं लगातार लंबित हैं, लेकिन उनके समाधान की दिशा में अपेक्षित गंभीरता दिखाई नहीं दे रही है। इसी के चलते अब शिक्षक अपनी मांगों को लेकर आंदोलन का रास्ता अपनाने जा रहे हैं। बैठक में पात्रता परीक्षा, ई-अटेंडेंस व्यवस्था, प्रथम नियुक्ति दिनांक से सेवा अवधि की गणना, पदोन्नति और क्रमोन्नति सहित शिक्षकों से जुड़े विभिन्न मुद्दे प्रमुखता से उठाए गए। संगठन पदाधिकारियों का कहना है कि इन मांगों का सीधा संबंध शिक्षकों की सेवा शर्तों, भविष्य और अधिकारों से है, इसलिए इन्हें लंबे समय तक टालना उचित नहीं है। जिलाध्यक्ष आशीष बिसेन ने संगठन के पदाधिकारियों के साथ चर्चा के बाद 20 सितंबर के प्रस्तावित प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए अधिक से अधिक शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान किया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि जिले के सभी विकासखंडों से शिक्षकों को आंदोलन से जोड़ने के लिए व्यापक संपर्क किया जाएगा। संगठन ने स्पष्ट किया कि 20 सितंबर का प्रदर्शन केवल औपचारिक ज्ञापन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि शिक्षकों की लंबित मांगों को मजबूती से शासन के सामने रखने का प्रयास होगा। संगठन का कहना है कि यदि समय रहते समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो आंदोलन को आगे भी विस्तार दिया जा सकता है। बैठक में जिला सचिव एमंत ठाकरे, जिला कोषाध्यक्ष धनंजय सोनवाने, बालाघाट ब्लॉक अध्यक्ष अनिल बिसेन, वारासिवनी ब्लॉक अध्यक्ष धन्नालाल बिसेन, जिला कार्यकारिणी सदस्य डीपी गौतम, संतोष कुथेकर, प्रमोद चोड़ेश्वर, दीनदयाल कोकाटे, विजय बिसेन, भोजराज पटले, घनश्याम सिंह टेकाम, लवकुश रंगारे, राजेंद्र कुमार बारबुदे, परमानंद टेम्भरे, रेवाराम हरिनखेड़े, कमल किशोर डोंगरे, सुरेंद्र देशमुख, श्रीमती मालती वराडे, जेएल मरकाम, योगेश कटरे परसवाड़ा, धुरनलाल उइके सहित अन्य पदाधिकारी एवं शिक्षक मौजूद रहे।

अभिजीत दीपके प्रकरण पर आदिवासी समाज मुखर बाहरी इन्फ्लुएंसरों पर एफआईआर की चेतावनी

संस्कृति को बच्चों की मौत से जोड़ने पर भड़का समाज, बोले हमारी परंपराओं को कटघरे में खड़ा करना बर्दाश्त नहीं, एसटी आयोग में शिकायत की तैयारी

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। बैहर-बिरसा क्षेत्र में आदिवासी बच्चों की मौत के मामले की जमीनी स्थिति जानने पहुंचे कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दीपके के साथ 12 सितंबर को हुए घटनाक्रम को लेकर अब आदिवासी समाज भी खुलकर सामने आ गया है। अभिजीत दीपके के दौरे के दौरान बाहरी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबरों द्वारा किए गए व्यवहार तथा आदिवासी समाज की संस्कृति और रहन-सहन को बच्चों की मौत से जोड़कर की गई कथित टिप्पणियों के विरोध में आदिवासी समाज के पदाधिकारियों ने स्थानीय सर्किट हाउस में प्रेसवार्ता की। प्रेसवार्ता में दिनेश धुर्वे, ललित उईके, संजय धुर्वे सहित समाज के अन्य पदाधिकारी और महिला प्रतिनिधि मौजूद रहीं। समाज के पदाधिकारियों ने कहा कि बच्चों की मौत का मामला बेहद संवेदनशील है और इस पर गंभीरता से चर्चा होनी चाहिए, लेकिन किसी भी परिस्थिति में आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा और रहन-सहन को मौत का कारण बताकर पूरे समाज को कठघरे में खड़ा करना स्वीकार नहीं किया जा सकता। दिनेश धुर्वे ने कहा कि अभिजीत दीपके आदिवासी बच्चों की मौत की जानकारी मिलने के बाद उनके परिजनों से मिलने और जमीनी स्थिति जानने पहुंचे थे। लेकिन जिस तरह उनके दौरे के दौरान बाहरी इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबरों द्वारा कथित तौर पर व्यवहार किया गया, उससे समाज को गहरी आपत्ति है। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति को पीड़ित परिवारों से मिलने से रोकना या उसके दौरे में व्यवधान पैदा करना उचित नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि अभिजीत दीपके के पहुंचने से पहले ही कई वाहन वहां मौजूद थे और उनके साथ लगातार ट्रोलिंग और सवाल-जवाब किए गए। दिनेश धुर्वे ने कहा कि घटनास्थल पर पर्याप्त पुलिस सुरक्षा दिखाई नहीं दी, जबकि प्रशासन को उनके आगमन की जानकारी होने की बात कही जा रही थी। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि स्थिति संवेदनशील थी तो पुलिस की पर्याप्त व्यवस्था क्यों नहीं की गई ?, ललित उईके ने भी आरोप लगाया कि अभिजीत दीपके के दौरे के दौरान बाहरी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबरों ने उनकी गाड़ी के सामने वाहन खड़े कर रास्ता रोकने, लगातार पीछा करने और ट्रोल करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवारों से संवेदना व्यक्त करने आए व्यक्ति के साथ इस तरह का व्यवहार किसी भी स्थिति में उचित नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि घटनाक्रम के दौरान स्थानीय मीडिया कर्मियों के साथ भी विवाद की स्थिति बनी। समाज के पदाधिकारियों का कहना है कि पूरे घटनाक्रम को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि कुछ लोग किसी विशेष उद्देश्य के साथ वहां पहुंचे थे। आदिवासी समाज के पदाधिकारियों ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि बाहरी इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबरों द्वारा किए गए व्यवहार पर कार्रवाई नहीं हुई तो वे कानूनी रास्ता अपनाएंगे। दिनेश धुर्वे ने कहा कि इस मामले में संबंधित लोगों के खिलाफ थाने में शिकायत देकर एफआईआर दर्ज कराने की मांग की जाएगी। उन्होंने मानहानिकारक टिप्पणियों को लेकर कानूनी कार्रवाई करने की बात भी कही। समाज के पदाधिकारियों ने यह भी कहा कि आदिवासी संस्कृति और परंपराओं को लेकर की गई कथित टिप्पणियों का मामला अनुसूचित जनजाति आयोग के समक्ष भी उठाया जाएगा। उनका कहना है कि किसी भी समुदाय की संस्कृति को बिना तथ्य के किसी गंभीर घटना से जोड़ना पूरे समाज की भावनाओं को आहत करने वाला है। ललित उईके ने बताया कि बच्चों की मौत और प्रभावित परिवारों की मांगों को लेकर समाज का आंदोलन आगे भी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि आंदोलन के 15 दिन पूरे होने के बाद स्थानीय जनपद पंचायत के सामने दोबारा धरना शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बच्चों की मौत के वास्तविक कारणों की जांच, प्रभावित परिवारों की समस्याओं का समाधान और क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर समाज अपनी आवाज लगातार उठाता रहेगा। प्रेसवार्ता के दौरान समाज ने यह भी स्पष्ट किया कि बच्चों की मौत जैसे गंभीर मामले को राजनीतिक और सोशल मीडिया विवाद में बदलने के बजाय प्रभावित परिवारों की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। अब मामला केवल अभिजीत दीपके के दौरे में हुए कथित विवाद तक सीमित नहीं रहा है। बाहरी इन्फ्लुएंसरों के व्यवहार, स्थानीय पत्रकारों से हुए विवाद और आदिवासी संस्कृति को लेकर कथित टिप्पणियों ने पूरे मामले को नया मोड़ दे दिया है। समाज की ओर से एफआईआर और अनुसूचित जनजाति आयोग में शिकायत की चेतावनी के बाद आने वाले दिनों में यह विवाद और तूल पकड़ सकता है।

जमुनिया डैम में मामूली सीपेज, स्थिति सामान्य

एसडीएम ने दो घंटे से अधिक समय तक किया निरीक्षण, नहर से पानी छोड़कर डैम का दबाव घटाने की कार्रवाई शुरू

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। जमुनिया डैम में पानी के मामूली सीपेज की सूचना के बाद प्रशासन एवं जल संसाधन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर डैम की स्थिति का बारीकी से निरीक्षण किया। एसडीएम कटंगी विजय सिंह यादव की मौजूदगी में तहसीलदार पन्नू लाल शांडिल्य, जल संसाधन विभाग के इंजीनियर योगेंद्र ठाकुर एवं सब इंजीनियर प्रकाश कुमार परते ने करीब दो घंटे से अधिक समय तक डैम का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान डैम में एक छोटे से सीपेज के माध्यम से पानी का रिसाव पाया गया। स्थिति को देखते हुए एसडीएम के निर्देशन में जल संसाधन विभाग की टीम ने नहर में पानी छोड़कर डैम पर पड़ रहे जल दबाव को तत्काल कम करने की कार्रवाई शुरू कर दी है। विभाग के अनुसार अगले 24 से 48 घंटों में डैम का जलस्तर सीपेज के जलस्तर तक आने की संभावना है। इसके बाद सीपेज के कारणों का तकनीकी परीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील

एसडीएम विजय सिंह यादव ने नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी प्रकार की भ्रामक जानकारी अथवा अफवाहों पर ध्यान न दें। उन्होंने कहा कि डैम की स्थिति सामान्य है और फिलहाल किसी प्रकार के खतरे की बात नहीं है। प्रशासन एवं संबंधित विभाग की टीमें मौके पर लगातार निगरानी कर रही हैं। नागरिक धैर्य बनाए रखें और प्रशासन द्वारा जारी निर्देशों का पालन करें।

नहर के आसपास सावधानी बरतने के निर्देश

डैम का दबाव कम करने के लिए नहर में पानी छोड़े जाने के कारण एसडीएम ने नहर के किनारे स्थित ग्राम गुनाड़ी, जमुनिया, बनेरा, कटेरा, बोपली, अगासी, सिरपुर एवं भजियापार के नागरिकों से विशेष सावधानी बरतने की अपील की है। उन्होंने कहा कि लोग अपने बच्चों एवं मवेशियों को नहर के पास न जाने दें, ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचा जा सके।

राजस्व, जल संसाधन और पुलिस की टीमें तैनात

एसडीएम ने बताया कि सीपेज की स्थिति की लगातार निगरानी के लिए राजस्व एवं जल संसाधन विभाग के कर्मचारियों की टीम तैनात कर दी गई है। कर्मचारी निरंतर डैम की स्थिति पर नजर रख रहे हैं। वहीं, थाना प्रभारी कटंगी के माध्यम से पुलिस बल भी मौके पर तैनात किया गया है, ताकि सुरक्षा व्यवस्था बनी रहे।

जल संसाधन विभाग के इंजीनियर ने बताया कि डैम की वर्तमान स्थिति से वरिष्ठ अधिकारियों को भी अवगत करा दिया गया है। प्रशासन द्वारा स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है तथा आवश्यकतानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बाहरी इन्फ्लुएंसरों के रवैये पर विधायक उइके ने उठाए सवाल

बोले सवाल पूछना गलत नहीं, लेकिन किसी को ट्रोल करना स्वीकार नहीं , स्थानीय पत्रकारों से कथित बदसलूकी की कड़ी निंदा की

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। बाहरी इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबरों के कथित रवैये को लेकर अब कांग्रेस जिला अध्यक्ष एवं बैहर विधायक संजय उइके ने भी सवाल खड़े किए हैं। बीते दिनों बैहर-बिरसा क्षेत्र में स्थानीय पत्रकारों के साथ हुए कथित विवाद और बाहरी सोशल मीडिया क्रिएटरों द्वारा पत्रकारों को ट्रोल किए जाने के मामले पर विधायक उइके ने कड़ी नाराजगी जताते हुए इसे गलत परंपरा बताया। संजय उइके ने कहा कि किसी भी मुद्दे पर सवाल पूछना पत्रकारिता और लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है, लेकिन सवाल पूछने के नाम पर किसी व्यक्ति को ट्रोल करना या अपमानजनक तरीके से पेश आना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि किसी को किसी विषय पर सवाल करना है तो वह शालीनता और तथ्यों के आधार पर सीधे सवाल कर सकता है, लेकिन इस तरह की ट्रोलिंग को सही नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने बैहर-बिरसा क्षेत्र में स्थानीय पत्रकारों के साथ बाहरी इन्फ्लुएंसरों द्वारा कथित तौर पर किए गए व्यवहार की निंदा करते हुए कहा कि स्थानीय पत्रकार लंबे समय से क्षेत्र में रहकर काम कर रहे हैं और जमीनी परिस्थितियों को सामने लाने का काम करते हैं। ऐसे में बाहर से आए लोगों द्वारा उनके साथ कथित बदतमीजी या उन्हें ट्रोल करना किसी भी स्थिति में उचित नहीं है। विधायक ने यह भी सवाल उठाया कि बाहरी यूट्यूबर और इन्फ्लुएंसर आखिर किसके प्रभाव में आकर इस तरह का व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यदि किसी मुद्दे को लेकर असहमति है तो उसका जवाब तथ्यों और तर्कों से दिया जाना चाहिए, न कि किसी व्यक्ति या स्थानीय मीडिया को निशाना बनाकर। संजय उइके ने कहा कि बैहर-बिरसा में आदिवासी बच्चों की मौत जैसा संवेदनशील मामला किसी भी राजनीतिक या सोशल मीडिया विवाद से बड़ा है। ऐसे मामले में सभी पक्षों को संयम बरतना चाहिए और पूरा ध्यान पीड़ित परिवारों की समस्याओं तथा क्षेत्र की स्वास्थ्य व्यवस्था सुधारने पर होना चाहिए।

मछुआ समितियों के खिलाफ झूठी शिकायत करने का शेखर जायसवाल पर पदाधिकारियों ने लगाया आरोप

प्रेसवार्ता आयोजित कर दी जानकारी, तहसीलदार एवं थाना प्रभारी को सौंपा ज्ञापन, कार्यवाही करने की मांग की

रिपोर्टर।
पद्मेश न्यूज। लालबर्रा।

क्षेत्र की प्राथमिक मछुआ सहकारी समितियों के अस्तित्व पर मंडरा रहे संकट और पारंपरिक मछुआरा समाज के बीच फैलते वैमनस्य को लेकर सोमवार को स्थानीय विश्रामगृह लालबर्रा में प्राथमिक राजीव गांधी मछुआ सहकारी समिति, मिलन मछुआ सह. समिति टेकाड़ी ला., जय निषादराज मछली, सिंगाड़ा उत्पादन समिति पांढरवानी (ला.), जनता मछुआ सह. समिति बहेगांव के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने प्रेसवार्ता आयोजित कर सिवनी के टैगोर वार्ड (हाल-मुकाम) पाथरशाही, सोनी पेट्रोप पंप के सामने कटंगटोला निवासी शेखर जायसवाल पर आरोप लगाया है कि वह मछुआ समाज से संबंध नही रखता है। साथ ही जो खुद को 'सिंधिया फेंड्स क्लब' का प्रदेश महासचिव बताता है, बीते वर्ष 2024 से क्षेत्र के सीधे-साधे और भोले-भाले ढीमर व मछुआरा समाज के लोगों को गुमराह कर रहा है। वह शासन के नियमों को ताक पर रखकर अनैतिक तरीके से दबाव बनाने, झूठी शिकायतें करने और सोशल मीडिया के माध्यम से भ्रामक प्रचार फैलाकर, फर्जी संगठन का लेटरहेड इस्तेमाल करने और क्षेत्र का सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने, क्षेत्र में जन आक्रोश उत्पन्न करने का काम करने का उस पर गंभीर आरोप लगाये हैं। ऐसे व्यक्ति पर दण्डात्मक कार्यवाही करने की प्रशासन से मांग की है।

व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए ढीमर, सिगरोड (सिगराहा) समाज को गुमराह करने का भी आरोप

यह भी आरोप लगाया है कि इस बाहरी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए लालबर्रा क्षेत्र के ढीमर, सिगरोड (सिगराहा) समाज के लोगों को गुमराह कर रहा है और गत दिवस से कुछ लोगों को लेकर जिला पंचायत कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन कर रहा, जिसकी हम निंदा करते है। जबकि हम लोग परंपरागत/वंशानुगत रूप से हमारी सिगरोड जाति, जिसमें मांझी, कहार, ढीमर, सिंगराहा जाति की समान्तर जाति है और सिगरोड बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा में जाना जाता है। इसी जाति को मंडला, जबलपुर में सिगराहा जाति के नाम से जाना जाता है। जिनका पुस्तैनी व्यवसाय मछली पालन, सिंघाड़ा लगाना है। सिगरोड शब्द राजस्व रिकार्ड में दर्ज है, जो एक लिपिक त्रुटि है। जिसके सुधार हेतु समाज द्वारा म.प्र. पिछड़ा वर्ग आयोग में आवेदन दिया गया है जो विचारधीन है। साथ ही सिगरोंड जाति - मांझी, कहार, ढीमर, सिगराहा जाति समान्तर जाति है। जो म.प्र पिछड़ा वर्ग के राजपत्र में 12 नंबर पर अंकित है। लेकिन एक बाहरी व्यक्ति द्वारा समाज के कुछ लोगों को गुमराह कर जाति के खिलाफ मतभेद उत्पन्न कर रहा है जिससे सभी में रोष व्याप्त है। जबकि यह क्षेत्र हमेशा से शांत और भाईचारे वाला रहा है, लेकिन किसी बाहरी व्यक्ति के हस्तक्षेप से सामाजिक सौहार्द बिगड़ सकता है। इसलिए जिला प्रशासन से मांग है कि ऐसे बाहरी व्यक्ति पर दण्डात्मक कार्यवाही की जाये।

फर्जी लेटरहेड और भ्रामक शिकायतों के माध्यम से दबाव बनाने वाले व्यक्ति पर की जाये कार्यवाही

प्रेसवार्ता संपन्न होने के बाद समिति के पदाधिकारी तहसील कार्यालय में तहसीलदार एवं थाने में थाना प्रभारी के नाम ज्ञापन सौंपकर मछुआरा जाति ढीमर एवं सिगरोड (कहार) जाति के बीच अराजकता उत्पन्न कर सामाजिक सद्भाव खराब करने का भरसक प्रयास कर समितियों के कार्य क्षेत्रांतर्गत निवासरत मछुवारों के बीच मतभेद की स्थिति निर्मित करने वाले शेखर जायसवाल पर दण्डात्मक कार्यवाही करने की मांग की है। चर्चा में प्राथमिक राजीव गांधी मछुआ सहकारी समिति मर्यादित बोरी अध्यक्ष कमल शांडिल्य ने बताया कि दिसंबर 2024 से शेखर जायसवाल ने लालबर्रा ब्लॉक में पारंपरिक मछुआरों को बड़े-बड़े सपने दिखाकर उसने ग्रामीणों को यह झांसा दिया कि वह उन्हें टेकाड़ी ला. (मिलन मछुआ समिति) का सदस्य बनवा देगा, जिससे पूरा तालाब उनके अधीन हो जायेगा। उसके बहकावे में आकर बोरी टोला के कई सामाजिक बंधुओं ने अपनी मूल बोरी मछुआ समिति को छोड़ दी है।जब शेखर जायसवाल का बोरीटोला के लोगों को मिलन समिति में जोड़ने का दावा विफल हो गया, तो उसने पारंपरिक और वंशानुगत मछुआरों से बनी चारों समितियों (बोरी, टेकाड़ी ला., बहेगांव और पांढरवानी) के वैध सदस्यों के खिलाफ शिकायते करना शुरू कर दिया। इस तरह से अब तक उसके 50 से अधिक शिकायतें स्थानीय स्तर से लेकर प्रदेश स्तर तक दर्ज करवाई। इन शिकायतों के संज्ञान में आने के बाद शासन-प्रशासन द्वारा उच्च स्तरीय जांच करवाई है। जिसमें तहसीलदार लालबर्रा की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय जांच कमेटी ने बिंदुवार छानबीन की और समस्त प्रमाण पत्रों का भौतिक सत्यापन कर रिपोर्ट जिला मुख्यालय भेजी। जिला स्तरीय जांच समिति ने भी अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया कि सभी शिकायतें असत्य, निराधार और तथ्यहीन हैं। जांच समिति ने यह भी व्यवस्था दी कि शासन के नियमानुसार एक समग्र परिवार आईडी से केवल एक ही सदस्य समिति का हिस्सा रहेगा।

प्रशासनिक रिपोर्ट को खारिज कर फैला रहे अराजकता

श्री शांडिल्य ने बताया कि प्रशासनिक और जिला स्तरीय छानबीन समितियों द्वारा पारदर्शी जांच के बावजूद शेखर जायसवाल और उसके सहयोगियों ने सरकारी रिपोर्ट को मानने से इंकार कर दिया। इसके बाद उन्होंने विभिन्न न्यायालयों में याचिकाएं दायर कर दी। जिससे वर्तमान में समितियों का रोजमर्रा का कामकाज और मत्स्य पालन का व्यवसाय पूरी तरह ठप्प पड़ गया है। साथ ही सदियों से आपस में मिल-जुलकर रहने वाली पारंपरिक जातियां - ढीमर, कहार, सिंगरोड/सिंगराहा और मांझी के बीच फूट डालने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे भविष्य में गंभीर सामाजिक वैमनस्य और शांति-व्यवस्था भंग होने की आशंका बन गई है। साथ ही शेखर जायसवाल सिंधिया फैंस क्लब के फर्जी लेटरहेड और खुद को प्रदेश महासचिव बताकर प्रशासनिक दबाव बना रहा है। जबकि राष्ट्रीय स्तर पर सिंधिया फैंस क्लब का ऐसा कोई सक्रिय संगठन वर्तमान में कार्यरत नहीं है। ऐसे व्यक्ति पर कार्यवाही करने तहसीलदार एवं थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा गया है। इस अवसर बड़ी संख्या में मछुआ समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे।

सार्वजनिक पंडालों एवं घरों में विराजे लंबोदर महाराज...गणपति बप्पा

पद्मेश न्यूज। लालबर्रा। दस दिनों तक चलने वाला पावन गणेशोत्सव पर्व 14 सितंबर से प्रारंभ हो चुका है। शुभ मुहूर्त पर सार्वजनिक पंडालों एवं घरों में विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश की प्रतिमाएं स्थापित की गई। प्रतिमा स्थापना के साथ ही क्षेत्र में दस दिवसीय गणेशोत्सव का आगाज हो गया है, जिससे पूरे अंचल में भक्तिमय माहौल बन गया है और 'चहुंओर गणपति बप्पा मोरया' के जयकारे गूंज रहे हैं। गणेशोत्सव पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाने के लिए नगर मुख्यालय सहित ग्रामीण अंचलों में सार्वजनिक गणेश उत्सव समितियों के द्वारा व्यापक रूप से तैयारी की गई है। जिसमें दस दिनों तक विविध धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। 14 सितंबर से प्रथम पूज्य भगवान श्रीगणेश के पर्व का प्रारंभ हो चुका है। वहीं श्री गणेशोत्सव पर्व के अवसर पर 14 सितंबर को गणेश प्रतिमा स्थापना हेतु गणेश उत्सव समितियों के द्वारा प्रात: से ही ढोल-नगाड़े के साथ ही प्रतिमाओं को स्थापना स्थल ले जाने का सिलसिला प्रारंभ हो गया जो देर रात्रि तक जारी रहा। इस दौरान मूर्तिकारों के घरों में दिनभर श्रध्दालुओं की खासी भीड़ रही एवं बाजार क्षेत्र में भी चहल-पहल नजर आई और सभी हिन्दु धर्मालंबी गणेशोत्सव पर्व को लेकर खासा उत्साहित नजर आये।

अब शुरू होगी माँ दुर्गा की प्रतिमाओं का निर्माण

मूर्तिकारों ने बताया कि भगवान श्री गणेश की सभी प्रतिमाओं का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है और श्रध्दालु अपनी पसंद के अनुसार प्रतिमाएं ले जा रहे हैं। साथ ही यह भी बताया कि गणेश प्रतिमाओं की रवानगी के बाद अब वे आगामी नवरात्रि पर्व के लिए माँ दुर्गा की प्रतिमाओं के निर्माण कार्य में जुट जायेगें।

सिंचाई विभाग की लापरवाही से जमुनिया बांध टूटने की कगार पर-मनोहर

टेकाड़ी ला. सर्राटी जलाशय बांध, जमुनिया बांध सहित अन्य बांधों का मरम्मत कार्य करवाने की मांग

पद्मेश न्यूज। लालबर्रा। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मनोहर अग्रवाल ने विज्ञप्ति जारी कर अपने वक्तव्य में कहा कि कटंगी क्षेत्र में स्थित ग्राम जमुनिया बांध में रिसाव होना जारी है जिससे आसपास के गांव में चिंता व्याप्त है। आगे कहा कि यह सिंचाई विभाग की घोर लापरवाही है जो बरसात के पूर्व तालाब और बांधों का मेंटिनेंस नहीं करते हैं। जिससे पार पर बड़ी-बड़ी झाड़ियां उग गई है ,इन झाड़ियां की जड़ों में दीमग लगती है और दीमक को खाने के लिए चूहा घुसते हैं, छेद बनाते हैं जिससे बांधों में रिसाव होने की संभावना रहती है और यही जमुनिया में देखने में आ रहा है। श्री अग्रवाल ने कहा कि मैंने 2 वर्ष पूर्व भी इसकी शिकायत तत्कालीन कलेक्टर श्री मीणा से की थी ,टेकाड़ी ला. बांध की पार पर काफी बड़ी-बड़ी झाड़ियां उग आई है। तब सिंचाई विभाग जागा था और उसने तालाब की पार पर उगी झाड़ियां की कटाई की थी. लेकिन जिले के शेष बांध और तालाबों की तरफ विभाग ने कोई ध्यान नहीं दिया। एक तरफ तो इस वर्ष औसत से कम बारिश हुई है, पानी बचाने की जरूरत है। वहीं रिसाव से बचाव के लिए नहर में व्यर्थ पानी बहाया जा रहा है, ऐसे में किसानों का चिंतित होना वाजिब है, क्योंकि फसल जब पकाने को आती है। तब उसे पानी की आवश्यकता होती है और वह इन्हीं तालाब और बांध से मिलता है, यदि पानी व्यर्थ बहाया जायेगा तो सिंचाई कैसी होगी। श्री अग्रवाल ने कहा कि इसके पूर्व भी जमुनिया बांध एक बार फूट चुका है, जिसके कारण 10 से 15 गांव के खेतों में रेत भर गई थी जिन्हें किसान ने बड़ी मशक्कत से खेत से हटकर खेती योग्य बनाया है और यदि अब ईश्वर ना करें कोई अनहोनी होती है तो फिर किसानों के सामने यह संकट खड़ा हो जायेगा। इसलिए नवागत कलेक्टर इस ओर ध्यान दें और सिंचाई विभाग की जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करें। साथ ही न केवल जमुनिया बांध बल्कि जिले के समस्त बांध और तालाबों की पारों पर उगी झाड़ियां की सफाई करवाये।

दंत चिकित्सक ने सड़क पर बने गड्ढों का करवाया मरम्मत कार्य, जिम्मेदारों की उदासीनता पर उठे सवाल

तहसील रोड पुराने जनपद पंचायत कार्यालय के समीप सड़क के बीच में बना था गड्ढा, मरम्मत होने से आवागमन में होगी सुविधा

पद्मेश न्यूज। लालबर्रा। नगर मुख्यालय में सड़क की बदहाल स्थिति और जिम्मेदार विभागों की कार्यप्रणाली को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हुए हैं। लालबर्रा तहसील रोड पुराने जनपद पंचायत कार्यालय के समीप, निर्माणाधीन सामुदायिक भवन के सामने लंबे समय से सड़क के बीच में बने गहरे गड्ढे के कारण दुपहिया, चौपहिया वाहन चालकों सहित राहगीरों को आवागमन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। साथ ही पुर्व में दुर्घटनाएं भी घटित हो चुकी है और हर समय बड़ी दुर्घटना की आशंका बनी रहने के बावजूद लंबे समय तक इस समस्या की ओर जिम्मेदारों का ध्यान नहीं गया। आखिरकार शासकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लालबर्रा में पदस्थ दंत चिकित्सक डॉ. धर्मेन्द्र गोहिया ने मानवीय पहल करते हुए अपनी स्वयं से सड़क के बीच में बने गहरे गड्ढों को भरवाकर मरम्मत कार्य करवाया है। जिससे अब इस मार्ग से आवागमन करने वालों को सुविधा होगी। डॉ. गोहिया की इस पहल ने जहां सामाजिक जिम्मेदारी और संवेदनशीलता की मिसाल पेश की है। वहीं यह सवाल भी खड़ा कर दिया है कि जिस सड़क पर प्रतिदिन सैकड़ों लोग आवागमन करते हैं, उस पर बने गड्ढे को ठीक करवाने के लिए आखिर जिम्मेदार विभागों और जनप्रतिनिधियों का किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार क्यों रहा?।

व्यस्तम मार्ग पर गड्ढा, फिर भी जिम्मेदार बने रहे बे-खबर

तहसील कार्यालय पहुंच मार्ग एक व्यस्तम मार्ग है। इसी मार्ग पर तहसील कार्यालय, शासकीय महाविद्यालय, शासकीय अस्पताल सहित अन्य शासकीय एवं निजी कार्यालय स्थित है और इस मार्ग से लोगों और वाहनों की आवाजाही बनी रहती है। साथ ही जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों का आवागमन भी इसी मार्ग से अधिकांश होता है। इसके बावजूद पुराने जनपद पंचायत कार्यालय के समीप सड़क एवं उत्कृष्ट विद्यालय के सामने सड़क पर बने गड्ढे उन्हे दिखाई क्यों नही दे रहे है। वहीं इस समस्या का समाधान नहीं होना शासन-प्रशासन की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करता है। यदि एक चिकित्सक को स्वयं के खर्च कर सार्वजनिक सड़क के गड्ढे को भरवाना पड़े, तो यह संबंधित विभाग की जिम्मेदारी और निगरानी व्यवस्था पर सवाल उठाने के लिए पर्याप्त है।

उत्कृष्ट स्कूल के समीप बना गड्ढा, दुर्घटना को दे रहा आमंत्रण

नगर मुख्यालय स्थित शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय के समीप सड़क पुरी तरह से खराब हो चुकी है एवं गड्ढे बन गये है। वहीं बारिश होने पर उक्त गड्ढों में पानी भराव होने से स्कूली बच्चों सहित आने-जाने वालों को बेहद परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही कई बार लोग गड्ढे में गिरकर चोटिल भी हो चुके हैं। लेकिन जिम्मेदारों के द्वारा इस समस्या की ओर कोई ध्यान नही दिया जा रहा है। जागरूक नागरिकों ने शासन-प्रशासन से उत्कृष्ट स्कूल के सामने सड़क में बने गड्ढों का भी जल्द मरम्मत कार्य करवाने की मांग की है।

महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया जारी, अंतिम तिथि 16 सितम्बर

पद्मेश न्यूज। लालबर्रा। नगर मुख्यालय लालबर्रा में स्थित शासकीय महाविद्याल में म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश हेतु पहले आओं पहले पाओं के आधार पर रिक्त सीटो पर प्रवेश के लिए अतिरिक्त कॉलेज लेवल काउंसलिग सीएलसी चरण 12 सितंबर से 16 सितंबर तक आयोजित की जा रही है और प्रवेश प्रक्रिया की अंतिम 16 सितंबर हे। चर्चा में महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य ने बताया कि इस प्रवेश प्रक्रिया के अन्तर्गत नव प्रवेशित छात्र-छात्राएं 12 सितंबर से 16 सितंबर तक ऑनलाईन पंजीयन कराने के पश्चात् महाविद्यालय में उपस्थित होकर प्रवेश हेतु ऑफर प्राप्त करने के पश्चात् प्रवेश प्राप्त कर सकते है। उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार 12 सितंबर से 16 सितंबर तक महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षा में नवीन प्रवेश की प्रक्रिया जारी है। जिन्हें उक्त कक्षाओं में प्रवेश लेना है, उसकी अंतिम तिथि 16 सितंबर तक है। इस चरण में प्रवेश प्रक्रिया पहले आओं पहले पाओं के आधार पर होगी। आगे बताया कि प्रवेश केवल विषयों में रिक्त सीट होने पर ही दिया जायेगा। रिक्त सीटों की जानकारी विद्यार्थियों की लॉगिन एवं महाविद्यालय की लॉगिन पर प्रदर्शित होगी। पंजीकृत विद्यार्थी महाविद्यालय से ऑफर प्राप्त करके सीधे प्रवेश शुल्क जमा कर सकेंगे। नवीन पंजीकृत विद्यार्थी केवल एक ही महाविद्यालय में पंजीयन कर सकेंगे और महाविद्यालय के हेल्प सेंटर पर वेरीफिकेशन के पश्चात् शुल्क जमा करने के लिए ऑफर दिया जायेगा। इसके पश्चात विद्यार्थी उसी दिन शुल्क जमा करके प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। उक्त प्रक्रिया के अन्तर्गत 16 सितंबर को शाम 5 बजे तक प्रवेश शुल्क जमा कर प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

घरों और सार्वजनिक पंडालों में विराजे विघ्नहर्ता

शहर से लेकर गांव तक गणपति बप्पा की हुई भव्य स्थापना, ढोल नगाड़ों के साथ निकली प्रतिमाएं

पद्मेश न्यूज। वारासिवनी। दस दिवसीय गणेशोत्सव पर्व का शुभारंभ १४ सितंबर से पूरे क्षेत्र में हर्षोल्लास एवं भक्तिमय वातावरण के बीच हुआ। गणेश चतुर्थी के अवसर पर वारासिवनी नगर सहित ग्रामीण अंचलों में भगवान श्रीगणेश की प्रतिमाओं की विधि विधान एवं शुभ मुहूर्त में स्थापना की गई। सुबह से ही गणेश भक्तों में उत्साह का माहौल रहा। महिलाओं के द्वारा प्रातःकाल नहर में गौर निकालने की परंपरा निभाई गई वहीं दोपहर के समय घरों एवं सार्वजनिक पंडालों में विघ्नहर्ता भगवान श्रीगणेश को विराजमान कराया गया। प्रथम पूज्य भगवान श्रीगणेश को देवाधिदेव महादेव एवं माता पार्वती का पुत्र तथा सभी शुभ कार्यों में सर्वप्रथम पूजे जाने वाला देवता माना जाता है। यही कारण है कि गणेशोत्सव को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष आस्था और उत्साह देखने को मिलता है। नगर के विभिन्न वार्डों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक समितियों द्वारा आकर्षक पंडाल तैयार कर भगवान गणेश की प्रतिमाओं की स्थापना की गई। वहीं बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपने घरों में भी बप्पा को विराजित कर विधि विधान से पूजा अर्चना की।

ढोल नगाड़ों की थाप पर निकली बप्पा की सवारी

गणेश चतुर्थी के अवसर पर नगर से लेकर गांव तक उत्सव का उल्लास दिखाई दिया। सार्वजनिक समितियों एवं परिवारों द्वारा मूर्तिकारों के यहां से भगवान श्रीगणेश की प्रतिमाएं ढोल नगाड़ों की थाप और जयकारों के बीच अपने अपने पंडाल एवं घरों तक पहुंचाई गईं। गणेश भक्त नाचते.गाते और गणपति बप्पा मोरया के जयघोष के साथ प्रतिमाओं को लेकर निकले। प्रतिमाओं के नगर भ्रमण के दौरान मार्ग में श्रद्धालुओं ने भगवान गणेश के दर्शन कर श्रद्धापूर्वक शीश नवाया और आशीर्वाद प्राप्त किया। कई स्थानों पर भक्तों के द्वारा पुष्प अर्पित कर भगवान गणेश का स्वागत भी किया गया। बच्चों, युवाओं और महिलाओं में विशेष उत्साह नजर आया।

धर्ममयी हुआ नगर का वातावरण

भगवान श्रीगणेश की स्थापना के साथ ही वारासिवनी नगर सहित आसपास के क्षेत्र का वातावरण पूरी तरह भक्तिमय हो गया। नगर के विभिन्न हिस्सों में स्थापित गणेश पंडालों में धार्मिक कार्यक्रमों की तैयारियां प्रारंभ हो गई हैं। आगामी दस दिनों तक पंडालों में प्रतिदिन भगवान गणेश की विशेष पूजा अर्चना और आरती सहित विभिन्न धार्मिक आयोजन होंगे। गणेश भक्त सुबह और शाम भगवान श्रीगणेश की आरती कर परिवार की सुख.समृद्धि, स्वास्थ्य एवं खुशहाली की कामना करेंगे। इसके साथ ही नगर, क्षेत्र एवं देशवासियों की सुख.शांति और समृद्धि के लिए भी भगवान गणेश से प्रार्थना की जाएगी। पूरे दिन नगर के विभिन्न हिस्सों में ढोल.नगाड़ों और गणपति बप्पा मोरया के जयघोष से वातावरण गुंजायमान रहा

शुभ मुहूर्त में हुई गणपति की स्थापना

भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा स्थापना को लेकर श्रद्धालुओं ने शुभ मुहूर्त का विशेष ध्यान रखा। अनेक लोग सुबह ही मूर्तिकारों के यहां पहुंचकर अपनी पसंद की प्रतिमाएं लेकर घर एवं पंडाल पहुंचे। इसके बाद वैदिक पंचांग के अनुसार निर्धारित शुभ मुहूर्त में विधि विधान से भगवान गणेश की पूजा अर्चना कर उन्हें विराजित किया गया। स्थापना के दौरान गणेश भक्तों के द्वारा भगवान गणेश को मोदक एवं विभिन्न प्रकार के नैवेद्य अर्पित किए गए। पूजा अर्चना के बाद आरती कर श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीगणेश का आशीर्वाद प्राप्त किया। शुभ मुहूर्त में हुई स्थापना के साथ ही नगर में दस दिवसीय गणेशोत्सव का विधिवत शुभारंभ हो गया।

आरटीओ पुलिस ने पांच वाहनों पर की कार्यवाही

चार वाहनों पर ६४५०० रूपये का जुर्माना, एक ट्रक जब्त

पद्मेश न्यूज। वारासिवनी । वारासिवनी थाना क्षेत्र में आरटीओ पुलिस द्वारा कामर्शियल वाहनों की संघन जांच करते हुए पांच वाहनों के विरुद्ध चालानी कार्यवाही की गई। इस दौरान चार वाहनों से कुल ६४५०० रुपए का जुर्माना वसूल किया गया। जबकि परमिट एवं फिटनेस संबंधी दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराने पर एक ट्रक को जब्त कर थाना वारासिवनी में खड़ा किया गया हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार आरटीओ वाहन निरीक्षण के लिए बालाघाट से वारासिवनी पहुंचा था। इस दौरान राजेगांव चेकपोस्ट प्रभारी प्रधान आरक्षक संदीप सिंह कुशवाहा एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में बालाघाट मार्ग पर वाहनों की जांच की गई। जांच के दौरान वाहन क्रमांक एम एच ३६६ए ए ३९६८ए एम पी २२ एल १०७७ एवं एमपी २२ जी २५०६ को रोककर दस्तावेजों की जांच की गई। इनमें फिटनेस, बीमा एवं परमिट संबंधी दस्तावेजों में कमी पाए जाने पर तीनों वाहनों के विरुद्ध कुल १६ हजार रुपए की चालानी कार्यवाही की गई । जिसकी राशि वाहन चालकों के द्वारा मौके पर जमा कराई गई। इसी दौरान वाहन क्रमांक सीजी ०८ एजे ३६८२ भारी ट्रक को भी जांच के लिए रोका गया। जांच में ट्रक बिना परमिट संचालित पाया गया। वाहन को थाना वारासिवनी लाया गया जहां उसके विरुद्ध ४८५०० रुपए की चालानी कार्यवाही की गई। वाहन मालिक के द्वारा मौके पर चालान की राशि जमा कर दी गई। वहीं जांच के दौरान एक अन्य ट्रक क्रमांक एम पी १४ एच जी ३८६७ भी मिला जिसके पास परमिट एवं फिटनेस संबंधी दस्तावेज उपलब्ध नहीं थे। संबंधित वाहन संचालक द्वारा तत्काल चालान की राशि जमा करने में असमर्थता जाहिर किए जाने पर उक्त ट्रक को जप्त कर थाना वारासिवनी के खड़ा करवा दिया गया हैं। इस प्रकार आरटीओ पुलिस के द्वारा कुल पांच कमर्शियल वाहनों पर कार्यवाही करते हुए चार वाहनों से ६४५०० रुपए का चालान वसूल किया गया तथा एक ट्रक को जब्त किया गया। इस कार्यवाही में रजेगांव चेक पोस्ट प्रभारी प्रधान आरक्षक संदीप सिंह कुशवाहा, आरक्षक अनिल खन्ना, जोंदरू लाल राहगंडाले एवं लक्ष्मी प्रसाद टाकरे का सराहनीय योगदान रहा।

पुलिस ने ट्रक में ठूंस ठूंसकर ले जाए जा रहे २० मवेशी पकड़े

५ भैंस समेत २० मवेशी बरामद, चार आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज

पद्मेश न्यूज। वारासिवनी। वारासिवनी पुलिस ने पशुओं को क्रूरता एवं क्षमता से अधिक संख्या में ट्रक में भरकर महाराष्ट्र की ओर ले जाने के मामले में कार्यवाही करते हुए २० मवेशियों को बरामद किया है। पुलिस ने ट्रक क्रमांक एम एच ४० सी एम ८४७१ को जब्त कर चार आरोपियों के खिलाफ पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार १४ सितंबर २०२६ को प्रधान आरक्षक विनोद कुमरे अपने हमराह आरक्षक शिवदत्त शर्मा एवं धनेन्द्र चौहान के साथ क्षेत्र भ्रमण पर थे। इसी दौरान दीनदयाल चौक वारासिवनी में मुखबिर से सूचना मिली कि लाल रंग के ट्रक में बड़ी संख्या में मवेशियों को ठूंस.ठूंसकर भरकर वारासिवनी रामपायली मार्ग से महाराष्ट्र की ओर ले जाया जा रहा है। सूचना पर पुलिस टीम राहगीर जितेन्द्र कुमार नगपुरे एवं दुर्गेन्द्र सिंहमारे को साथ लेकर बताए गए स्थान पर पहुंची। कुछ समय बाद रामपायली मेनरोड पर उक्त ट्रक दिखाई देने पर पुलिस ने उसे रोककर जांच की। ट्रक चालक ने अपना नाम शरद बंडू राउत निवासी नागी पोस्ट सेलोबाजार, तहसील मंगरूलपीर जिला वाशिम महाराष्ट्र बताया। जांच के दौरान ट्रक में मवेशियों को अत्यधिक संख्या में ठूंस ठूंसकर भरा पाया गया। ट्रक को थाने लाकर जांच करने पर उसमें कुल २० मवेशी जिनमें ५ भैंस एवं १५ बछड़े पाये गये। चालक से मवेशियों के परिवहन संबंधी दस्तावेज मांगे जाने पर कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं होने पर पूछताछ में चालक ने बताया कि मवेशियों को मोनू उर्फसतीश चौधरी निवासी आमगांव जिला बालाघाट ,अजित हंसराज सहारे निवासी काटी जिला गोंदिया महाराष्ट्र तथा आकाश सहारे निवासी काटी जिला गोंदिया महाराष्ट्र द्वारा ट्रक में भरवाया गया था और इन्हें मंदसौर से काटी बाजार महाराष्ट्र ले जाया जा रहा था। पुलिस ने मवेशियों एवं वाहन को जब्त कर लिया। मवेशियों को सुरक्षा की दृष्टि से गौशाला वारासिवनी में जमा कराया गया तथा मामले में चालक शरद बंडू राउत सहित मवेशियों के मालिक बताए गए मोनू उर्फ सतीश चौधरी, अजित हंसराज सहारे एवं आकाश सहारे के विरुद्ध धारा ११,१ एच पशु क्रूरता निवारण अधिनियम १९६० के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।

कालागोटा कोस्ते मार्ग की जर्जर हालत से ग्रामीणजन परेशान

चार किलोमीटर सड़क वर्षो से कच्ची,बारिश में बन जाती है आफत

पद्मेश न्यूज। वारासिवनी । वारासिवनी जनपद पंचायत अंतर्गत ग्राम पंचायत मंगेझरी के कालागोटा से कोस्ते गांव को जोड़ने वाले करीब चार किलोमीटर मार्ग की हालत लंबे समय से बेहद जर्जर बनी हुई है। वर्षो से कच्चे पड़े इस मार्ग पर जगह जगह छोटे.बड़े गड्ढे, कीचड़ और दलदल जैसी स्थिति निर्मित होने से ग्रामीणों को आवागमन में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बारिश के दिनों में मार्ग की स्थिति और भी बदतर हो जाती है ,सड़क पर पानी जमा होने के साथ कीचड़ फैल जाता है जिससे कई स्थानों पर पैदल चलना तक मुश्किल हो जाता है। मार्ग में जगह जगह सड़क की गिट्टी वाले पत्थर निकल गये है और गड्ढों के कारण दोपहिया वाहन चालकों को विशेष परेशानी होती है। कई बार वाहन फिसलने से लोग दुर्घटनाग्रस्त भी हो चुके हैं। यह मार्ग आसपास के ग्रामीणों के लिए आवागमन का प्रमुख साधन है। खासकर विद्यार्थियों को प्रतिदिन इसी रास्ते से आना जाना पड़ता है। खराब सड़क के कारण उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बारिश के दौरान कीचड़ से कपड़े खराब होने के साथ ही दोपहिया वाहनों से आवागमन करना भी जोखिम भरा बना हुआ है। मार्ग की समस्या को लेकर लंबे समय से सड़क निर्माण अथवा मरम्मत की मांग की जा रही है, लेकिन अब तक जिम्मेदार विभाग के द्वारा इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है। ग्रामीणों ने शासन प्रशासन से कालागोटा कोस्ते मार्ग का शीघ्र निर्माण अथवा आवश्यक मरम्मत कार्य कराये जाने की मांग की है। ताकि ग्रामीणों,विद्यार्थियों और वाहन चालकों को सुरक्षित एवं सुगम आवागमन की सुविधा मिल सके।

सड़क की हालत बहुत समय से खराब है इसका सुधार आज तक नहीं किया-कमलेश पटले

राहगीर कमलेश पटले ने बताया इस मार्ग से आना जाना करना पड़ता है रास्ते में बहुत ज्यादा दिक्कत है। कोस्ते से कालागोटा तक तो बड़ी मुश्किल से आना जाना होता है रास्ते में भयंकर कीचड़ बना हुआ है। एक दो जगह दलदल वाली भी स्थिति है परंतु समीप का रास्ता होने से आना जाना करते हैं यहां से सीधे केरा भांडी होते गर्रा निकलते हैं। सड़क की हालत बहुत समय से खराब है इसका सुधार आज तक नहीं किया गया और ना ही पक्की सड़क बनाने पर कोई ध्यान दिया गया। ऐसे में यहां समस्या हो रही है दुर्घटना की हर समय संभावना बनी रहती है।

मार्ग की जर्जर हालत से परेशान है सभी ग्रामीणजन-जितेंद्र उइके

ग्रामीण जितेंद्र उइके ने बताया की यह मार्ग हम मेंढकी ,डोंगरमाली जाने के लिए उपयोग करते हैं। ४ किलोमीटर करीब का मार्ग हैं जो आगे कोस्ते और महाराजपुर ग्राम के लिए दो रास्ते निकलते हैं दोनों बहुत ज्यादा खराब है। मगर क्या करें मजबूरी में यहां से जाना होता हैं गांव के विद्यार्थी भी यहीं से आते जाते हैं कई बार दुर्घटना हो जाती है। अभी बारिश जब से प्रारंभ हुई है तब से यह स्थिति है और सुख समय भी भयंकर गड्ढे रहते हैं ,इसको लेकर कई बार निर्माण की मांग की गई है परंतु निर्माण को दूर अभी तक मरम्मत तक नहीं हो पाई हैं जबकि यह हमारे लिए प्रमुख मार्ग है।

महिलाओं ने पति की दीर्घायु के लिए रखा हरितालिका व्रत

निर्जला उपवास कर नहर नदी से निकाला गौर, रातभर हुआ भजन कीर्तन व जागरण

पद्मेश न्यूज। वारासिवनी । नगर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में १४ अगस्त को हरितालिका तीज पर्व धार्मिक आस्थाओं के साथ मनाया गया। इस पर्व पर महिलाओं में खासा उत्साह देखा गया। महिलाओं ने सुबह नहर, नदी से बालू लाकर भगवान शिव व पार्वती की प्रतिमा का निर्माण किया और पूरी रात रतजगा कर अपने पति की दीर्घायु की कामना की गयी। पति की दीर्घायु के लिये किया जाने वाला सबसे कठिन वृत हरितालिका है, जिसमें ३० घंटे का व्रत सुहागन महिलाओं के द्वारा बिना पानी पीये किया जाता हैं। इनके सांस्कृतिक तथा पारंपरिक महत्व अपनी जगह हैं इसलिए तीज के लिए महिलाएं काफी पहले से तैयारियां शुरू कर देती हैं। ताकि तिथि पर पूरे उत्साह के साथ हरितालिका तीज मनाई जाती है। जिसके तहत महिलाओं ने हरितालिका व्रत धारण किया। यह हरितालिका व्रत की तृतीया तिथि १३ सितंबर से प्रारंभ होकर १४ सितंबर को समाप्त हुई जिसमें अधिकांश लोगों के द्वारा १४ सितंबर को यह व्रत धारण किया गया । तो वहीं कुछ महिलाओं के द्वारा १३ सितंबर को व्रत धारण कर १४ सितंबर को गौर का विसर्जन भी किया गया।

बड़ी नहर में किया जायेगा गौर विसर्जन

हरितालिका का व्रत कठिन उपवास है महिलाएं निर्जल उपवास रहती हैं शाम को नये वस्त्र एवं आभूषण पहनकर बालू मिट्टी से बनी शिव पार्वती की प्रतिमा की पूजन अर्चना कर माता पार्वती को १६ श्रृंगार अर्पित करती हैं। रात्रि जागरण कर रात में जागरण के पश्चात १५ सितम्बर को शिव पार्वती की बालू की प्रतिमाओं को विधियत नदी तालाब में विसर्जन किया जायेगा।

यह व्रत माता पार्वती ने भगवान शिव की प्राप्ति के लिये रखा था-सुलोचना टांडेकर

व्रतधारी महिला श्रीमती सुलोचना टांडेकर ने बताया कि हरितालिका तीज का व्रत सभी महिलाओं के द्वारा किया जा रहा है। जिसमें नहर पर उपस्थित होकर गौर निकल रहे हैं इसमें कुंवारी कन्या व सुहागिन महिला इस व्रत को करती है। यह व्रत पति की दीर्घायु जीवन की कामना के लिए किया जाता है। यह व्रत पूर्वजों से चला आ रहा है जिसमें सुबह गौर निकालकर आज विसर्जन करेंगे इसमें महिलाएं निर्जला व्रत धारण करती है। जिसमें माता गौरा और भगवान शिव की पूजा की जाती है। सभी महिलाएं गौर निकालने के लिए नहर पर पहुंची हुई है सभी ने निर्जला व्रत धारण किया हुआ है इसमें पूरी रात जागकर भगवान की पूजा अर्चना व भजन कीर्तन किया जाएगा। यह व्रत माता पार्वती ने भगवान शिव की प्राप्ति के लिए रखा हुआ था जिसके बाद से यह व्रत किया जाता है।

किसान गर्जना संगठन ब्लॉक खैरलांजी की महत्वपूर्ण बैठक आज

पद्मेश न्यूज। खैरलांजी । किसान गर्जना संगठन ब्लॉक खैरलांजी की महत्वपूर्ण बैठक मंगलवार की दोपहर १२ बजे किसान गर्जना कार्यालय खैरलांजी में आयोजित की जाएगी। बैठक में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अरविंद चौधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष धुरन नगपुरे, जिला अध्यक्ष रामकुमार नागपुरे तथा जिला उपाध्यक्ष भारत सिंह सिहोरे की प्रमुख उपस्थिति रहेगी। बैठक को लेकर ब्लॉक संगठन ने ग्राम स्तर के अध्यक्षों, संगठन के सभी पदाधिकारियों एवं किसान बंधुओं से निर्धारित समय पर उपस्थित होने का आह्वान किया है। बैठक में किसानों से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर मंथन के साथ आगामी आंदोलन की रणनीति भी तैयार की जाएगी। बैठक का प्रमुख विषय किसान गर्जना संगठन के ब्लॉक कार्यालय का शुभारंभ किया जायेगा। संगठन का कहना है कि ब्लॉक स्तर पर कार्यालय के माध्यम से किसानों की समस्याओं को संगठित रूप से उठाने तथा गांव गांव संगठन को मजबूत करने की दिशा में काम किया जाएगा। बैठक में भावांतर योजना को लेकर किसानों की स्थिति और संगठन की आगामी रणनीति पर विस्तार से चर्चा होगी। इसके साथ ही धान की खरीदी ३१०० प्रति क्विंटल के मुद्दे को भी प्रमुखता से उठाया जाएगा। किसानों की उपज का उचित मूल्य दिलाने की मांग को लेकर संगठन के द्वारा आगे की रणनीति तय की जाएगी। इसके अलावा लगातार बढ़ते खाद के दाम और खेती की बढ़ती लागत को लेकर भी पदाधिकारी एवं किसान अपनी बात रखेंगे। संगठन का जोर किसानों पर बढ़ते आर्थिक दबाव को लेकर सरकार तक आवाज पहुंचाने पर रहेगा। बैठक में ग्रामीण क्षेत्रों में हो रही बिजली कटौती पर भी चर्चा की जाएगी। कृषि कार्य के समय बिजली की उपलब्धता और किसानों को हो रही परेशानियों को लेकर संगठन के द्वारा ठोस रणनीति बनाने की बात कही गई है। बैठक में सभी मुद्दों पर चर्चा के बाद जरूरत पड़ने पर ब्लॉक स्तरीय आंदोलन करने को लेकर निर्णय लिया जाएगा। संगठन पदाधिकारियों का कहना है कि किसानों से जुड़े सवालों को केवल बैठक तक सीमित नहीं रखा जाएगा। बल्कि आवश्यकता पड़ने पर संगठित आंदोलन के माध्यम से शासन.प्रशासन तक किसानों की आवाज पहुंचाई जाएगी। बैठक में ब्लॉक अध्यक्ष अशोक लिल्हारे, ब्लॉक प्रभारी डेविड सेलोकर, ब्लॉक उपाध्यक्ष बंडुभाऊ गोपाले, ब्लॉक सचिव जितलाल बसेने , ब्लॉक कार्यवाहक अध्यक्ष सुरेंद्र दमाहे, ब्लॉक उपाध्यक्ष अजब सिंह कुरपगये, गुड्डु भगत, ब्लॉक महासचिव राजेंद्र नगपुरे सहित समस्त ब्लॉक कार्यकारिणी के पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।

आरक्षण सामाजिक न्याय की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम

भारतीय संविधान ने सामाजिक न्याय को राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला माना। आरक्षण इसी सामाजिक न्याय की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य उन वर्गों को अवसर और प्रतिनिधित्व देना था जो लंबे समय तक सामाजिक भेदभाव का सामना करते रहे हैं। विशेषकर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण ने शिक्षा, रोजगार और प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में नए रास्ते खोले हैं। सात दशकों से अधिक समय में इस व्यवस्था ने अनेक पिछड़े परिवारों को शिक्षा, रोजगार और सम्मानजनक जीवन की मुख्यधारा तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए आरक्षण की उपयोगिता पर प्रश्न उठाना सही प्रतीत नही होता है लेकिन इसकी समीक्षा करने में भी कोई हर्ज नही होना चाहिए वह भी तब जब इन्हीं शोषित वंचित सामाज का उत्थान इसमें निहित हो। प्रश्न आरक्षण समाप्त करने का नहीं बल्कि उसके वास्तविक उद्देश्य को और अधिक प्रभावी बनाने का है। क्या आरक्षण का लाभ उस व्यक्ति तक पहुँच रहा है जो आज भी सामाजिक और आर्थिक रूप से सबसे पीछे खड़ा है? भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ने पिछड़े वर्गों के उत्थान की आवश्यकता को स्वीकार किया था लेकिन वे इसे वास्तविक पिछड़ेपन और शिक्षा से जोड़कर देखते थे। 18 जुलाई 1962 को एक पत्र में नेहरूजी ने स्पष्ट किया कि पिछड़े वर्गों को सहायता अधिक से अधिक होनी चाहिए और शिक्षा इसके लिए सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने आर्थिक पिछड़ेपन के आधार पर सहायता देने की बात भी कही थी। इस विचार की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। क्योंकि यदि किसी बच्चे को अच्छी शिक्षा, संसाधन और अवसर ही उपलब्ध नहीं हैं तो केवल आरक्षण देने मात्र से उसका लाभ नही हो सकता है। 1990 का मंडल कमीशन भारतीय राजनीति में सामाजिक न्याय की बहस का एक निर्णायक अध्याय साबित हुआ। तब राजीव गांधी ने संसद में पिछड़ेपन और आरक्षण से जुड़े प्रश्न पर कहा कि गरीबी, पिछड़ापन और अवसरों की कमी को व्यापक दृष्टि से देखा जाना चाहिए। इसका मतलब यह था कि राजनीतिक विचारधाराओं में मतभेद होने के बावजूद एक बात पर गंभीर सहमति दिखाई देती रही है कि सिर्फ आरक्षण देना पर्याप्त नहीं; शिक्षा, आर्थिक अवसर और वास्तविक सशक्तीकरण भी आवश्यक हैं। अब सुप्रीम अदालत ने भी माना कि अनुसूचित जातियाँ एक समान और सामाजिक रूप से एकरूप समूह नहीं हैं तथा उनके भीतर अधिक वंचित समूहों के लिए उप-वर्गीकरण पर विचार किया जाना चाहिए। इस मत का उद्देश्य आरक्षण को कमजोर करना नहीं बल्कि उसके लाभ को अधिक न्यायसंगत ढंग से वितरित करने की संभावना पर विचार करना है। आरक्षण का उद्देश्य यह कतई नहीं होना चाहिए कि एक ही परिवार या समूह को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अवसर मिलते रहें और उसी समुदाय का कोई दूसरा व्यक्ति लगातार अवसर के अभाव में पिछड़ता चला जाए। बल्कि इसका उद्देश्य सबसे पीछे वाले को आगे लाने का होना चाहिए। पिछड़ी जातियों और समुदायों के भीतर भी सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक परिस्थितियाँ समान नहीं हैं। कुछ परिवारों ने आरक्षण और अन्य सरकारी अवसरों के माध्यम से उल्लेखनीय प्रगति की है, जबकि उन्हीं समुदायों के अनेक परिवार आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार और बुनियादी सुविधाओं से दूर हैं। इसलिए आज मुद्दा आरक्षण समाप्त करने की बजाय इसे और अधिक प्रभावी और न्यायपूर्ण बनाने का होना चाहिए। यदि एक ही समुदाय के भीतर के कुछ लोग लगातार अवसर प्राप्त करते रहें और उसी समुदाय के अत्यंत वंचित लोग पीढ़ियों तक पीछे बने रहें, तो क्या इस स्थिति पर विचार करना सामाजिक न्याय के विरुद्ध है?

शांति, स्वतंत्रता और समानता का बुनियादी स्तंभ है लोकतंत्र

अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस, 15 सितंबर 2026

लोकतंत्र केवल मतपत्र पर लगाई गई मुहर का नाम नहीं है। यह उस विश्वास का नाम है जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपनी आवाज, अपनी गरिमा और अपने अधिकारों के साथ राष्ट्र-निर्माण में सहभागी होने का अवसर मिलता है। एक तरह से शांति, स्वतंत्रता, समानता एवं सह-जीवन का बुनियादी स्तंभ है लोकतंत्र। हर वर्ष 15 सितंबर को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस इसी लोकतांत्रिक चेतना को मजबूत करने का अवसर है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2007 में इस दिवस की स्थापना की थी और 2008 से इसका आयोजन हो रहा है। 2026 में अंतर-संसदीय संघ-आईपीयू ने लोकतंत्र दिवस के लिए मानवाधिकारों को केंद्र में लाएं को प्रमुख विषय बनाया है। इसका संदेश स्पष्ट है कि मानवाधिकार लोकतंत्र के सजावटी तत्व नहीं, बल्कि उसकी बुनियादी शर्त हैं। मानवाधिकार सुरक्षित नहीं हैं तो चुनाव, संसद और संविधान की मौजूदगी के बावजूद लोकतंत्र अधूरा रहेगा।

आज दुनिया के सामने लोकतंत्र का सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या लोकतंत्र केवल संस्थागत ढांचे के रूप में जीवित है या उसके भीतर नागरिक स्वतंत्रता, समानता, न्याय, संवाद और मानवीय गरिमा भी सुरक्षित हैं? संयुक्त राष्ट्र भी 2026 में लोकतंत्र को केवल चुनावों तक सीमित न मानते हुए मानवाधिकार, कानून के शासन और नागरिकों की सार्थक भागीदारी को उसकी अनिवार्य आत्मा मान रहा है। लोकतंत्र की खूबसूरती यह है कि सत्ता का अंतिम स्रोत जनता होती है। लेकिन इसकी कमजोरी भी यहीं से शुरू होती है। जब जनता अपनी जिम्मेदारी भूल जाती है, जब नागरिक अपने अधिकारों के प्रति तो जागरूक रहते हैं लेकिन कर्तव्यों के प्रति उदासीन हो जाते हैं, जब चुनाव जाति, धर्म, क्षेत्र, धनबल, बाहुबल या झूठे प्रचार के प्रभाव में आने लगते हैं, तब लोकतंत्र का बाहरी ढांचा तो बचा रहता है, लेकिन उसकी आत्मा कमजोर होने लगती है। आज दुनिया के अनेक देशों में लोकतांत्रिक संस्थाओं के सामने गंभीर चुनौतियां हैं। राजनीतिक ध्रुवीकरण बढ़ रहा है, संस्थाओं की स्वतंत्रता पर सवाल उठ रहे हैं, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों पर दबाव दिखाई देता है तथा सत्ता के केंद्रीकरण की प्रवृत्ति कई समाजों में चिंता का कारण बन रही है। लोकतंत्र के नाम पर चुनाव हो जाना पर्याप्त नहीं है। यदि चुनाव के बाद नागरिकों की आवाज को महत्व न मिले, विपक्ष को शत्रु समझा जाए, मीडिया स्वतंत्र न रहे, न्यायपालिका पर दबाव हो और सत्ता जवाबदेही से मुक्त होने लगे, तो लोकतंत्र धीरे-धीरे बहुमत की निरंकुशता में बदल सकता है। महात्मा गांधी का लोकतंत्र संबंधी चिंतन आज भी इस संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने कहा था- मेरे विचार में लोकतंत्र में सबसे कमजोर व्यक्ति को वही अवसर मिलना चाहिए जो सबसे शक्तिशाली व्यक्ति को मिलता है। गांधी के लिए लोकतंत्र केवल राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने की व्यवस्था नहीं था, बल्कि कमजोर से कमजोर व्यक्ति को सम्मान, अवसर और न्याय उपलब्ध कराने की व्यवस्था था। वे लोकतंत्र को अहिंसा, अनुशासन, आत्मसंयम और नागरिक चेतना से जोड़ते थे। उनका स्पष्ट विचार था कि लोकतंत्र हिंसा और असत्य के सहारे कायम नहीं रह सकता।

विंस्टन चर्चिल का प्रसिद्ध कथन भी लोकतंत्र की वास्तविक प्रकृति को समझने में मदद करता हैकि लोकतंत्र शासन की सबसे खराब प्रणाली है, उन सभी प्रणालियों को छोड़कर जिन्हें आजमाया जा चुका है। यह कथन लोकतंत्र की कमियों को स्वीकार करते हुए भी उसकी श्रेष्ठता को रेखांकित करता है। लोकतंत्र पूर्ण व्यवस्था नहीं है, लेकिन उसमें आत्म-सुधार की क्षमता है। जनता सरकार को चुन सकती है, उसकी आलोचना कर सकती है और आवश्यकता पड़ने पर उसे बदल सकती है। यही लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति है-सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण। जहाँ सत्ता परिवर्तन के लिए हिंसा, क्रांति या रक्तपात की आवश्यकता नहीं पड़ती और मतदाता अपनी इच्छा से सरकार बदल सकता है, वहाँ लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होती हैं। लेकिन इसके लिए स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्वाचन व्यवस्था, स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र मीडिया और सक्रिय नागरिक समाज आवश्यक हैं। आज लोकतंत्र के सामने एक नई और जटिल चुनौती कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई और डिजिटल तकनीक के रूप में भी सामने आई है। तकनीक लोकतंत्र को अधिक सहभागी और पारदर्शी बना सकती है। सरकारी योजनाओं की निगरानी, नागरिक शिकायतों के समाधान, नीति-निर्माण में आंकड़ों के उपयोग और जनता की राय को शासन तक पहुंचाने में एआई उपयोगी हो सकता है। लेकिन यही तकनीक गलत सूचना, डीपफेक, लक्षित दुष्प्रचार, हेट स्पीच और जनमत को प्रभावित करने का माध्यम भी बन सकती है। संयुक्त राष्ट्र ने भी एआई की इन संभावनाओं और जोखिमों के बीच संतुलन तथा उसके जिम्मेदार शासन की आवश्यकता पर बल दिया है। इसलिए लोकतंत्र का डिजिटल भविष्य केवल तकनीकी क्षमता से तय नहीं होगा, बल्कि इस बात से तय होगा कि तकनीक के पीछे मानवीय विवेक कितना मजबूत है।

एआई लोकतंत्र का विकल्प नहीं, लोकतांत्रिक विवेक का सहायक होना चाहिए। तकनीक नागरिक को नियंत्रित करने का उपकरण नहीं, नागरिक को सशक्त करने का माध्यम बने-यही लोकतांत्रिक तकनीकी संस्कृति की कसौटी होनी चाहिए। लोकतंत्र की दूसरी बड़ी आवश्यकता है संवाद की संस्कृति। असहमति लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, उसकी शक्ति है। सरकार से प्रश्न पूछना राष्ट्र-विरोध नहीं; विपक्ष की आलोचना लोकतंत्र-विरोध नहीं; मीडिया द्वारा सत्ता से जवाब मांगना व्यवस्था-विरोध नहीं। बल्कि यही लोकतंत्र की जीवंतता के प्रमाण हैं। जब असहमति को दबाया जाता है, तब लोकतंत्र का संवाद समाप्त होता है और उसके स्थान पर भय जन्म लेता है। इसीलिए लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए राजनीतिक दलों में भी आंतरिक लोकतंत्र जरूरी है। जो राजनीतिक संगठन अपने भीतर विचार-विमर्श, पारदर्शिता और नेतृत्व परिवर्तन की स्वस्थ परंपरा नहीं रखते, वे व्यापक समाज में लोकतांत्रिक संस्कार कैसे विकसित कर सकते हैं? लोकतंत्र की शुरुआत संसद से पहले राजनीतिक दलों और नागरिक समाज के भीतर होनी चाहिए। साथ ही लोकतंत्र को केवल राष्ट्रीय सत्ता तक सीमित रखना भी उचित नहीं। पंचायत, नगर निकाय और स्थानीय संस्थाएं लोकतंत्र की वास्तविक पाठशाला हैं।

जिस लोकतंत्र में गांव का नागरिक अपने स्थानीय निर्णयों में सहभागी नहीं है, उसमें लोकतंत्र का विकेंद्रीकरण अधूरा है। गांधी का ग्राम स्वराज इसी व्यापक लोकतांत्रिक दृष्टि का प्रतीक था-सत्ता का प्रवाह ऊपर से नीचे नहीं, बल्कि नीचे से ऊपर की ओर हो। लोकतंत्र की सफलता के लिए नागरिकों को भी यह समझना होगा कि अधिकारों के साथ कर्तव्य जुड़े हैं। मतदान करना ही नागरिकता की पूर्ण जिम्मेदारी नहीं है। सही सूचना प्राप्त करना, संविधान और कानून का सम्मान करना, करों का ईमानदारी से भुगतान करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, सामाजिक सद्भाव बनाए रखना और गलत नीतियों के विरुद्ध शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठाना भी नागरिक धर्म है। अंततः लोकतंत्र कोई तैयार होकर मिल जाने वाली व्यवस्था नहीं, बल्कि निरंतर साधना है। उसे हर पीढ़ी को अपने आचरण, संस्थाओं और सार्वजनिक जीवन के माध्यम से मजबूत करना पड़ता है। लोकतंत्र तभी सार्थक है जब सत्ता जनता के प्रति जवाबदेह हो, संस्थाएं स्वतंत्र हों, मानवाधिकार सुरक्षित हों, कमजोर को न्याय मिले, असहमति का सम्मान हो और नागरिकों को यह विश्वास हो कि शासन वास्तव में उनके कल्याण के लिए है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र ही नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक विविधता और जनभागीदारी का अद्भुत उदाहरण है। विशाल जनसंख्या, भाषाई-सांस्कृतिक विविधता और अनेक राजनीतिक विचारधाराओं के बावजूद भारत ने संविधान, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार और स्वतंत्र निर्वाचन प्रक्रिया के माध्यम से लोकतांत्रिक व्यवस्था को निरंतर मजबूत किया है। सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण, स्वतंत्र न्यायपालिका, जीवंत संसद, सक्रिय मीडिया और मजबूत नागरिक समाज इसकी लोकतांत्रिक शक्ति के प्रमुख आधार हैं।

भारत का लोकतंत्र यह संदेश देता है कि विविधता विभाजन नहीं, शक्ति बन सकती है। इसकी वास्तविक मजबूती तभी कायम रहेगी, जब नागरिक अधिकारों के साथ कर्तव्य, सहिष्णुता, संवाद, पारदर्शिता और संवैधानिक मूल्यों के प्रति आस्था को भी सर्वोच्च महत्व दिया जाए। अंतर्राष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस हमें इसी आत्ममंथन का अवसर देता है। आज आवश्यकता केवल लोकतंत्र को बचाने की नहीं, बल्कि उसे अधिक मानवीय, अधिक सहभागी, अधिक पारदर्शी और अधिक जवाबदेह बनाने की है। मानवाधिकार उसकी बुनियाद हैं, जनभागीदारी उसकी शक्ति है, संवाद उसकी आत्मा है और जवाबदेही उसकी सुरक्षा-कवच। जब तकनीक मानवीय करुणा से जुड़ेगी, सत्ता नैतिकता से बंधेगी और जनता अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक होगी, तभी लोकतंत्र अपने आदर्श रूप को प्राप्त कर सकेगा। 'लोकतंत्र की असली विजय तब होगी, जब सबसे शक्तिशाली नागरिक और सबसे कमजोर नागरिक-दोनों को न्याय, सम्मान, अवसर और अपनी आवाज की समान कीमत महसूस हो। यही लोकतंत्र का सार है और यही उसके भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी भी।'

-ललित गर्ग

बीज कानून-किसान की ढाल या बाजार का कवच

-कुमार कृष्णन

किसान जब खेत में बीज डालता है तो केवल फसल नहीं बोता, वह अपनी अगली फसल, परिवार की जरूरत और कर्ज चुकाने की उम्मीद भी बोता है। बीज खराब निकला तो नुकसान केवल बीज के पैकेट की कीमत तक सीमित नहीं रहता। खेत की तैयारी, खाद, सिंचाई, मजदूरी और पूरा मौसम दांव पर लग जाता है। इसलिए नए बीज कानून की जरूरत पर बहस से ज्यादा जरूरी सवाल यह है कि उसके केंद्र में कौन होगा—किसान या बीज बाजार? 10 सितंबर को नई दिल्ली के कृषि भवन में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ देशभर के सौ से अधिक किसान संगठनों के प्रतिनिधियों की संवादात्मक बैठक में यही सवाल अलग-अलग रूपों में सामने आया। बीज क्षेत्र के नियामक ढांचे और प्रस्तावित कानून पर सुझाव मांगे गए। सरकार का मानना है कि बीज अधिनियम, 1966 और बीज नियंत्रण आदेश, 1983 बदलती कृषि व्यवस्था की चुनौतियों से निपटने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। नवंबर-दिसंबर 2025 में मसौदे पर करीब 18 हजार सुझाव मिलने के बाद भी सरकार ने किसान संगठनों के साथ संवाद जारी रखा है। कानून लाने की कोई समय-सीमा अभी तय नहीं की गई है। सरकार का यह संवाद जारी रखना स्वागतयोग्य है। क्योंकि बीज कानून केवल नकली और घटिया बीजों पर लगाम लगाने का कानून नहीं होगा। यह तय करेगा कि बीज की गुणवत्ता का जोखिम कौन उठाएगा, किसान को नुकसान होने पर न्याय कितनी जल्दी मिलेगा और देश की पारंपरिक बीज-संपदा पर किसका अधिकार सुरक्षित रहेगा। किसान महापंचायत ने नकली और बांझ बीज के मामलों में कठोर दंड, प्रभावित किसानों को पर्याप्त मुआवजा, कंपनियों की जवाबदेही और शिकायतों की जांच की मांग की है। बीज से जुड़ी समितियों में किसानों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने की मांग भी महत्वपूर्ण है। लेकिन जुर्माना और मुआवजा एक बात नहीं हैं। कंपनी पर कार्रवाई हो जाए और किसान मुआवजे के लिए वर्षों भटकता रहे तो कानून की कठोरता उसके किस काम की? किसान के लिए न्याय की पहली शर्त समय पर राहत है। यहीं प्रगतिशील कृषि मंच के राष्ट्रीय संयोजक किशोर जायसवाल का सुझाव महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने खराब बीज से जुड़े विवादों और क्षतिपूर्ति के लिए स्वतंत्र शिकायत निवारण अधिकारी या ओम्बड्समैन जैसी व्यवस्था का सुझाव दिया है। किसान के पास ऐसी संस्था होनी चाहिए, जहां शिकायत दर्ज करना आसान हो, जांच निष्पक्ष और वैज्ञानिक हो, जिम्मेदारी तय की जा सके और मुआवजा समयबद्ध मिले। आज स्थिति यह है कि किसान के पास न अपनी प्रयोगशाला होती है, न विशेषज्ञों की टीम और न ही बीज कंपनी के बराबर कानूनी संसाधन। यदि खराब बीज साबित करने का पूरा बोझ उसी पर डाल दिया गया तो न्याय की शुरुआत ही असमान जमीन से होगी। इसलिए शिकायत व्यवस्था किसान-पक्षधर होने के साथ वैज्ञानिक और स्वतंत्र भी होनी चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं कि हर फसल खराब होने को खराब बीज मान लिया जाए। मौसम, मिट्टी, सिंचाई, कीट और कृषि पद्धति भी उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इसलिए वैज्ञानिक जांच जरूरी है। सवाल कंपनी को पहले से दोषी मानने का नहीं, बल्कि किसान को कमजोर पक्ष मानते हुए निष्पक्ष जांच की व्यवस्था बनाने का है। नए कानून की दूसरी बड़ी परीक्षा नियमन और किसान की स्वतंत्रता के बीच संतुलन की होगी। बीज का पंजीकरण, गुणवत्ता निगरानी, बीज की पहचान और आपूर्ति-श्रृंखला पर नजर नकली बीजों के खिलाफ जरूरी कदम हैं। लेकिन नियमन ऐसा नहीं होना चाहिए कि उसकी सबसे बड़ी कीमत किसान ही चुकाए। भारत की खेती एकरूप नहीं है। पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार और झारखंड की मिट्टी, मौसम और कृषि परंपराएं अलग हैं। स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित बीजों की अपनी उपयोगिता है। इसलिए राष्ट्रीय गुणवत्ता मानक जरूरी हैं, लेकिन राज्यों, कृषि संस्थानों और किसानों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। केंद्रीय कानून कृषि की इस विविधता को एकरूप प्रशासनिक व्यवस्था में बदल दे, यह जोखिम नहीं लिया जा सकता। सबसे संवेदनशील सवाल किसान के अपने बीज का है। सरकार की ओर से कहा गया है कि किसान पारंपरिक और कृषक किस्मों के बीजों का उपयोग, आदान-प्रदान और बिक्री कर सकेंगे तथा इसके लिए अनिवार्य पंजीकरण नहीं होगा। यह आश्वासन महत्वपूर्ण है। लेकिन किसान के अधिकार का सबसे सुरक्षित स्थान सरकारी बयान नहीं, कानून की स्पष्ट धारा होती है। भारत की कृषि की असली पूंजी केवल प्रयोगशालाओं में विकसित उच्च उत्पादकता वाली किस्में नहीं हैं। गांवों और खेतों में पीढ़ियों से बचाए गए स्थानीय बीज भी इस पूंजी का हिस्सा हैं। जलवायु परिवर्तन के दौर में इनकी उपयोगिता और बढ़ जाती है। सूखा, बाढ़, तापमान में वृद्धि और नए रोगों के बीच विविध बीज कृषि को संकट से उबरने के अधिक विकल्प देते हैं। किशोर जायसवाल ने इसलिए देशी और पारंपरिक बीजों तथा उनके सुरक्षित भंडार के संरक्षण की मजबूत संस्थागत व्यवस्था का सुझाव दिया है। संबंधित संस्थाओं को सुरक्षित बीज भंडार की जिम्मेदारी देने और उन्हें नियामक व्यवस्था से जोड़ने की बात भी महत्वपूर्ण है। लेकिन बीज संरक्षण का अर्थ किसान से उसकी बीज-संपदा लेकर किसी संस्था के गोदाम में बंद कर देना नहीं हो सकता। संरक्षण तभी सार्थक है जब किसान उस बीज का उपयोगकर्ता ही नहीं, उसके अधिकार का वास्तविक भागीदार भी बना रहे। बीज बचाने की व्यवस्था किसान के साथ होनी चाहिए, किसान से अलग नहीं। जायसवाल का तीसरा सुझाव कृषि अनुसंधान को पर्याप्त नीतिगत समर्थन और संसाधन देने का है। इसे भी बीज कानून की बहस के केंद्र में होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन ने कृषि अनुसंधान की प्राथमिकताएं बदल दी हैं। अब केवल अधिक उत्पादन देने वाली किस्में पर्याप्त नहीं हैं। कम पानी में टिकने वाली, अधिक तापमान सहने वाली, बाढ़ या सूखे के बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल किस्मों की जरूरत है। इसके साथ यह भी जरूरी है कि विकसित बीज किसानों तक समय पर और उचित कीमत पर पहुंचें। निजी क्षेत्र का अनुसंधान कृषि के लिए उपयोगी है, लेकिन हर कृषि समस्या बाजार के लिए लाभकारी नहीं होती। छोटे किसानों, कम लाभ वाली फसलों और दूरदराज के क्षेत्रों की जरूरतों पर सार्वजनिक अनुसंधान संस्थानों को भी काम करना होगा। खाद्य सुरक्षा और कृषि विविधता को पूरी तरह बाजार की लाभ-प्रेरणा पर छोड़ देना जोखिम भरा होगा। यहीं बीज कानून का असली सवाल बाजार और किसान के बीच शक्ति-संतुलन का बन जाता है। नियमन का उद्देश्य बाजार को बंद करना नहीं, उसे जिम्मेदार बनाना होना चाहिए। कंपनियों की जवाबदेही तय करने के साथ किसान की शिकायत करने और अपने अधिकार के लिए खड़े होने की क्षमता भी बढ़ानी होगी। किसान को यह जानने का अधिकार है कि वह कौन-सा बीज खरीद रहा है, उसकी गुणवत्ता क्या है, शिकायत कहां करेगा और नुकसान होने पर मुआवजा कैसे मिलेगा। केवल पैकेट पर तकनीकी विवरण, क्यूआर कोड या डिजिटल व्यवस्था जोड़ देना पर्याप्त नहीं। सूचना तभी अधिकार बनती है जब वह किसान तक समझ में आने वाली भाषा में पहुंचे और उसके साथ जांच तथा न्याय की वास्तविक पहुंच भी हो। नए कानून की कसौटी इसलिए कई स्तरों पर होगी। क्या खराब बीज की शिकायत के लिए स्वतंत्र और सुलभ व्यवस्था बनेगी? क्या मुआवजा समयबद्ध होगा? क्या कंपनियों की जवाबदेही स्पष्ट होगी? क्या नियामक संस्थाओं में किसान की प्रभावी भागीदारी होगी? क्या पारंपरिक बीजों पर उसका अधिकार सुरक्षित रहेगा? क्या सार्वजनिक कृषि अनुसंधान को पर्याप्त संसाधन मिलेंगे? इन सवालों के जवाब तय करेंगे कि नया सीड बिल किसान का कानून बनेगा या केवल बीज बाजार का नियमन करेगा।कृषि कानूनों का इतिहास बताता है कि कागज पर अच्छी व्यवस्था और खेत में उसका असर दो अलग चीजें हो सकती हैं।

बेटियों के सपनों की राह में अब भय नहीं सुरक्षा और सम्मान का भरोसा

महिलाओं की सुरक्षा किसी भी सभ्य और विकसित समाज की पहली पहचान होती है। जिस समाज में बेटी बिना भय के विद्यालय जा सके, युवती अपने सपनों को पूरा करने के लिए घर से बाहर निकल सके और कामकाजी महिला देर तक अपने कार्यस्थल पर रहकर भी सुरक्षित घर लौट सके, वही समाज वास्तविक अर्थों में प्रगति की ओर बढ़ता है। वाराणसी के पिंडरा में आयोजित कामकाजी महिला सम्मान समारोह में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा को लेकर दिया गया संदेश इसी व्यापक सोच को सामने रखता है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि बेटियों की सुरक्षा में सेंध लगाने वालों के लिए जेल या जहन्नुम, दो ही जगह हैं। यह केवल राजनीतिक भाषण का हिस्सा नहीं, बल्कि महिलाओं के प्रति अपराध के विरुद्ध सरकार की कठोर नीति का संकेत भी है।

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में महिलाओं की सुरक्षा हमेशा बड़ी चुनौती रही है। आबादी का बड़ा हिस्सा गांवों और कस्बों में रहता है, जहां बेटियों की शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी कई बार सामाजिक सोच और सुरक्षा की चिंता से प्रभावित होती है। लंबे समय तक परिवारों के सामने यह प्रश्न रहा कि बेटी को पढ़ने के लिए दूर भेजें या नहीं, उसे प्रशिक्षण दिलाएं या नहीं, नौकरी करने दें या नहीं। योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में इसी मनोवैज्ञानिक भय को रेखांकित किया। उनका कहना था कि जब परिवार को बेटी की सुरक्षा का भरोसा नहीं होता तो सबसे पहले उसके सपनों पर रोक लगती है। महिला सुरक्षा का अर्थ केवल अपराध होने के बाद कार्रवाई करना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ ऐसा वातावरण बनाना है, जिसमें अपराध करने की मानसिकता पैदा होने से पहले ही कानून का भय दिखाई दे। छेड़छाड़, पीछा करना, महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार, घरेलू हिंसा, दुष्कर्म और अन्य अपराधों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई तभी सार्थक होती है, जब पीड़िता को शिकायत करने में संकोच न हो और उसे यह विश्वास हो कि व्यवस्था उसके साथ खड़ी है। कठोर कानून के साथ संवेदनशील पुलिस व्यवस्था, त्वरित सुनवाई और पीड़ित महिला को सामाजिक तथा कानूनी सहायता भी सुरक्षा के इसी तंत्र का हिस्सा हैं। उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था को लेकर पिछले वर्षों में जिस बदलाव की चर्चा होती रही है, उसका एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अपराध और अपराधी के बीच फर्क करते हुए संगठित अपराध तथा माफिया तंत्र के खिलाफ कठोर कार्रवाई को शासन की प्राथमिकता बनाया गया। मुख्यमंत्री ने वाराणसी में कहा कि सरकार वोट बैंक के लिए किसी माफिया के सामने नहीं झुकती। राजनीति से अलग हटकर देखा जाए तो कानून का शासन तभी मजबूत होता है जब अपराधी की पहचान उसके प्रभाव, धन या राजनीतिक पहुंच से नहीं, बल्कि उसके कृत्य से तय हो। महिलाओं के मामले में यह

और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि प्रभावशाली अपराधी के खिलाफ कार्रवाई का अभाव समाज में भय और अपराधी के मन में दुस्साहस पैदा करता है। महिलाओं की सुरक्षा को केवल पुलिस और कानून व्यवस्था का विषय मानना भी अधूरा दृष्टिकोण होगा। सुरक्षा का संबंध महिला के पूरे जीवन से जुड़ा है। घर में शौचालय की सुविधा से लेकर विद्यालय तक सुरक्षित पहुंच, सार्वजनिक परिवहन से लेकर कार्यस्थल तक सुरक्षित वातावरण और आर्थिक आत्मनिर्भरता से लेकर सरकारी योजनाओं तक आसान पहुंच, ये सभी महिला सशक्तीकरण के आधार हैं। मुख्यमंत्री ने वर्ष 2017 से पहले की परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए बताया कि परिवारों को बेटी की सुरक्षा, घर में शौचालय, इलाज के खर्च और आमदनी जैसी अनेक चिंताएं परेशान करती थीं। आज महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए ऐसी मूलभूत समस्याओं को दूर करना भी सुरक्षा के व्यापक अर्थ में शामिल किया जाना चाहिए।बेटी की सुरक्षा का सबसे बड़ा परिणाम उसके सपनों की स्वतंत्रता में दिखाई देता है। यदि एक लड़की को यह भरोसा हो कि विद्यालय, महाविद्यालय, प्रशिक्षण केंद्र या नौकरी तक जाने के रास्ते में उसके साथ कानून खड़ा है तो उसके आत्मविश्वास में स्वाभाविक वृद्धि होती है। यही आत्मविश्वास आगे चलकर शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता में भागीदारी बढ़ाता है। इसलिए महिला सुरक्षा को केवल अपराध के आंकड़ों से नहीं, बल्कि इस बात से भी मापा जाना चाहिए कि कितनी बेटियां बिना भय के अपनी पसंद की शिक्षा और रोजगार चुन पा रही हैं। कामकाजी महिलाओं के सम्मान समारोह का संदेश भी इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण है। महिला जब परिवार की जिम्मेदारियों के साथ आर्थिक गतिविधियों में भाग लेती है तो वह केवल अपनी आय नहीं बढ़ाती, बल्कि परिवार और समाज की आर्थिक क्षमता को मजबूत करती है। ग्रामीण क्षेत्र की महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़कर रोजगार शुरू करे, खेत और पशुपालन से आय बढ़ाए, छोटे व्यवसाय का संचालन करे या शहर में नौकरी करे, प्रत्येक स्थिति में सुरक्षित वातावरण उसकी सफलता की अनिवार्य शर्त है। महिला को अवसर देना और अवसर तक सुरक्षित पहुंच सुनिश्चित करना, दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। वाराणसी में राष्ट्रीय पोषण माह के शुभारंभ का प्रसंग भी महिला और बेटी के प्रश्न को एक दूसरे आयाम से जोड़ता है। पोषण, स्वास्थ्य और सुरक्षा को अलग-अलग विषय समझना उचित नहीं है। कुपोषण से जूझती किशोरी, स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित गर्भवती महिला या आर्थिक कठिनाइयों से परेशान परिवार की बेटी के सपनों की राह स्वाभाविक रूप से कठिन हो जाती है। इसलिए महिला सशक्तीकरण की नीति में पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता को एक साथ देखना आवश्यक है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को देश में अग्रणी राज्यों में पहुंचाने की चर्चा के बीच महिला भागीदारी को भी केंद्र में रखना होगा। किसी प्रदेश की आर्थिक ताकत केवल उद्योगों और निवेश से नहीं बढ़ती, बल्कि तब बढ़ती है जब उसकी आधी आबादी शिक्षा, रोजगार और उद्यम के क्षेत्र में पूरी क्षमता से योगदान देती है। महिला सुरक्षित होगी तो वह घर की चारदीवारी से बाहर निकलेगी, शिक्षा हासिल करेगी, रोजगार चुनेगी और आर्थिक निर्णयों में अपनी भूमिका बढ़ाएगी। इसलिए महिला सुरक्षा वास्तव में आर्थिक विकास की बुनियादी शर्त भी है। मुख्यमंत्री का यह संदेश कि अपराधियों को कठोर परिणाम भुगतना होगा, समाज के लिए तभी प्रभावी बनेगा जब इसके साथ महिलाओं में विश्वास भी लगातार मजबूत किया जाए।

कानून का भय अपराधी के लिए और व्यवस्था पर भरोसा पीड़िता के लिए, दोनों समान रूप से जरूरी हैं। बेटियों को यह महसूस होना चाहिए कि शिकायत करने पर उनकी आवाज सुनी जाएगी और महिलाओं को यह विश्वास होना चाहिए कि सार्वजनिक स्थान उनका भी उतना ही अधिकार है जितना किसी अन्य नागरिक का। उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में उठाए गए कदमों की वास्तविक सफलता तब मानी जाएगी, जब किसी पिता को बेटी को स्कूल भेजते समय भय न हो, किसी मां को काम से लौटती बेटी की चिंता न सताए और किसी युवती को अपने करियर का चुनाव सुरक्षा के सवाल से समझौता करके न करना पड़े। सरकार की योजनाओं का अंतिम उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि सुरक्षा कागज पर दर्ज व्यवस्था न रहकर आम महिला के जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव बने। महिलाओं की सुरक्षा पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का वाराणसी में दिया गया संदेश इसी व्यापक परिवर्तन की ओर संकेत करता है। अपराधी के लिए कठोरता और महिला के लिए सम्मान, दोनों साथ चलें तो कानून व्यवस्था का अर्थ सार्थक होता है। बेटियों के सपनों पर पहरा नहीं, उन्हें उड़ान देने वाला वातावरण चाहिए। जब प्रदेश की बेटियां बिना भय के पढ़ेंगी, काम करेंगी, आगे बढ़ेंगी और अपने निर्णय स्वयं लेने का आत्मविश्वास हासिल करेंगी, तभी विकास की तस्वीर पूरी होगी। महिला सुरक्षा इसलिए केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक प्रतिबद्धता है। सरकार कानून का भरोसा दे सकती है, लेकिन उस भरोसे को मजबूत करने की जिम्मेदारी परिवार, समाज और प्रत्येक नागरिक की भी है। यही वह रास्ता है जहां बेटी को सुरक्षा के साथ सम्मान और अपने भविष्य को चुनने की स्वतंत्रता मिलती है।

-कांतिलाल मांडोत

इंदौर बाजार भाव

इंदौर। एजेंसी। सोमवार को गणेश चतुर्थी के उपलक्ष्य में सभी प्रमुख बाजारों में कामकाजी मात्रा कम ही रही। बाजार में अवकाश वाला ही माहौल रहा। खाद्य तेलों में बाजार सुर्ख रहे। भाव इस प्रकार रहे-

किराना- शक्कर 4900-5000, खोपरा गोला 350-400, खोपरा बूरा 3200-6800 (15 कि.ग्रा.), जीरा राजस्थान 280-285, ऊंझा हल्का 290-295, बेस्ट 315-325, हल्दी निजामाबाद 230-250, सांगली 310-320, साबूदाना हल्का 5200-5350, मीडियम 5450-5600, बेस्ट 6000-6100, सच्चा मोती 5700, मोरधन 7200-8200, सौंफ मोटी 275-350, बेस्ट 350-400, सौंफ बारिक 180-300, एक्स्ट्रा बोल्ड 350-400, राई दाल 90-95, सरसो दाल 85-95, कालीमिर्च एटम 775-785, गारबल्ड 755-760, मटरदाना 800-900, खसखस अनक्लीन 1150-1250, क्लीन 1300-1350, दालचीनी 250-260, जायफल 725-750, बादान फूल 405-600, शाहजीरा 350-400, तेजपान 90-100, पत्थर फूल 235-425, जावत्री 1675-1750, केसर 200-250, नाग केसर 925-975, सौंठ 325-500, धोली मूसली 1400-1600, लौंग 700-720, बेस्ट 760-790, हींग (वनदेवी 751) 3450, पातच 10 ग्राम 3550, सिंघाड़ा छोटा 100-120, बड़ा 120-130, सिंदूर (25 कि.ग्रा. पैकिंग) 7300, देशी कपूर 850-860, बेस्ट 875-900, पूजा बादाम 115-125, बेस्ट 220-230, पूजा सुपारी 425-450, अरीठा 180-200, हरी इलायची शंकर 3500-3800, मीडि?यम 4000-4200, बेस्ट 4400-4600, एक्ट्रा बेस्ट 4600-4800, पानबार 3000-3500, बड़ी इलायची 1350-1650, तरबूज मगज 500-525, काजू (240) 940-960, काजू (320) 910-920, काजू डब्ल्यू (340) 850-870, काजू एस.डब्ल्यू (300) 850-900, काजू जे.एच. 840-870, टुकड़ी 780-820, बादाम मगज 1065-1150, सिंगापुरी 980-1000, बादाम टांच 700-725, अखरोट 590-850, अखरोट गिरी 1250-1550, जर्दालु 375-500, बेस्ट 550-650, किशमिश कंधारी 450-600, इंडियन 400-450, चारौली 1450-1750, मुनक्का 350-550, अंजीर 850-950, मखाना 900-1000, बेस्ट 1250-1300, खारक एवरेज 75-80, मीडियम 90-130, बेस्ट 140-260, पिस्ता पिशोरी 2900-3100, कंधारी 2500-2700, नमकीन पिस्ता 1000-1150, बेस्ट 1200-1250, गेहूँ आटा 1820, मैदा कट्टा 1850, रवा कट्टा 1880, बेसन 4675 (50 कि.ग्रा.), नारियल (120) 2900-2950, (160) 3200, (200) 3500, (250) 4200,

तेल- सींगदाना 1780-1800, मुम्बई 1800, राजकोट तेलिया 2770, सोया साल्वेंट 1385-1390, सोया रिफाइंड 1445-1450, कपास्या 1610-1620, धूलिया 1620, कड़ी 1630,

रात की धारणा- गुजरात लुज 1725, मुम्बई पाम 1500, मुम्बई सोया 1490,

खली- कपस्या खली (60 कि.ग्रा.) इन्दौर 2690, देवास-उज्जैन 2690, खंडवा-बुरहानपुर 2660, अकोला 3950 (प्रति क्विंटल)

तिलहन- सरसों 8000-8200, रायडा 7000-7200, सोयाबीन 6000, टोली (महुआ बीज) 5700-5900, करंज 4400-4500, अलसी 8500-9000, अरंडी 4500-4700, तिल्ली पुरानी 6500-7000, तिल्ली नई 7200-7500,

दलहन- चना कांटेवाला बेस्ट 6750-6850, एवरेज 6500-6550, विशाल 6550-6650, काबूली चना डॉलर 7000-8300, काबूली चना रशियन 5600-5800, बिटकी 5200-5300, मसूर बेस्ट 6000-6050, एवरेज 5800-5900, मूंग गर्मी बेस्ट नया 7000-7300, मूंग पुराना बोल्ड 7400-7600, मीडियम 7300-7400, तुअर निमाड़ी बेस्ट 7200-7400, एवरेज 6500-6600, हल्की 6400-6500, महाराष्ट्र सफेद 7400-7500, महाराष्ट्र लाल 7700-7900, उड़द बेस्ट 9200-9500, उड़द गर्मी 8800-9200, ग्रेविटी क्लीन 9500-9900, हल्की 4000-6000,

दाल- चना दाल एवरेज 7400-7500, मीडियम 7600-7700, बोल्ड 7900-8100, तुअर दाल सवा नं. 8200-8400, तुअर दाल 7300-7600, तुअर दाल मीडियम 8500-8800, बेस्ट 9900-10200, मसूर दाल 6800-7100, मूंग दाल 8700-8900, मूंग मोगर 10100-10600, उड़द दाल 9900-10300, मोगर 10800-11000,

अनाज- गेहूं मिल क्वालिटी 2500-2550, लोकवन एवरेज 2550-2650, बेस्ट 2750-2800, मालवराज 2600-2650, गेहूँ पूर्णा एवरेज 2400-2550, बेस्ट 2650-2750, मक्का पीली 1975-2000,

चावल- चावल हंसा सफेद 2900-3100, सेला 3500-3700, परमल 3400-3500, दुबराज 4500-5500, राजभोग 7500, काली मुंछ डिनर किंग 9000-9500, बासमती दुबार 8000-8500, मीनी दुबार 8000-8500, मोगरा 5000-7000, तिबार 10500-11800, बासमती (921) 12000-13000, बासमती सेला 7500-9500, पोहा 4500-5100,

मावा- इन्दौर 360, उज्जैन 300, रतलाम 290 रु. प्रति किलो।

इंदौर सर्राफा बाज़ार

इन्दौर। एजेंसी। सोमवार को स्थानीय सराफा बाजार में व्यापार की मात्रा कम ही रही। दोनों ही मूल्यवान धातुओं में बाजार मंदी के रहे। भाव इस प्रकार रहे-

चाँदी (9999) 229500, चाँदी (99) 229300, टंच 228800, सिक्का 2600, सोना 10 ग्राम 148600,

कैंसर से आंखों की दवा तक, ल्यूपिन का बड़ा दांव!

नई दिल्ली। एजेंसी। फार्मा क्षेत्र की अग्रणी कंपनी ल्यूपिन बायोसिमिलर खंड में अपनी स्थिति मजबूत करने और वैश्विक बाजारों में अपना विस्तार करने की तैयारी में है। कंपनी का लक्ष्य अगले पांच साल के भीतर बायोसिमिलर उत्पादों से लगभग 50 करोड़ डॉलर (लगभग 4,150 करोड़ रुपए) का कुल कारोबार हासिल करना है। यह जानकारी कंपनी के कार्यकारी निदेशक ने दी। ल्यूपिन ने अमेरिका में कैंसर की दवा पेगफिल्ग्रास्टिम का बायोसिमिलर दिसंबर 2025 तक लॉन्च करने के लिए यूएसएफडीए से पहली मंजूरी प्राप्त कर ली है। आंखों की दवा रैनिबिजुमैब को भी अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे प्रमुख बाजारों में पेश किया जाएगा। स्वामीनाथन ने बताया कि ल्यूपिन भारत में कैंसर की दवाओं निवोलुमैब, डिनुजुमैब और पर्टुजुमैब के बायोसिमिलर लाने की योजना बना रही है। कंपनी पहले से ही यूरोप और जापान में साझेदारी के माध्यम से ऑटोइम्यून संबंधी बीमारी की दवा एटैनरसेप्ट के बायोसिमिलर जैसे उत्पाद बेच रही है। इस विस्तार के लिए, ल्यूपिन ने अब तक बायोसिमिलर उत्पादन क्षमता में लगभग 500 करोड़ रुपये का निवेश किया है और इसे बढ़ाकर लगभग 700 करोड़ रुपये करने की योजना है।

ब्रिक्स ने एआई गवर्नेंस और इनोवेशन में भारत की भूमिका सराही

नई दिल्ली (ईएमएस)। ब्रिक्स देशों के नेताओं ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) गवर्नेंस पर एक संयुक्त बयान के क्रियान्वयन का संकल्प लिया है। अपनी घोषणा में, समूह ने एक नए स्टार्टअप इनक्यूबेटर नेटवर्क का स्वागत किया और एक इनोवेशन फंड का प्रस्ताव रखा। यह कदम वैश्विक एआई और उद्यम पारिस्थितिकी तंत्र में ब्रिक्स को एक मजबूत विकल्प के तौर पर स्थापित करने तथा भारत की अहम भूमिका को रेखांकित करता है। घोषणापत्र में फरवरी 2026 में भारत द्वारा एआई इम्पैक्ट समिट की मेजबानी, ब्रिक्स स्टार्टअप इनोवेशन फंड और भारत के गिफ्ट सिटी फाइनेंशियल हब के लिए प्रस्तावित रिस्क लैब का प्रमुखता से उल्लेख है। ये पहल ब्रिक्स के टेक्नॉलिजी एजेंडा को आकार देने में भारत की अहम भूमिका को दर्शाती हैं, जो समूह को पश्चिमी देशों के मुकाबले इनोवेशन में एक मजबूत विकल्प के तौर पर तैयार कर रहा है। भारत 18वें शिखर सम्मेलन के माध्यम से खुद को समूह की तकनीकी महत्वाकांक्षाओं के केंद्र के तौर पर स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। समूह मानता है कि एआई सभी के लिए आर्थिक और टिकाऊ विकास का बड़ा अवसर प्रदान करता है, और सदस्य देश इसके वैश्विक गवर्नेंस पर संयुक्त बयान लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। नेताओं ने भारत को फरवरी 2026 में एआई इम्पैक्ट समिट की मेज़बानी के लिए सराहा। उद्योग के विशेषज्ञों के अनुसार, ब्रिक्स का एआई तक पहुंच, सुरक्षा और जिम्मेदार गवर्नेंस पर जोर सही समय पर उठाया गया कदम है, जिसमें वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में उत्पादकता और बड़े बदलाव लाने की अपार क्षमता है।

एआई क्रांति-अपरिवर्तनीय बदलाव और सुरक्षा चुनौतियां

नई दिल्ली। एजेंसी। टीमलीज एडटेक के सीईओ शांतनु रूज ने कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित बदलाव को अपरिवर्तनीय बताया है, जिसकी तुलना उन्होंने जलवायु परिवर्तन से की। उन्होंने स्पष्ट किया कि बदलते परिदृश्य में केवल एआई कौशल ही सफलता की गारंटी नहीं देगा, बल्कि डोमेन विशेषज्ञता और एआई के प्रभावी उपयोग की क्षमता महत्वपूर्ण होगी। इस बीच, एआई के विनियमन, लागत और सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंताएं भी दुनियाभर में उभर रही हैं। शांतनु रूज ने कहा कि एआई की मौजूदा प्रक्रिया अब अपरिवर्तनीय है। उन्होंने इस बदलाव को हल्की-फुल्की बारिश नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन जैसा गहरा प्रभाव बताया है, जिससे दुनिया कभी एआई-पूर्व दौर में वापस नहीं लौटेगी। रूज के अनुसार, भविष्य में केवल एआई कौशल होने से व्यक्तियों को बढ़त नहीं मिलेगी। इसके बजाय, क्षेत्र विशेष की जानकारी, बाजार एवं ग्राहकों की समझ रखने वाले और एआई का उपयोग कर कारोबारी फायदे बढ़ाने वाले पेशेवरों को अधिक तरजीह मिलेगी। उन्होंने कहा कि नियमन और उपयोग की लागत अंततः तय करेगी कि एआई कितनी तेजी और गहराई से कारोबार तथा रोजमर्रा की जिंदगी में अपनी पैठ बनाएगा। हालाँकि, एआई की तीव्र प्रगति ने सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंताएं भी पैदा की हैं। एंथ्रोपिक के सीईओ डारियो अमोदेई ने एआई की प्रगति को धीमा करने और सुरक्षा उपायों को पुख्ता करने के लिए स्वतंत्र मूल्यांकन, प्रमुख एआई कंपनियों के बीच समन्वय तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग का आह्वान किया है। वहीं, ओपनएआई के सैम ऑल्टमैन ने एआई से मानव जाति के विलुप्त होने के 10 प्रतिशत जोखिम वाले परिदृश्य को अस्वीकार्य माना है। एआई एजेंटों के नियंत्रण से बाहर होने, बाहरी प्रणालियों को हैक करने और सुरक्षा शोधकर्ताओं के नौकरी छोड़ने जैसे मामले वैश्विक स्तर पर चिंता बढ़ा रहे हैं।

ब्रिक्स अनाज एक्सचेंज, यूरोपीय-अमेरिकी दबदबे को चुनौती देने की तैयारी

नई दिल्ली। एजेंसी। ब्रिक्स देशों ने वैश्विक अनाज व्यापार में यूरोप और अमेरिका की बड़ी कंपनियों के दशकों पुराने वर्चस्व को तोड़ने के लिए एक अनाज एक्सचेंज बनाने के प्रस्ताव को फिर से मंजूरी दी है। यह कदम विकासशील देशों के लिए एक गेम चेंजर साबित हो सकता है, हालांकि इसके संचालन और क्रियान्वयन में कई गंभीर चुनौतियां आने की संभावना है। ब्रिक्स समूह द्वारा प्रस्तावित यह अनाज एक्सचेंज, जिसका विचार पहली बार 2023 में एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में रखा गया था, को रूस जैसे दुनिया के सबसे बड़े अनाज उत्पादक देशों का मजबूत समर्थन प्राप्त है। हाल ही में नई दिल्ली घोषणापत्र में न केवल इस प्रस्ताव को दोहराया गया, बल्कि भविष्य में इसमें अन्य कृषि उत्पादों और जिंसों को भी शामिल करने की बात कही गई है। ब्रिक्स देशों का दुनिया के कुल अनाज उत्पादन में लगभग 44 फीसदी और कुल खपत में 25 फीसदी से अधिक हिस्सा है। वहीं, विशेषज्ञों के अनुसार वैश्विक अनाज व्यापार का 70 से 90 प्रतिशत हिस्सा चुनिंदा यूरोपीय और अमेरिकी ट्रेडिंग कंपनियों के नियंत्रण में है। इनमें से लगभग आधी कंपनियों के कार्यालय तो केवल यूरोप के एक ही शहर में हैं, जो बाजार पर उनके एकाधिकार को दर्शाता है। काउंसिल फॉर सोशल डेवलपमेंट के एक अ?धिकारी ने इस पहल को समझदारी भरा कदम बताया है। उनके अनुसार, यह विकासशील देशों को कमोडिटी ट्रेड की उन पुरानी शर्तों से उबरने में मदद करेगा, जहाँ बाजार पर नियंत्रण न होने से नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि यह विचार अभी शुरुआती चरण में है और इसे लेकर और स्पष्टता की आवश्यकता होगी, लेकिन यह ग्लोबल साउथ के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ब्रिक्स को भोजन उपलब्ध कराने में एक प्रमुख भूमिका निभाने का अवसर देगा। उन्होंने जोर दिया कि यह एक्सचेंज यूरोप और अमेरिका-आधारित फर्मों के वर्चस्व को चुनौती देगा और वैश्विक बाजार में मूल्य निर्धारण में विकासशील देशों की भागीदारी बढ़ाएगा।

आज का राशिफल

मेष- आज का दिन आत्ममंथन और खुद को बेहतर बनाने का है। यदि लंबे समय से कोई नई कला, तकनीक या कौशल सीखने की इच्छा थी, तो आज उससे शुरुआत करना बेहद फायदेमंद रहेगा। दूर स्थान या विदेश से करियर से जुड़ी कोई अच्छी खबर मिल सकती है, जो आपके भविष्य की दिशा बदल दे। कार्यस्थल पर आपकी मेहनत और लगन की सराहना होगी।

वृषभ- आज आर्थिक मामलों में आपके लिए शानदार संभावनाएं बन रही हैं। लंबे समय से अटका हुआ धन वापस मिल सकता है और अचानक आर्थिक लाभ के रास्ते खुल सकते हैं। करियर में आ रही रुकावटें दूर होंगी तथा वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। किसी पुराने काम को मित्रों की मदद से पूरा करने में सफलता मिल सकती है। व्यापार में मुनाफे के नए स्रोत खुलेंगे और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

मिथुन- आज का दिन आपके लिए मिले-जुले परिणाम लेकर आएगा। करियर में आगे बढ़ने के नए रास्ते खुल सकते हैं, लेकिन इसके लिए आलस्य छोड़कर पूरी मेहनत करनी होगी। अधूरे काम तेजी से पूरे होंगे। प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी और पार्टनर के साथ आपका रिश्ता और मजबूत होगा। किसी जरूरी काम से अचानक यात्रा करनी पड़ सकती है, जो भविष्य में आपके लिए लाभदायक साबित हो सकती है।

कर्क- आज आपकी योजनाओं को सफलता मिलने के मजबूत संकेत हैं। जिस काम को लेकर आप काफी समय से प्रयास कर रहे थे, वह अब आगे बढ़ सकता है। कार्यस्थल पर भाग्य का साथ मिलेगा और आपकी कार्यक्षमता व उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार होगा। नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को अच्छे अवसर मिल सकते हैं। व्यापार की स्थिति भी पहले से मजबूत होगी।

सिंह- आज पारिवारिक जीवन में लंबे समय से चली आ रही खटास और तनाव कम होने के संकेत हैं। घर का माहौल पहले से अधिक शांत और सुखद रहेगा। संतान की ओर से कोई बड़ी खुशखबरी मिल सकती है। दूर रहने वाले मित्र या रिश्तेदार भी कोई अच्छी खबर दे सकते हैं।

कन्या- आज आपको अपने पुराने परिश्रम का सकारात्मक परिणाम मिल सकता है। करियर में उन्नति और आगे बढ़ने के नए रास्ते खुलेंगे। किसी महत्वपूर्ण निर्णय में बाहरी सलाह से अधिक अपनी समझ और अंतर्ज्ञान पर भरोसा करना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। हालांकि भाई-बहनों के साथ किसी बात को लेकर मतभेद हो सकते हैं, इसलिए शांत रहकर बात को संभालें।

तुला- आज अचानक आर्थिक लाभ मिलने से आपकी कई चिंताएं दूर हो सकती हैं। व्यापार से जुड़े अटके हुए काम आसानी से पूरे होंगे और कोई नई डील भी आपके पक्ष में आ सकती है। आर्थिक स्थिति मजबूत करने का अवसर मिलेगा, लेकिन अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना बेहद जरूरी है। आज आपकी संतुलित और समझदारी भरी बात ही आपको सम्मान दिलाएगी।

वृश्चिक- आज कुछ नया और रचनात्मक करने का उत्साह रहेगा। व्यापार या कार्यक्षेत्र में नई योजनाएं बनेंगी और उन्हें आगे बढ़ाने में भाग्य का अच्छा साथ मिल सकता है। किसी उलझन में हैं तो अनुभवी व्यक्ति, गुरु या सच्चे शुभचिंतक की सलाह लेना उपयोगी रहेगा। व्यापार के सिलसिले में की गई यात्रा विशेष लाभ दे सकती है। हालांकि जिद और अड़ियल रवैया आपके काम में रुकावट डाल सकता है।

धनु- आज मन को लंबे समय से परेशान कर रही उथल-पुथल और चिंता काफी हद तक दूर हो सकती है। मानसिक शांति महसूस होगी और दूर स्थान से कोई अच्छी खबर मिलने की संभावना है। रिश्तेदारों और पुराने दोस्तों के साथ संबंध बेहतर होंगे तथा पुरानी कड़वाहट कम होगी। हालांकि काम के साथ परिवार के लिए भी पर्याप्त समय निकालना जरूरी है।

मकर- आज आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिल सकता है। मानसिक तनाव कम होगा और व्यापार में लाभ के अच्छे अवसर सामने आएंगे। पुराने मित्रों के साथ किसी महत्वपूर्ण विषय पर लंबी बातचीत हो सकती है, जिससे भविष्य के लिए नए रास्ते खुलेंगे। हालांकि आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने के लिए आपको अतिरिक्त मेहनत और ऊर्जा लगानी होगी।

कुंभ- आज आपके मान-सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। समाज और कार्यक्षेत्र में आपके काम की सराहना होगी, जिससे आपका प्रभाव बढ़ेगा। जमीन-जायदाद या प्रॉपर्टी से जुड़े मामलों में बड़ा लाभ मिलने के संकेत हैं। मानसिक तनाव कम होगा और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। व्यापार के पुराने और लंबित काम दोबारा गति पकड़ सकते हैं। कार्यक्षेत्र में पूरी एकाग्रता बनाए रखें और सहकर्मियों की गतिविधियों पर भी नजर रखें।

मीन- आज आपके भीतर सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह की भरपूर मात्रा रहेगी। रुके हुए और अधूरे कामों को तेजी से पूरा करने के लिए समय अनुकूल है। मन प्रसन्न रहेगा और सकारात्मक सोच के साथ किए गए प्रयासों में सफलता मिलने की संभावना बढ़ेगी। प्रेम संबंधों में नजदीकियां बढ़ेंगी और पार्टनर के साथ रिश्ता मधुर होगा। व्यापार में मनचाहा लाभ पाने के लिए मेहनत को दोगुना करना पड़ेगा। करियर में प्रतिस्पर्धा और मेहनत का दबाव रहेगा, इसलिए पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़ें।

शब्दजाल - 8391

शब्द जाल में नेशनल अवार्ड विजेता 10 हिंदी फिल्मों के नाम ढूंढिए, दिए गए नाम ऊपर से नीचे एवं तिरछे भी हो सकते हैं।

स	म	र	यु	दा	प	र	तू	ग	झ	दो	
ज	अ	ल	प	मु	रिं	शो	ना	दि	श	आं	
अं	इ	नु	म	ल	दा	ल	ध	र	ला	खें	
ती	कु	दा	रा	धा	ब	क	प	रि	श	बा	
स	ति	श	न	धा	क	ब	ठै	ग	वी	र	
री	रं	ल	प	व	लि	र्त	ऐ	ती	प	ह	
क	जा	ल	श	जा	प	म	क्रां	की	या	हा	
स	वा	अ	र्जा	त	क	छ	प्प	ग	श	थ	
म	स	मि	तें	व	न	ज	मृ	शा	जू	द	
द	र	ल	श	ह	र	औ	र	स	प	ना	
थो	झ	सा	रु	बा	घ	ब	हा	दु	र	क	

मिर्जा गालिब, दो आंखें बारह हाथ, अनुराधा, शहर और सपना, तीसरी कसम, मृगया, शोध, दामुल, बाघ बहादुर, समर

शब्दजाल - 8390 का हल

फिल्म वर्ग पहेली- 7325

बायें से दायें:-

१. शाहिद कपूर, अमृता राव की फिल्म-३
३. शाहिद कपूर और अमृता राव की जोड़ी वाली पहली फिल्म कौन सी थी-२,२
६. सनी, प्रीति की 'तुझे देखा तो दिल मेरा डोल गया' गीत वाली फिल्म-२
७. 'वो लड़की जो सबसे अलग है' गीत वाली फिल्म-४
९. शत्रुघ्न सिन्हा, शर्मिला की फिल्म-३
११. 'तू प्यार का सागर है तेरी' गीत वाली बलराज, नूतन की फिल्म-२
१२. अजय, जॉन, तारा, ईशा की फिल्म-२
१३. 'इससे पहले कि याद' गीत वाली राजेश खन्ना, श्रीदेवी की फिल्म-४
१६. भारतभूषण, नूतन की फिल्म-३
१९. फिल्म 'इना मीना डीका' में जूही का नाम क्या है-२
२०. मिथुन, अतुल अग्निहोत्री, पूजा भट्ट की 'तेरे बिन मैं कुछ' गीतवाली फिल्म-३
२१. 'बाबुल का ये घर बहना' गीत वाली फिल्म-२
२२. दिलीपकुमार, निम्मी की 'खेलो रंग हमारे संग' गीत वाली फिल्म-२
२४. 'ऐ बादल झूम के चल' गीत वाली नवीन निश्चल, आशा की फिल्म-३
२५. सनी, अनिल कपूर, श्रीदेवी, मीनाक्षी की फिल्म-३
२७. 'मैं नाचूँ बिन पायल' गीत वाली ऋतिक, करिश्मा, नेहा की फिल्म-२
२८. विनोद मेहरा, रीना राय की 'दो परदेसी अनजाने' गीतवाली फिल्म-३
३०. 'अँखियां ये अँखियां' गीत वाली दिलीप कुमार, रेखा की फिल्म-२
३१. दिलीपकुमार, मीना की फिल्म-३
३३. अमिताभ-जीनत अमान की हिट फिल्म की शाहरुख, प्रियंका स्टारर रीमेक-२
३४. 'ये दौलत भी लेलो' गीतवाली कुमार गौरव, अनामिका की फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. 'लगे रहो मुन्ना भाई' में संजयदत्त के साथ नायिका कौन है-२,३
२. सैफ अली खान, काजोल की फिल्म-३
३. 'देखो देखो जानम' गीत वाली फिल्म-२
४. दिलीपकुमार, संजयदत्त, पद्मिनी की 'हाथों की चंद' गीत वाली फिल्म-३
५. अजय देवगन, आयशाटकिया की फिल्म-३
८. 'मेंहदी लाया सावन' गीत वाली फिल्म-३
१०. 'इश्क पे मत इल्जाम लगाना' गीत वाली ऋषिकपूर, फराह की फिल्म-३
१४. अजय देवगन अभिषेक, बिपाशा की 'तेरे संग एक' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'विक्टोरिया नं. २०३' में प्राण का नाम-२
१६. देवानंद, मधुबाला की 'सावन के महीने में एक' गीत वाली फिल्म-३
१७. 'रेशम जैसा रंग देखो' गीत वाली गोविंदा, सोनम की फिल्म-२
१८. राजेंद्रकुमार, कामिनी की फिल्म-३
२१. 'डाकिया डेक गली पर' गीत वाली मिथुन, स्वाति, मानवी की फिल्म-२
२२. बॉबी, करिश्मा की 'तुम क्या जानो दिल कहता' गीत वाली फिल्म-३
२३. 'घातक' में सनी का नाम क्या था-२
२४. अजय देवगन, जूही चावला की 'तुझे प्यार करते करते' गीत वाली फिल्म-४
२५. 'हम तो दिल से' गीत वाली फिल्म-२
२६. विनोद खन्ना, डिम्पल की फिल्म-३
२९. 'धीमी धीमी सी' गीत वाली फिल्म-२
३२. 'ओ डार्लिंग ये है इंडिया' में 'मिस इंडिया' कौन बनी है-२

फिल्म वर्ग पहेली- 7324

दैनिक पंचांग

15 सितम्बर को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

मंगलवार 2026 वर्ष का 258 वा दिन
दिशाशूल उत्तर ऋतु शरद।
विक्रम संवत् 2083 शक संवत् 1948
मास भाद्रपद पक्ष शुक्ल
तिथि चतुर्थी 07.45 बजे को समाप्त।
नक्षत्र स्वाती 15.21 बजे को समाप्त।
योग इन्द्र 12.20 बजे को समाप्त।
करण विष्टि 07.45 बजे तदन्तर बव 20.18 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 03.9 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 03° 06'
सूर्य दक्षिणायन
कलि अहर्गण 1872833
जुलियन दिन 2461298.5
कलियुग संवत् 5128
कल्पारंभ संवत् 1972949128
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885128
वीरनिर्वाण संवत् 2552
हिजरी सन् 1448
महीना रबि उस्सानी तारीख 03
विशेष ऋषि पंचमी, डॉ.विश्वेश्वरैया जयंती, अभियंता दिवस।

दिन का चौघड़िया

रोग	05.53 से	07.22 बजे तक
उद्वेग	07.22 से	08.15 बजे तक
चर	08.15 से	10.19 बजे तक
लाभ	10.19 से	11.48 बजे तक
अमृत	11.48 से	01.16 बजे तक
काल	01.16 से	02.45 बजे तक
शुभ	02.45 से	04.13 बजे तक
रोग	04.13 से	05.42 बजे तक

रात का चौघड़िया

काल	05.42 से	07.13 बजे तक
लाभ	07.13 से	08.45 बजे तक
उद्वेग	08.45 से	10.16 बजे तक
शुभ	10.16 से	11.48 बजे तक
अमृत	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.19 से	02.51 बजे तक
रोग	02.51 से	04.22 बजे तक
काल	04.22 से	05.54 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, मध्यम चर, अशुभ उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

प्रसंगतः बड़ा कौन

एक बार सम्राट अशोक अपने विश्वस्त मंत्री ध्रामात्य के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक संत को आते देख वह घोड़े से नीचे उतरे और उन्होंने संत को दंडवत प्रणाम किया। यह बात ध्रामात्य को अच्छी नहीं लगी। संत के जाने के बाद ध्रामात्य ने अशोक से पूछा, 'राजन्, मेरी समझ में नहीं आया कि इतने बड़े सम्राट होकर आपने एक साधारण साधु को दंडवत प्रणाम क्यों किया।' उस समय अशोक ने कोई उत्तर नहीं दिया। दो दिनों के बाद उसने कई जानवरों के मुखौटों के साथ एक साधु और एक राजा का सुंदर मुखौटा ध्रामात्य को देते हुए कहा, 'गांव में जाकर इन मुखौटों को बेच दीजिए। मैं जानना चाहता हूं कि प्रजा किसे ज्यादा पसंद करती है।' ध्रामात्य उन मुखौटों को बेचने के लिए गांव में गया। साधु का मुखौटा सबसे पहले बिक गया। उसके बाद सभी जानवरों के मुखौटे भी बिक गए। मगर राजा का मुखौटा किसी ने नहीं खरीदा। ध्रामात्य उसे लेकर लौट आया। अशोक ने उसे फिर से जाने को कहा। और यह भी निर्देश दिया कि यह मुखौटा किसी को मुफ्त दे दे। ध्रामात्य दोबारा गया मगर गांव वालों ने मुखौटा लेने से इनकार कर दिया। बोले, 'इस कचरे को लेकर हम क्या करेंगे।' ध्रामात्य फिर लौट आया और सम्राट को गांव वालों की बात बताई। अशोक ने कहा, 'अब तो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा। संत हमेशा पूजनीय होते हैं क्योंकि वे मोह माया से दूर रह कर पूरे समाज के हित की बात सोचते हैं। राजा का महत्व तात्कालिक होता है पर संत की कीर्ति हमेशा बनी रहती है।'

सूडोकू नवताल- 7634

★☆☆☆☆ सरल

	9				6			
4	7				8	3		9
		8	7	3		1	2	
	8	9		5	1		7	6
5	1		8	7		4	9	
	2	4		6	5	7		
7		1	3				5	8
			1				4	

सूडोकू नवताल -7633 का हल

1	9	3	7	5	4	2	6	8
8	4	2	1	6	3	9	7	5
5	7	6	8	2	9	3	1	4
4	1	5	6	3	2	8	9	7
7	2	9	4	8	1	6	5	3
3	6	8	5	9	7	1	4	2
2	5	1	9	4	8	7	3	6
9	8	4	3	7	6	5	2	1
6	3	7	2	1	5	4	8	9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
■ पहेली का केवल एक ही हल है।

शब्द पहेली - 8849

बाएँ से दाएँ

1.दांपत्य संबंध विच्छेद-3
3.रहस्य का ज्ञाता-4
6.खुशबू,सुगंध-3
7.सौ,सैकड़ा,शतक-2
8.दुलारा,लाड़ला-2
10.नाम रखना-5
12.दाम,मूल्य,दर-3
15.अग्नि,आग-3
17.सम्मान देना -2,3
20.जन्नत,अप्सरा-2
22.दाम,कीमत-2
23.स्थान-3
24.अचरज भरा कार्य-4
25.गागर, घड़ा-3

ऊपर से नीचे

2.न्यूनता,कमी-5
3.अटक-अटक कर बोलने वाला-3
4.आवश्यकता-4
5.राजी करना,मान मनुहार करना-3
7.वहम,संदेह-2
9.भाग्यशाली(अंग्रजी-2)
11.मैला,दागदार-3
13.धोखेबाज,कपटी-3
14.मन मोहने वाला-5
15.अशांति फैलाने वाला, उपद्रवी-4
16.रक्त,खून-2
18.आनेवाला दिन-2
19.नृत्य करना-3
21.चांदी-3

शब्द पहेली -8848 का हल

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

घर-घर विराजे गणपति, पंडालों में गूंजे जयकारे

लांजी में शुरू हुआ 10 दिवसीय गणेश उत्सव

पद्मेश न्यूज। लांजी। प्रथम पूज्य भगवान श्रीगणेश के जयकारों से सोमवार को लांजी नगर और आसपास का क्षेत्र भक्तिमय हो उठा। भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि पर 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी का पर्व श्रद्धा, उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। सुबह से ही घरों और सार्वजनिक गणेश पंडालों में गणपति स्थापना की तैयारियां चलती रहीं। शुभ मुहूर्त में विधि-विधान और मंत्रोच्चार के साथ भगवान श्रीगणेश की प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा कर पूजा-अर्चना की गई। इसके साथ ही नगर में 10 दिवसीय गणेश उत्सव का शुभारंभ हो गया।

शुभ मुहूर्त में हुई गणपति स्थापना

गणेश चतुर्थी के अवसर पर नगर के विभिन्न वार्डों, गली-मोहल्लों और चौक-चौराहों में बनाए गए पंडालों में आकर्षक प्रतिमाएं स्थापित की गईं। पंडितों और पुरोहितों की मौजूदगी में गणपति पूजन, प्राण-प्रतिष्ठा, आरती और भोग अर्पित किया गया। वहीं घरों में भी परिवारों ने भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित कर सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। गणेश पंडालों को फूलों, रंग-बिरंगी रोशनी और आकर्षक सजावट से सजाया गया है। कई स्थानों पर गणेश प्रतिमाओं के साथ विशेष थीम आधारित सजावट भी की गई है। शाम होते ही रोशनी से जगमगाते पंडाल लोगों के आकर्षण का केंद्र बने रहे।

10 दिनों तक धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों की धूम

गणेश उत्सव के आगामी दिनों में नगर के अलग-अलग पंडालों में धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। सुबह-शाम भगवान श्रीगणेश की आरती, पूजा और भोग के साथ भजन-कीर्तन, भक्ति संध्या, नृत्य, नाटक सहित अन्य कार्यक्रम होंगे। परिवारों के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालु पंडालों में पहुंचकर भगवान गणेश के दर्शन करेंगे। गणेश उत्सव को लेकर युवाओं और गणेश उत्सव समितियों में भी खासा उत्साह नजर आ रहा है। पंडालों की व्यवस्था, सजावट और धार्मिक आयोजनों को लेकर समितियों द्वारा तैयारियां की गई हैं। नगर के प्रमुख चौक-चौराहों पर स्थापित गणेश पंडाल आने वाले दिनों में श्रद्धालुओं की आवाजाही से गुलजार रहेंगे।

सामाजिक एकता का संदेश भी देता है उत्सव

गणेश उत्सव केवल धार्मिक आस्था का पर्व ही नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और आपसी भाईचारे का भी अवसर है। सार्वजनिक पंडालों में अलग-अलग वर्गों के लोग मिलकर आयोजन में भाग लेते हैं। पूजा-अर्चना के साथ सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को एकजुट करने का प्रयास भी किया जाता है। कुछ पंडालों में सामाजिक जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े संदेशों को भी सजावट के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

अनंत चतुर्दशी पर होगा विसर्जन

लांजी क्षेत्र में गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन अनंत चतुर्दशी के अवसर पर किया जाएगा। दस दिवसीय गणेश उत्सव के समापन पर गणेश समितियां और श्रद्धालु गाजे-बाजे व जयकारों के साथ प्रतिमाओं को विसर्जन स्थल तक ले जाएंगे। इसके साथ ही श्रद्धा और उत्साह से शुरू हुआ गणेश उत्सव अगले 10 दिनों तक नगर में भक्ति का माहौल बनाए रखेगा।

हरितालिका तीजा पर सुहागिनों ने रखा निर्जला व्रत

बालू से गौर निकालकर किया गौरी-शंकर का पूजन

पद्मेश न्यूज। लांजी। पति की दीर्घायु, सुख-समृद्धि और अखंड सौभाग्य की कामना को लेकर सुहागिन महिलाओं द्वारा रखा जाने वाला हरितालिका तीजा व्रत सोमवार, 14 सितंबर को नगर सहित पूरे क्षेत्र में आस्था, श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया जा रहा है। महिलाओं ने रात-दिन का निर्जला व्रत रखकर भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना की।

सुबह से ही नगर के नदी, नालों, तालाबों और कुओं के आसपास महिलाओं की भीड़ नजर आई, जहां पारंपरिक रीति-रिवाज के अनुसार बालू से गौरी-शंकर की प्रतिमा बनाकर 'गौर' निकाला गया। नगर में महिलाओं ने गणेशी तालाब के अलावा काशी नाला, कॉलेज रोड, कोटेश्वर मंदिर के समीप, राजा-रानी तालाब सहित विभिन्न तालाबों और कुओं पर पहुंचकर गौर निकाला। पूजा-अर्चना के बाद महिलाएं गौर को अपने घर लेकर पहुंचीं, जहां चौरंग सजाकर विधि-विधान से पूजन के लिए स्थापित किया गया। गौर के ऊपर फुलेरा बांधकर उसे फूलों से आकर्षक रूप से सजाया गया।

शाम को हुई विशेष पूजा, कथा का किया श्रवण

शाम के समय महिलाओं ने गौर के समक्ष विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। भगवान शिव और माता पार्वती को फल, फूल, बेलपत्र सहित पूजन सामग्री अर्पित की गई। घरों में गुजिया सहित विभिन्न प्रकार के पकवान तैयार कर भोग लगाया गया। इसके बाद पंडित अथवा महिलाओं द्वारा हरितालिका तीज व्रत की कथा का वाचन किया गया। महिलाओं ने श्रद्धापूर्वक कथा का श्रवण कर अपने पति की लंबी आयु, परिवार की सुख-शांति और अखंड सौभाग्य की कामना की। पूजन के दौरान महिलाओं ने एक-दूसरे को हल्दी-कुमकुम लगाकर सुहाग की मंगलकामनाएं दीं। हरितालिका तीजा के चलते घरों में पूरे दिन धार्मिक वातावरण बना रहा और महिलाएं पारंपरिक श्रृंगार के साथ व्रत-पूजन में जुटी रहीं।

आज होगा गौर का विसर्जन

हरितालिका तीजा व्रत का पारंपरिक समापन मंगलवार, 15 सितंबर को किया जाएगा। प्रात: महिलाएं विधि-विधान से गौर का विसर्जन करेंगी। इसके बाद एक-दूसरे को भुजलियां और प्रसादी भेंट कर हल्दी-कुमकुम लगाया जाएगा तथा सदा सुहागन रहने की मंगलकामना की जाएगी। गौर विसर्जन के साथ ही महिलाओं के निर्जला व्रत का पारंपरिक रूप से समापन होगा।

खैरलांजी में श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया हरितालिका तीज पर्व

तीजा के गौर लेकर तालाब घाट पहुंचीं महिलाएं

पद्मेश न्यूज। वारासिवनी। खैरलांजी सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में हरितालिका तीज पर्व श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ मनाया गया। पर्व को लेकर महिलाओं में सुबह से ही खासा उत्साह देखने को मिला। सुहागिन महिलाओं के साथ बड़ी संख्या में कुंवारी बहनों ने भी विधि विधान से भगवान शिव एवं माता पार्वती की पूजा अर्चना कर व्रत रखा। हरितालिका तीज के अवसर पर सुबह से ही महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में सज संवरकर अपने अपने घरों से तीजा के गौर लेकर तालाब घाट पहुंचीं। तालाब के घाट पर महिलाओं का समूह एकत्रित हुआ जहां गौर की स्थापना कर विधि विधान एवं पारंपरिक रीति रिवाजों के अनुसार पूजा अर्चना की गई। इस दौरान महिलाओं ने भगवान शिव पार्वती की आराधना करते हुए अपने पति की दीर्घायु, अखंड सौभाग्य परिवार की सुख समृद्धि एवं सुख शांति की कामना की। हरितालिका तीज का पर्व सुहागिन महिलाओं के साथ कुंवारी बहनों के लिए भी विशेष महत्व रखता है। मान्यता के अनुसार कुंवारी कन्याएं अच्छे एवं मनचाहे वर की प्राप्ति की कामना से यह व्रत रखती हैं। इसी आस्था के चलते नगर में कई कुंवारी बहनों ने भी पूरे श्रद्धाभाव से व्रत रखकर भगवान शिव.पार्वती की पूजा की। पर्व के दौरान तालाब घाट एवं आसपास के क्षेत्रों में दिन भर धार्मिक माहौल बना रहा। महिलाओं ने पारंपरिक तरीके से पूजा अर्चना कर तीज पर्व की रस्में पूरी कीं। कई स्थानों पर महिलाओं ने एकत्रित होकर तीज पर्व से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं एवं परंपराओं का पालन किया। पूजा के बाद महिलाओं ने एक दूसरे को हरितालिका तीज की शुभकामनाएं दीं और सभी के सुखी एवं समृद्ध जीवन की मंगल कामना की। हरितालिका तीज पर्व ने एक बार फिर खैरलांजी की पारंपरिक संस्कृति, धार्मिक आस्था और महिलाओं की श्रद्धा को जीवंत कर दिया। सुबह से लेकर दिनभर महिलाओं में पर्व को लेकर उत्साह और उमंग देखने को मिला।

त्रिस्तरीय पंचायत उप निर्वाचन के लिए 29 सितंबर को मतदान

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत उप निर्वाचन 2026 (पूर्वाद्ध) की घोषणा 31 अगस्त को की गई है। जिले में पंचायतों के रिक्त पदों के लिए निर्वाचन प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। रिक्त पदों के लिए 8 सितंबर से नामांकन की प्रक्रिया जारी है, जिसकी अंतिम तिथि 15 सितंबर निर्धारित की गई है। नाम वापसी 16 सितंबर को होगी। जिले में कुल पांच सरपंच पद तथा 46 पंच पद रिक्त हैं, जिनके लिए 29 सितंबर 2026 को मतदान कराया जाएगा। जिले में जनपद पंचायत खैरलांजी के क्षेत्र क्रमांक-19 में जनपद पंचायत सदस्य पद के लिए भी उप निर्वाचन होना है। इसके अलावा जनपद पंचायत बालाघाट की ग्राम पंचायत भरवेली, जनपद पंचायत लांजी की ग्राम पंचायत परसोडी, जनपद पंचायत लालबर्रा की ग्राम पंचायत खुरपुडी, जनपद पंचायत वारासिवनी की ग्राम पंचायत ऐकोडी तथा जनपद पंचायत परसवाड़ा की ग्राम पंचायत झांगुल में सरपंच पद रिक्त हैं। इन पदों के साथ जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों में रिक्त 46 पंच पदों के लिए भी निर्वाचन होगा।

खैरलांजी क्षेत्र क्रमांक-19 के लिए प्रेक्षक नियुक्त

राज्य निर्वाचन आयोग ने जनपद पंचायत खैरलांजी के क्षेत्र क्रमांक-19 में जनपद पंचायत सदस्य पद के निर्वाचन के पर्यवेक्षण के लिए सेवानिवृत्त अपर कलेक्टर राजेन्द्र कुमार राय को प्रेक्षक नियुक्त किया है। प्रेक्षक का वर्तमान निवास मायल विश्रामगृह, भरवेली में है। क्षेत्र क्रमांक-19 के निर्वाचन से संबंधित शिकायतें प्रेक्षक द्वारा लिखित अथवा मौखिक रूप से प्राप्त की जाएंगी। इसके लिए प्रेक्षक 14 से 18 सितंबर 2026 तथा 28 सितंबर से 3 अक्टूबर 2026 तक प्रतिदिन प्रात: 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक तहसील कार्यालय खैरलांजी में उपलब्ध रहेंगे। निर्वाचन आयोग ने संबंधित मतदाताओं एवं अभ्यर्थियों से निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान किसी भी प्रकार की शिकायत या आपत्ति होने पर निर्धारित समय में प्रेक्षक के समक्ष प्रस्तुत करने की अपील की है।

60 फिट ऊंचे पंडाल में साकार होगी प्रेम मंदिर की प्रतिकृति, भगवद्गीता के उपदेश और महाभारत की वीरगाथा भी बनेगी आकर्षित

सादर मित्र मंडल ने किया भूमिपूजन

पद्मेश न्यूज। लांजी। नवरात्रि पर्व को लेकर लांजी में इस वर्ष भक्ति, आस्था और भव्यता का अद्भुत संगम देखने को मिलेगा। विश्वसरैया चौक में सादर मित्र मंडल द्वारा वृंदावन के प्रसिद्ध प्रेम मंदिर की तर्ज पर करीब 60 फीट ऊंचा भव्य पंडाल तैयार किया जा रहा है। पंडाल में श्रद्धालुओं को प्रेम मंदिर की भव्य स्थापत्य शैली के साथ भगवद्गीता के उपदेश और महाभारत की वीरगाथा की झलक भी देखने को मिलेगी। नवरात्रि के दौरान यह पंडाल नगरवासियों और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए प्रमुख आकर्षण का केंद्र बनने जा रहा है। सादर मित्र मंडल इस वर्ष अपने 18वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। मंडल द्वारा हर वर्ष नवरात्रि पर्व पर अलग-अलग धार्मिक स्थलों की प्रतिकृतियां तैयार कर श्रद्धालुओं को धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत से रूबरू कराया जाता है। इसी कड़ी में इस बार वृंदावन के प्रसिद्ध प्रेम मंदिर को पंडाल का स्वरूप देने का निर्णय लिया गया है। पंडाल को आकर्षक विद्युत सज्जा और धार्मिक प्रसंगों के साथ सजाया जाएगा, जिससे रात के समय इसकी भव्यता और भी निखरने की उम्मीद है।

खैरागढ़ में तैयार हो रही माता की प्रतिमा

नवरात्रि के लिए माता की आकर्षक प्रतिमा खैरागढ़ में तैयार कराई जा रही है। माता की प्रतिमा के साथ प्रेम मंदिर की भव्य प्रतिकृति श्रद्धालुओं को विशेष रूप से आकर्षित करेगी। समिति द्वारा पंडाल निर्माण को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं और आयोजन को भव्य एवं व्यवस्थित स्वरूप देने के लिए सदस्य जुटे हुए हैं।

भूमिपूजन में उमड़ा उत्साह

पंडाल निर्माण के लिए विधिवत भूमिपूजन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सादर मित्र मंडल के सभी संरक्षक, सदस्यगण सहित लांजी के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में मौजूद रहे। धार्मिक विधि-विधान के साथ भूमिपूजन संपन्न होने के बाद नवरात्रि आयोजन की तैयारियों ने गति पकड़ ली है।

हर वर्ष धार्मिक स्थलों की प्रतिकृति बना रहा मंडल

सादर मित्र मंडल पिछले कई वर्षों से देश के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों की भव्य प्रतिकृतियां लांजी में तैयार कर श्रद्धालुओं को उनके दर्शन का अनुभव कराने का प्रयास कर रहा है। मंडल द्वारा पूर्व में स्वयंभू गणेश मंदिर, केदारनाथ मंदिर, बद्रीनाथ मंदिर, जेजुरी मंदिर पुणे और जगन्नाथ पुरी मंदिर की आकर्षक प्रतिकृतियां बनाई जा चुकी हैं। इन धार्मिक पंडालों को श्रद्धालुओं और नगरवासियों की खूब सराहना मिली थी। इस बार प्रेम मंदिर की प्रतिकृति को लेकर भी लोगों में अभी से उत्सुकता दिखाई दे रही है।

महाप्रसाद के साथ गरबा और सांस्कृतिक आयोजन

नवरात्रि पर्व के दौरान मंडल द्वारा प्रतिदिन श्रद्धालुओं के लिए महाप्रसाद वितरण किया जाएगा। इसके साथ ही गरबा महोत्सव और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाएगा। समिति का प्रयास है कि नवरात्रि के नौ दिनों तक विश्वसरैया चौक में भक्तिमय और उत्सवपूर्ण वातावरण बना रहे तथा अधिक से अधिक श्रद्धालु परिवार सहित पहुंचकर माता के दर्शन और धार्मिक आयोजनों में शामिल हों। सादर मित्र मंडल के इस आयोजन को लेकर नगर में उत्साह का माहौल है। अब नवरात्रि के आगमन के साथ ही यह देखना खास होगा कि करीब 60 फीट ऊंचे पंडाल में साकार होने वाला वृंदावन का प्रेम मंदिर लांजी की रातों को किस तरह अपनी भव्य रोशनी और धार्मिक आभा से रोशन करता है।

घरों और सार्वजनिक पंडालों में विराजे भगवान श्री गणेश

पद्मेश न्यूज। किरनापुर। गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर नगर एवं ग्रामीण अंचलों में श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव और उत्साह के साथ अपने घरों तथा सार्वजनिक पंडालों में प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमाओं की स्थापना की गई। शुभ मुहूर्त मे विधि-विधान से पूजा-अर्चना एवं आरती के साथ गणपति बप्पा का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सार्वजनिक चौंक चौराहों के पूजा पंडालों को आकर्षक ढंग से सजाया गया है। वहीं घरों में भी श्रद्धालुओं ने गणेश प्रतिमा स्थापित कर सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। गणपति बप्पा मोरया के जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

श्री अष्ट विनायक गणेश उत्सव गुजरी चौक विराजे प्रथम पूज्य आराध्य

गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर तहसील मुख्यालय ग्राम किरनापुर मे गुजरी चौक, किरनापुर में श्री अष्ट विनायक गणेश उत्सव के अंतर्गत प्रथम पूज्य आराध्य देव भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमा भक्तिभाव एवं विधि-विधान से स्थापित की गई।गणपति बप्पा के विराजमान होते ही श्रद्धालुओं में उत्साह का माहौल है। पंडाल को आकर्षक ढंग से सजाया गया है। श्रद्धालु प्रतिदिन भगवान श्री गणेश जी की पूजा-अर्चना एवं आरती कर सुख-समृद्धि की कामना कर रहे हैं। गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूर्ति मोरया के जयकारों से गुजरी चौक भक्तिमय हो उठा है। इस उत्सव के संचालन मे समिति अध्यक्ष जितेन्द्र अग्रवाल, उपाध्यक्ष कमलेश जांगड़े, कोषाध्यक्ष शुभ तारन, कपिश अग्रवाल, सह कोषाध्यक्ष राजा मेश्राम संचालन मनोज हुंकरे, सचिव दिवस रबेरे, वैभव शुक्ला, सह सचिव आकाश चापेकर, यश जांगड़े,संरक्षक अनिल चापेकर, संतोष हुंकरे, राजेन्द्र वंशपाल कार्यक्रम संयोजक प्रणय पाराशर, राजेश हुंकरे, अज्जु चापेकर, मयंक चापेकर, समिति व्यवस्थापक मनोज सारडा,देव सिल्हारे, सोमिल तारन, हेमंत बुराडे, नमन अग्रवाल, महेश हाथीमारे, आशुतोष शुक्ला, पियूष शर्मा, समीर ब्रम्हे, विशाल बंसपाल, समीर गोलदार, मोटू आमडारे , अनिल भौतेकर, गजेन्द्र पटले, पारितोष शुक्ला, दीपक बंशपाल, प्रमोद जांगड़े, अर्जुन बंधपाल, अनुभव सिंह बेस, आयुष हुंकरे, गौरी हुमे, आयुष अग्रवाल, हिमांशु लखेरा, रितु पाराशर, अनमोल गुरुबेले, समीर कुरैशी, आशिक टेकाम, गोलू नेवारे, लक्ष्य भूत्ते, संदीप पटले, निक्की चापेकर, कालूराम सोनवाने, सुमित चापेकर, नितेश कटारे, राकेश कटारे, विशाल तारन, लवी पटले, नानू टेकाम, राहुल नेवारे, कुलदीप दुबे, आदित्य दुबे,साइ अग्रवाल, सरवन नेवारे, नरेश लिल्हारे सहित समस्त ग्राम वासियों का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

पद मिला, पावर नहीं, अध्यक्ष-उपाध्यक्षों में बढ़ी बेचैनी

48 नेताओं को नियुक्ति के महीनों बाद भी मंत्री दर्जे का आदेश नहीं

अफसरों पर प्रभाव और कार्यकर्ताओं के काम कराने की शक्ति को लेकर उठ रहे सवाल

भोपाल । मध्यप्रदेश में निगम, मंडल, प्राधिकरण, बोर्ड और आयोगों में राजनीतिक नियुक्तियों के बाद अब मंत्री दर्जे को लेकर नया विवाद सामने आ रहा है। सत्ता और संगठन ने लंबे इंतजार के बाद करीब 48 नेताओं को अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी तो सौंप दी, लेकिन इनके साथ कैबिनेट मंत्री या राज्यमंत्री का दर्जा देने के आदेश अब तक जारी नहीं हुए हैं। इससे कुछ पदाधिकारी असहज बताए जा रहे हैं।

भाजपा नेताओं को निगम-मंडल में नियुक्ति के लिए करीब ढाई से तीन साल तक इंतजार करना पड़ा। मार्च से जुलाई के बीच सत्ता और संगठन के स्तर पर चर्चा और सहमति के बाद अलग-अलग संस्थाओं में नियुक्तियां की गईं। अब पद मिलने के बाद अगला इंतजार मंत्री दर्जे का है। राजनीतिक हलकों में इसे लेकर सवाल उठ रहा है कि जब पद दिया गया है तो उससे जुड़ी प्रशासनिक ताकत क्यों नहीं दी जा रही। सरकार ने हाल के महीनों में विभिन्न निगम, मंडल, विकास प्राधिकरण, बोर्ड और आयोगों में 34 नेताओं को अध्यक्ष और 14 को उपाध्यक्ष बनाया है। इनमें कई वरिष्ठ और लंबे समय से संगठन में सक्रिय नेता शामिल हैं। राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष जयभान सिंह पवैया का कार्यकाल भी कुछ ही महीनों में समाप्त होने वाला है।

मंत्री दर्जा नहीं मिलने से पड़ रहा फर्क

राजनीतिक नियुक्तियों के साथ मंत्री दर्जा मिलने का अपना अलग महत्व माना जाता है। अध्यक्ष को कैबिनेट मंत्री और उपाध्यक्ष को राज्यमंत्री का दर्जा मिलने पर प्रोटोकॉल के साथ प्रशासनिक स्तर पर भी पद की हैसियत बढ़ती है। पदाधिकारियों का मानना है कि इससे अधिकारियों से समन्वय, कार्यकर्ताओं की समस्याओं के समाधान और विभागीय स्तर पर पत्राचार में प्रभाव बढ़ता है। एक बड़े बोर्ड के अध्यक्ष ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि मंत्री दर्जे के बिना पद तो है, लेकिन अधिकारियों से काम कराने में पहले जैसी प्रभावशीलता नहीं रहती। कार्यकर्ता भी अपने काम लेकर आते हैं और कई बार उन्हें संबंधित विभागों तक पहुंचाने में अपेक्षित तवज्जो नहीं मिलती।

नाराजगी का असर कामकाज पर भी

सूत्रों के मुताबिक कुछ अध्यक्ष और उपाध्यक्ष मंत्री दर्जा नहीं मिलने से नाराज हैं। उनका तर्क है कि लंबे समय तक संगठन में काम करने के बाद जिम्मेदारी मिलने की उम्मीद थी कि सरकार में भी प्रभावी भूमिका मिलेगी। अब केवल पद मिलने से उनकी अपेक्षाएं पूरी नहीं हुई हैं। माना जा रहा है कि इसका असर कुछ पदाधिकारियों की सक्रियता पर भी पड़ रहा है। राजनीतिक नियुक्तियों के पुराने पैटर्न को देखें तो आमतौर पर निगम-मंडल के अध्यक्ष और उपाध्यक्षों की नियुक्ति के बाद अलग आदेश जारी कर उन्हें मंत्री दर्जा दिया जाता रहा है। इस बार नियुक्तियां होने के बावजूद दर्जे का फैसला लंबित रहने से भाजपा के भीतर चर्चा तेज है। सवाल अब यही है कि सरकार इन पदों को सिर्फ राजनीतिक जिम्मेदारी तक सीमित रखेगी या इन्हें मंत्री दर्जे के जरिए प्रशासनिक प्रभाव भी देगी।

अब रोम्स पोर्टल पर दर्ज होंगे 3 लाख आउटसोर्स कर्मचारी

भोपाल। मध्य प्रदेश में आउटसोर्स कर्मचारियों की व्यवस्था अब ऑनलाइन होने जा रही है। सरकार ने आउटसोर्सिंग से जुड़ी जानकारी को रोम्स (आरओएएमएस) पोर्टल पर दर्ज करना अनिवार्य कर दिया है। इसमें आउटसोर्स एजेंसी के पंजीयन और सत्यापन से लेकर कर्मचारी की आधार ई-केवाईसी, ऑनबोर्डिंग, मासिक हाजिरी और एजेंसी के इनवॉइस तक का रिकॉर्ड ऑनलाइन रहेगा। हालांकि, कर्मचारी संगठनों ने इस व्यवस्था में एक बड़ी कमी बताते हुए कर्मचारियों के लिए अलग एम्प्लॉई लॉगिन देने की मांग की है। संगठनों का सवाल है कि जब कर्मचारी की जानकारी पोर्टल पर दर्ज होगी तो कर्मचारी खुद अपना रिकॉर्ड क्यों नहीं देख सकेगा? उनका कहना है कि कर्मचारी को यह पता चलना चाहिए कि पोर्टल पर उसकी कितनी हाजिरी दर्ज है, उसके नाम पर कितना वेतन दिखाया गया है और वेतन से कितनी राशि काटी गई है। खासकर पीएफ की कटौती को लेकर संगठनों का कहना है कि कर्मचारी को इसकी जानकारी ऑनलाइन देखने की सुविधा मिलनी चाहिए। वित्त विभाग ने जारी आदेश में सभी विभागों और उनके अधीनस्थ कार्यालयों को रोम्स पर लंबित प्रक्रिया पूरी करने के निर्देश दिए हैं। 31 अक्टूबर तक सभी लंबित अनुबंध, कार्यादेश और संबंधित प्रक्रियाएं पोर्टल पर पूरी करनी होंगी। वहीं अक्टूबर 2026 से आउटसोर्स सेवाओं के भुगतान के लिए रोम्स से जनरेट इनवॉइस अनिवार्य किया गया है। बिना रोम्स इनवॉइस के कोषालय में देयक पारित नहीं होगा।

1 अप्रैल से नए अनुबंध रोम्स पर दर्ज करना जरूरी

सरकार ने 1 अप्रैल 2026 के बाद किए गए नए आउटसोर्सिंग अनुबंध और कार्यादेश को रोम्स पर दर्ज करना अनिवार्य किया है। पहले से चल रहे अनुबंधों की जानकारी भी पोर्टल पर दर्ज की जानी है। इसके जरिए सरकार आउटसोर्सिंग से जुड़ी प्रक्रिया को एक डिजिटल सिस्टम में लाने की कोशिश कर रही है। अस्थाई, आउटसोर्स कर्मचारी मोर्चा के अध्यक्ष वासुदेव शर्मा ने कहा कि सरकार ने आउटसोर्सिंग की व्यवस्था को डिजिटल करने की शुरुआत की है, लेकिन इसमें कर्मचारी को सीधे जोड़ने वाली व्यवस्था नहीं है। कर्मचारी के लिए एम्प्लॉई लॉगिन दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कर्मचारी को अपने ही रिकॉर्ड के लिए एजेंसी या अधिकारी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। उसे अपने मोबाइल या कंप्यूटर से लॉगिन करके यह देखने की सुविधा मिलनी चाहिए कि उसकी कितनी हाजिरी दर्ज है, कितना वेतन बना है और वेतन से कौन-कौन सी कटौती की गई है।

पीएफ की जानकारी भी कर्मचारी को दिखे

संगठन की प्रमुख आपत्ति वेतन और पीएफ को लेकर है। शर्मा का कहना है कि यदि कर्मचारी को अपना लॉगिन नहीं दिया जाता तो वह यह भी ऑनलाइन नहीं देख पाएगा कि उसके वेतन से पीएफ के नाम पर कितनी राशि काटी गई और उसका रिकॉर्ड क्या है।

नीट काउंसलिंग में 2 लाख की एग्जिट पेनल्टी पर पटवारी ने उठाए सवाल

भोपाल। मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखकर ह्यथञ-2026 की स्क्षक्ष काउंसलिंग में आवंटित सीट छोड़ने पर लगाई गई 2 लाख रुपये की एग्जिट पेनल्टी पर पुनर्विचार करने की मांग की है। उन्होंने इसे विद्यार्थियों के लिए आर्थिक रूप से कठिन बताते हुए पेनल्टी को वापस लेने या स्थगित करने का आग्रह किया है।

पटवारी ने अपने पत्र में कहा कि 3 अगस्त को जारी ऋह्यद्द ऋश्च में राउंड-2 तक आवंटित सीट छोड़ने पर केवल प्रवेश शुल्क देय होने का उल्लेख था, जबकि 3 सितंबर के नोटिस में 2 लाख रुपये की पेनल्टी का प्रावधान किया गया। उनका कहना है कि इससे काउंसलिंग प्रक्रिया में शामिल विद्यार्थियों के सामने अतिरिक्त आर्थिक दायित्व की स्थिति बनी है। उन्होंने यह भी कहा कि ऑल इंडिया स्क्ष्ह की काउंसलिंग प्रक्रिया उस समय जारी थी। स्क्ष्ह के राउंड-2 आवंटन की तारीख 11 सितंबर थी, जबकि मध्यप्रदेश में सीट छोड़ने की अंतिम तिथि 3-4 सितंबर रखी गई थी। ऐसे में विद्यार्थियों को दोनों काउंसलिंग प्रक्रियाओं की स्थिति स्पष्ट होने से पहले निर्णय लेना पड़ा।

17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक चलेगा सेवा-संकल्प अभियान

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रज्ज्वलित विकास के दीपक का प्रकाश देशभर में फैल रहा है। प्रधानमंत्री के सेवा और जिम्मेदारी के 25 वर्षों के उजास के प्रतीक के रूप में प्रदेश में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक सेवा-संकल्प अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को अभियान में अधिक से अधिक जनभागीदारी सुनिश्चित करने और कार्यक्रमों की प्रभावी मॉनीटरिंग के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने समत्व भवन में अभियान की तैयारियों की समीक्षा करते हुए कहा कि 17 सितंबर को प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों और नगरीय निकायों के प्रत्येक वार्ड में शाम 7 बजे एक साथ दीप प्रज्ज्वलित किए जाएंगे। उज्जैन के महाकाल महालोक में आयोजित कार्यक्रम में वे स्वयं शामिल होंगे। इस दौरान प्रदेश में दीप प्रज्ज्वलन का विश्व रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया जाएगा। इसी दिन सभी स्वास्थ्य केंद्रों और मेडिकल कॉलेजों में रक्तदान शिविर भी लगेंगे।

भाजपा सांसद हिमाद्री सिंह का नरेंद्र मरावी से तलाक

9 साल बाद दोनों की सहमति से डिवोर्स, 2021 से रह रहे थे अलग

भोपाल। शहडोल से भाजपा सांसद हिमाद्री सिंह का नरेन्द्र सिंह मरावी के साथ तलाक हो गया है। अनूपपुर जिले के राजेंद्रग्राम जिला न्यायालय ने दोनों की पारस्परिक सहमति से 3 सितंबर 2026 को विवाह विच्छेद की डिक्री पारित की। दोनों का विवाह 23 नवंबर 2017 को हिंदू रीति-रिवाज से राजेंद्रग्राम में हुआ था। यानी शादी के करीब 9 साल बाद तलाक हुआ है। कोर्ट में प्रस्तुत तथ्यों के मुताबिक शादी के बाद दोनों राजेंद्रग्राम में साथ रहे और वैवाहिक दायित्व निभाए। 20 जून 2019 को बेटी गिरिशा सिंह का जन्म हुआ। इसके बाद छोटी-छोटी बातों को लेकर विवाद होने लगे। विवाद बढ़ने पर दोनों का एक-दूसरे से मिलना-जुलना बंद हो गया और वे 5 मई 2021 से अलग रहने लगे। हिमाद्री की ओर से कोर्ट में कहा गया कि दोनों के बीच अब साथ रहने की कोई संभावना नहीं है और वैवाहिक दाम्पत्य जीवन समाप्त हो चुका है। याचिका में दोनों ने विवाह विच्छेद के लिए सहमति जताई। दस्तावेज में एक-दूसरे पर कोई विशेष आरोप नहीं लगाया गया। इसमें कहा गया कि उनके बीच वैवाहिक संबंध सामान्य रूप से चलना संभव नहीं है।

हिमाद्री के साथ रहेगी बेटी

कोर्ट के सामने रखा गया कि बेटी गिरिशा सिंह हिमाद्री के साथ रह रही है। उसके पालन-पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य और वैवाहिक खर्च की जिम्मेदारी हिमाद्री सिंह की होगी। हिमाद्री ने अपने और बेटी के लिए नरेन्द्र सिंह मरावी से भरण-पोषण या गुजारा भत्ता नहीं मांगने की बात कही। दोनों पक्षों ने कहा कि विवाह से जुड़े गिफ्ट्स और जेवरात को लेकर कोई विवाद नहीं है। कोर्ट ने दोनों को फैसला बदलने और फिर से साथ आने के लिए 6 महीने का समय दिया था। न्यायालय ने दोनों के पुनर्मिलाप की कोशिश की, लेकिन यह सफल नहीं हुआ। छह महीने की अवधि पूरी होने के बाद भी दोनों ने कोर्ट को बताया कि पति-पत्नी के रूप में साथ रहना संभव नहीं है और वे अपनी इच्छा से तलाक चाहते हैं।

कोर्ट ने माना- दाम्पत्य जीवन निभाना संभव नहीं

छह महीने की अवधि और सुलह के प्रयास विफल होने के बाद न्यायालय ने दोनों की पारस्परिक सहमति से 3 सितंबर 2026 को हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 13-बी के तहत विवाह विच्छेद की डिक्री पारित कर दी।

फर्जी आईएएस तृप्ति सिंह के खिलाफ तीसरी एफआईआर दर्ज

भोपाल। फर्जी आईएएस तृप्ति सिंह राजपूत के खिलाफ बागसेवनिया थाने में तीसरी शिकायत दर्ज की गई है। जानकारी के अनुसार एमपीपीएससी की तैयारी कर रही युवती ने अपनी शिकायत में बताया की तृप्ति ने उसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय में स्थायी प्रतिनिधि पद पर नौकरी लगवाने का झांसा देकर 3 लाख रुपए लेकर हड़प लिए। पुलिस के अनुसार, जहांगीराबाद निवासी ख्याति धौलपुरे ने लिखित शिकायत करते हुए बताया कि उसकी तृप्ति से जून 2024 में मुलाकात हुई थी। तृप्ति ने खुद को नरोन्हा एकेडमी में एचओडी बताते हुए उसे सरकारी नौकरी लगवाने का भरोसा दिया। उसके झांसे में आकर ख्याति ने जुलाई 2024 में अलग-अलग तारीखों में करीब 1.50 लाख की रकम ऑनलाइन और इतनी ही रकम नकद दी। रकम लेने के बाद तृप्ति ने ख्याति को नौकरी की ट्रेनिंग का हिस्सा बताकर भोपाल के ट्राइबल म्यूजियम ले गई। वहां पौधरोपण कराया, भाषण दिलवाया और वीडियो बनवाए। दस्तावेज सत्यापन के नाम पर तृप्ति ने उसे एक मोबाइल नंबर दिया। बाद में मार्च 2026 में इसी नंबर से फोन आया और कॉल करने वाले ने खुद को एसपी ऑफिस भोपाल से बताया। कुछ समय बाद तृप्ति ने उसे एमपीएक्स में इंटर्नशिप करने की सलाह दी और पीएम बनवाकर सैलरी मिलने का भरोसा भी दिया। समय बीतने के बाद जब ख्याति ने नौकरी को लेकर सवाल किए तो तृप्ति ने उसके नाम का जॉइनिंग लेटर दिखाया, जिस पर एलबीएसएनएए की सील लगी थी।

मऊगंज-मैहर-पांढुर्णा-निवाड़ी में तय हुई जातियों की आरक्षित श्रेणी

भोपाल। मध्य प्रदेश में जिलों के पुनर्गठन के बाद प्रशासनिक सीमाएं तो बदल गईं, लेकिन इसका असर जाति प्रमाण पत्र बनवाने वाले लोगों पर भी पड़ा। नए जिले बनने के बाद कुछ जातियों की आरक्षित श्रेणी पुराने जिले के रिकॉर्ड से जुड़ी होने के कारण नए जिलों के पोर्टल पर उनका विकल्प ही उपलब्ध नहीं था। इससे पात्र लोगों को अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के प्रमाण पत्र बनवाने में परेशानी हो रही थी। अब सरकार ने मऊगंज, मैहर, पांढुर्णा और निवाड़ी में संबंधित जातियों की आरक्षित श्रेणी स्पष्ट कर दी है। इसके साथ ही इन जातियों के प्रमाण पत्र बनाने की व्यवस्था भी कर दी गई है। यानी जिला बदलने के कारण जो तकनीकी और प्रशासनिक अड़चन खड़ी हुई थी, उसे दूर करने का रास्ता साफ हो गया है। सबसे प्रमुख मामला कुम्हार जाति का रहा। कुम्हार, कुम्हार (प्रजापति) और कुंभार जाति को छतरपुर, दतिया, पन्ना, रीवा, सतना, शहडोल, सीधी और टीकमगढ़ में एससी की श्रेणी में अधिसूचित किया गया है। अब यही व्यवस्था मऊगंज और मैहर में भी लागू होगी। रीवा जिले के विभाजन के बाद मऊगंज नया जिला बना तो ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल पर कुम्हार जाति पुराने रिकॉर्ड से अलग हो गई थी। नतीजा यह हुआ कि जिन लोगों को एससी प्रमाण पत्र मिलना चाहिए था, उनके सामने ऑनलाइन आवेदन में समस्या आने लगी। इसका असर केवल प्रमाण पत्र तक सीमित नहीं रहा। एससी प्रमाण पत्र नहीं बनने के कारण संबंधित विद्यार्थियों को आरक्षित वर्ग के लिए मिलने वाली शैक्षणिक योजनाओं और अन्य सरकारी सुविधाओं का लाभ लेने में भी परेशानी हुई।

विधानसभा में भी उठा था मामला

मऊगंज में कुम्हार जाति को एससी प्रमाण पत्र नहीं मिलने का मामला पिछले वर्ष विधानसभा में भी उठा था। देवतालाब विधायक गिरीश गौतम ने सवाल किया था कि जिले में कुम्हार जाति के लोगों को एससी प्रमाण पत्र क्यों नहीं मिल पा रहे हैं। मनगवां विधायक नरेंद्र प्रजापति की ओर से भी यह मुद्दा उठाया गया था। सरकार ने जवाब में माना था कि रीवा जिले के विभाजन के बाद मऊगंज के एमपी ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल से कुम्हार जाति संबंधित सूची से हट गई थी। इसके चलते विद्यार्थी पूर्व की तरह योजनाओं का लाभ नहीं ले पा रहे थे। सरकार ने इसे दोबारा एससी श्रेणी में शामिल करने की प्रक्रिया शुरू होने की जानकारी दी थी। अब मऊगंज के साथ मैहर में भी इसकी व्यवस्था स्पष्ट कर दी गई है।

यूजी नीट -2026 में रू2 लाख की एग्जिट पेनल्टी तत्काल वापस ले सरकार -जीतू पटवारी

भोपाल। यूजी नीट-2026 की एमबीबीएस काउंसलिंग में विद्यार्थियों पर आवंटित सीट छोड़ने के लिए लगाई गई रू 2,00,000 की एग्जिट पेनल्टी को मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखकर अत्यंत गंभीर और अन्यायपूर्ण बताते हुए तत्काल वापस/स्थगित करने की मांग की है।

पटवारी ने कहा कि 3 सितंबर 2026 के राउंड-2 नोटिस में लगाया गया यह प्रावधान 3 अगस्त 2026 को प्रकाशित ऋह्यद्द ऋशश्च के पेज 8, क्रमांक 15 में दिए गए नियम के विपरीत है। रूल बुक में राउंड-2 तक आवंटित सीट छोड़ने पर केवल प्रवेश शुल्क देय बताया गया था। विद्यार्थियों ने इसी नियम पुस्तिका के आधार पर काउंसलिंग में भाग लिया था। उन्होंने कहा कि मामला इसलिए और गंभीर है क्योंकि ऑल इंडिया एमसीसी तथा अन्य राज्यों की काउंसलिंग प्रक्रिया अभी जारी थी। एमसीसी का राउंड-2 एलाटमेंट 11 सितंबर को होना था, जबकि मध्यप्रदेश डीएमई ने फ्री एग्जिट की अंतिम तिथि 3-4 सितंबर रख दी। ऐसे में विद्यार्थी एमसीसी के परिणाम और अपग्रेडेशन की संभावना जाने बिना ही अपनी आवंटित सीट छोड़ने या बनाए रखने का अंतिम निर्णय लेने के लिए मजबूर हुए।

श्री पटवारी ने कहा कि रू 2 लाख की पेनल्टी अन्य काउंसलिंग व्यवस्थाओं की तुलना में भी अत्यधिक है। उपलब्ध एमसीसी व्यवस्था के अनुसार राउंड-2 से बाहर निकलने पर सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए अधिकतम रू10,000 तक का नुकसान होता है। मध्यप्रदेश के विद्यार्थियों पर इससे कई गुना अधिक आर्थिक दायित्व डालना उन्हें अन्य राज्यों के विद्यार्थियों की तुलना में स्पष्ट रूप से नुकसान की स्थिति में खड़ा करता है। उन्होंने कहा कि काउंसलिंग के पहले राउंड से पहले सभी नियम स्पष्ट होने चाहिए। प्रक्रिया के बीच में नियम बदलना विद्यार्थियों के साथ अन्याय है। पहले ही नीट यूजी की पुन: परीक्षा और काउंसलिंग में हुई देरी से प्रभावित विद्यार्थियों पर यह निर्णय अतिरिक्त आर्थिक और मानसिक दबाव डाल रहा है।

श्री पटवारी ने एस .गुणाशेखरन व्ही.अंडर सक्रेटरी टू गवर्मेंट, 2024 आईएनएससी 1018 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मान्यता दिए गए सिद्धांत का उल्लेख करते हुए कहा कि विरोधाभासी काउंसलिंग प्रावधानों के कारण उम्मीदवारों को नुकसान नहीं होना चाहिए। जब तक राज्य और ऑल इंडिया एमसीसी के सभी संबंधित काउंसलिंग राउंड पूरे नहीं हो जाते, विद्यार्थियों को अपनी आवंटित सीट छोड़ने अथवा एमसीसी एआईक्यू में अपग्रेड होने के अवसर पर इस प्रकार का आर्थिक दंड नहीं लगाया जाना चाहिए।

पटवारी ने मुख्यमंत्री से मांग की कि

1. रू2,00,000 की एग्जिट पेनल्टी को वापस/स्थगित किया जाए।
2. 3 अगस्त 2026 की रूल बुक के अनुसार देयता केवल प्रवेश शुल्क तक सीमित रखी जाए।
3. अतिरिक्त वसूल की गई राशि विद्यार्थियों को वापस की जाए।
4. राउंड-2 समाप्त होने से पहले आवंटित सीट छोड़ने के लिए उचित समय-सीमा दी जाए।
5. भविष्य में काउंसलिंग प्रक्रिया के बीच विद्यार्थियों को प्रभावित करने वाले नियमों में बदलाव न किया जाए।

पटवारी ने कहा कि प्रदेश के विद्यार्थी किसी विशेष रियायत की मांग नहीं कर रहे हैं। वे केवल उसी नियम के अनुसार न्याय चाहते हैं, जिसके आधार पर उन्होंने काउंसलिंग में भाग लिया था।

डकैत खत्म, डकैती एक्ट कायम

6 साल में 1000+ एफआईआर, हाई कोर्ट ने सरकार से पूछा—कानून की जरूरत क्या

भोपाल। मध्यप्रदेश में डकैत गिरोहों का दौर भले ही खत्म हो गया हो, लेकिन डकैतों से निपटने के लिए बनाया गया मध्य प्रदेश डकैती एवं व्यपहरण प्रभावित क्षेत्र अधिनियम, 1981 अब भी ग्वालियर-चंबल अंचल में इस्तेमाल हो रहा है। इसी विरोधाभास पर मध्यप्रदेश हाई कोर्ट की ग्वालियर खंडपीठ ने सरकार से सवाल किया है कि जब प्रदेश में कोई सूचीबद्ध डकैत गिरोह सक्रिय नहीं है, तो इस विशेष कानून को खत्म क्यों न कर दिया जाए। पूर्व गृह मंत्री डॉ. गोविंद सिंह की जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान यह मुद्दा सामने आया। याचिका में दावा किया गया है कि 2020 से 2026 के बीच ग्वालियर, शिवपुरी, दतिया, भिंड, मुरैना और श्योपुर में इस कानून के तहत 1000 से अधिक एफआईआर दर्ज की गईं।

याचिका में कहा गया है कि वर्ष 2020 से 2026 के बीच विधानसभा में तत्कालीन गृह मंत्री अलग-अलग मौकों पर यह जानकारी दे चुके हैं कि प्रदेश में कोई सूचीबद्ध डकैत गिरोह सक्रिय नहीं है। इसके बावजूद उसी अवधि में छह जिलों में इस विशेष कानून के तहत बड़ी संख्या में मामले दर्ज होने का दावा किया गया है। याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता राजीव शर्मा ने तर्क दिया कि 1981 में जिस विशेष परिस्थिति से निपटने के लिए कानून बनाया गया था, वह अब मौजूद नहीं है। ऐसे में कानून का लगातार इस्तेमाल नागरिकों के समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार से जुड़े सवाल खड़े करता है।

सामान्य विवाद में भी कठोर कानून लगाने का आरोप

याचिका में आरोप लगाया गया है कि कई मामलों में जमीन-जायदाद के विवाद, आपसी रंजिश और सामान्य मारपीट जैसी घटनाओं में भी डकैती एक्ट की कठोर धाराएं जोड़ दी जाती हैं। खासतौर पर ग्रामीणों, किसानों और युवाओं के खिलाफ इस कानून के इस्तेमाल को लेकर आपत्ति जताई गई है।

धारा 11 और 13 बनीं विवाद का केंद्र

याचिकाकर्ता ने अधिनियम की धारा 11 और 13 के प्रावधानों को भी चुनौती दी है। धारा 11 के तहत गिरफ्तारी और हिरासत से जुड़े विशेष प्रावधान हैं तथा ऐसे मामलों में अग्रिम जमानत उपलब्ध नहीं होने की बात याचिका में उठाई गई है। वहीं धारा 13 दोषसिद्धि पर न्यूनतम तीन वर्ष की सजा का प्रावधान करती है। याचिकाकर्ता का कहना है कि सामान्य प्रकृति के विवादों में इन प्रावधानों का इस्तेमाल होने पर आरोपी के लिए कानूनी राहत हासिल करना मुश्किल हो जाता है।

डकैतों के लिए बना कानून, अब विवादों में इस्तेमाल?

1981 में यह कानून उस समय बनाया गया था, जब ग्वालियर-चंबल के बीहड़ों के अलावा सतना और पन्ना के जंगलों में भी डकैत गिरोह सक्रिय थे। अपहरण, डकैती और सामूहिक हत्याओं जैसी गंभीर घटनाओं से निपटने के लिए सामान्य कानूनों से अलग कड़े प्रावधान किए गए थे। अब हाई कोर्ट में मूल सवाल यही है कि जब डकैत गिरोहों का वह दौर समाप्त हो चुका है, तो उस दौर के लिए बनाया गया विशेष कानून आज भी क्यों लागू रहे और उसका इस्तेमाल किन परिस्थितियों में किया जाए।

सरकार और छह जिलों के एसपी से मांगा जवाब

हाई कोर्ट ने गृह विभाग के प्रमुख सचिव, डीजीपी और ग्वालियर, शिवपुरी, दतिया, भिंड, मुरैना व श्योपुर के पुलिस अधीक्षकों को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब मांगा है। सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से शासकीय अधिवक्ता धर्मेंद्र शर्मा ने बताया कि इस अधिनियम के तहत दर्ज मामलों की सुनवाई विशेष न्यायालय में होती है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि पिछले कई वर्षों से जंगल या बीहड़ क्षेत्र में कोई सूचीबद्ध डकैत गिरोह सक्रिय नहीं है। अब सरकार के जवाब से तय होगा कि डकैतों के आतंक के दौर में बना यह विशेष कानून बदलते अपराध परिदृश्य में भी जरूरी है या इसकी कठोर धाराओं के इस्तेमाल पर नए सिरे से विचार किया जाना चाहिए।

मप्र को मिल सकती है पहली महिला डीजीपी

भोपाल। मध्य प्रदेश में नए पुलिस महानिदेशक को लेकर सस्पेंस बढ़ गया है। वर्तमान डीजीपी कैलाश मकवाना का कार्यकाल 30 नवंबर 2026 को पूरा होने के साथ ही 1 दिसंबर से प्रदेश को नया पुलिस मुखिया मिलना है। सरकार ने डीजी और स्पेशल डीजी स्तर के 12 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों का पैनल संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) को भेज दिया है। अब चयन समिति इस सूची में से तीन नामों का पैनल राज्य सरकार को भेजेगी, जिसके बाद अंतिम नाम पर फैसला होगा। इस पूरी कवायद में 1991 बैच की आईपीएस अधिकारी प्रज्ञा ऋचा श्रीवास्तव का नाम खास चर्चा में है। वर्तमान में होमगार्ड महानिदेशक की जिम्मेदारी संभाल रहीं प्रज्ञा ऋचा के चयन की स्थिति में मध्य प्रदेश को पहली महिला डीजीपी मिल सकती हैं। यही संभावना उन्हें इस बार की डीजीपी दौड़ का सबसे दिलचस्प चेहरा बना रही है। 1991 बैच में ही वर्तमान जेल महानिदेशक वरुण कपूर और ईओडब्ल्यू महानिदेशक उपेंद्र जैन के नाम भी शामिल हैं। वरिष्ठता के लिहाज से वरुण कपूर सबसे आगे माने जा रहे हैं।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने नकवी के हाथ से नहीं ली एशिया कप ट्रॉफी

दुबई । भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने यहां हुए एशिया कप के फाइनल में श्रीलंका को 72 रनों से हराकर अपना खिताब बराकरार रखा। भारतीय टीम ने इसके साथ ही रिकार्ड आठवीं बार खिताब जीता। जीत के बाद भारतीय टीम ने एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष और पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के प्रमुख मोहसिन नकवी स्टैंड के हाथों से ट्रॉफी लेने से इंकार कर दिया।

फाइनल मुकाबले के बाद अवार्ड समारोह में तो श्रीलंकाई खिलाड़ी मंच पर पहुंच गये पर भारतीय खिलाड़ियों ने नकवी के हाथों ट्रॉफी लेने से मना कर दिया। पुरस्कार समारोह शुरू हुआ, तो उसमें केवल श्रीलंकाई खिलाड़ियों को उनके पदक और उपविजेता का चेक दिया गया, जिसे एसीसी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने स्वयं भेंट किया। इसके बाद प्रेजेंटर फरवीज महारुफ ने अचानक घोषणा की कि पोस्ट-मैच प्रेजेंटेशन सेरेमनी यहीं समाप्त होती है। तब बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला और बोर्ड के सचिव देवजीत सैकिया भी उपस्थित थे। भारतीय टीम मैच समाप्त होते ही सीधे ड्रेसिंग रूम लौट गई थी और उन्हें मैदान पर कोई पदक या ट्रॉफी उसे नहीं मिली।

वहीं पहले ही अटकलें थीं कि भारतीय टीम नकवी के हाथों से ट्रॉफी स्वीकार नहीं करेगी। जो पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के भी प्रमुख हैं। सैकिया और शुक्ला से मुलाकात के बाद भारतीय टीम ड्रेसिंग रूम की ओर चली गयी। वहीं टीम के कोच अमोल मजूमदार ने कहा कि नकवी के हाथों से ट्रॉफी ना लेना पूरी तरह से बीसीसीआई का फैसला था।

इससे एक बार फिर साल 2025 के पुरुष एशिया कप फाइनल की यादें ताजा हो गयी जब नकवी भारतीय टीम के ट्रॉफी लेने से इंकार करने के बाद उसे अपने साथ लेकर मैदान से बाहर चले गये थे। वहीं इस बार वह श्रीलंकाई खिलाड़ियों को पुरस्कार देने के बाद मैदान से तो चले गये पर ट्रॉफी नहीं ले गये। भारतीय महिला टीम ने इस जीत के साथ ही श्रीलंका से साल 2024 के फाइनल में मिली करारी हार का हिसाब बराबर कर दिया। मैच में भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 183 रनों का विशाल स्कोर बनाया। जिसके बाद श्रीलंकाई टीम 111 रन पर ही सिमट गई। भारतीय टीम के प्रशंसकों ने भी नकवी को नहीं बख्शा, इस बेइज्जती का वीडियो भी आया है।

हेसन बने रहना चाहते हैं पाकिस्तान टेस्ट टीम के कोच

लाहौर। माइक हेसन ने कहा है कि वह स्थायी रुप से पाकिस्तान टेस्ट क्रिकेट टीम के मुख्य कोच बने रहना चाहते है। सीमित ओवरों के कोच हेसन को इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे और आखिरी टेस्ट में अंतरिम कोच की भी जिम्मेदारी दी गयी थी। हेसन के अनुसार वह पाकिस्तान के साथ आगे भी जुड़े रहना चाहते हैं। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने शुरुआती दोनो टेस्ट में टीम की करारी हार के बाद सरफराज अहमद को कोच पद से हटाकर हसी को अंतिरिम कोच की जिम्मेदारी दी थी।

हालांकि, हेसन के कोच बनने के बाद भी पाक के प्रदर्शन में कोई बदलाव नहीं आया और टीम को हार का ही सामना करना पड़ा। इंग्लैंड ने तीसरे टेस्ट में पाक को आठ विकेट से हराकर सीरीज 3-0 से जीत ली है। इस प्रकार पाक को 3-0 से करारी हार मिली है। वहीं कोच ने कहा, मुझे टेस्ट क्रिकेट बहुत पसंद है और पाकिस्तान में काफी प्रतिभाएं मौजूद है। अगर हम खिलाड़ियों को सही दिशा दे सकें, तो आगे बढ़ने की काफी संभावनाएं हैं। हेसन ने कहा है कि टीम बदलाव के लिए समय की जरूरत होगी। उन्होंने कहा कि एक या दो मुकाबलों से बदलाव नहीं आ सकता है। उन्होंने कहा, यह बदलाव एक या दो मैचों में नहीं हो सकता, यहां काफी प्रतिभा है। अगर अवसर मिलात तो मैं जिम्मेदारी संभालने और टीम को आगे ले जाने पर विचार करूंगा। हेसन के अनुसार वह पाक की मौजूदा परेशानियों के बावजूद टीम की क्षमता से प्रभावित हैं। उन्हें भरोसा है कि सही योजना और दिशा के साथ टीम के प्रदर्शन में सुधार किया जा सकता है।

गौरतलब है कि हेसन मई 2025 से ही पाक की सीमित ओवरों की टीम के मुख्य कोच हैं। उन्होंने कहा कि स्थायी टेस्ट कोच की भूमिका को लेकर अभी तक पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड और चयनकर्ताओं के साथ कोई औपचारिक बातचीत नहीं हुई है। वहीं पीसीबी से अभी तक इस बारे में कोई बयान नहीं आया है। हेसन ने यह भी स्पष्ट किया कि फिलहाल उनका तत्काल ध्यान पाकिस्तान की आगामी सफेद गेंद की प्रतिबद्धताओं पर है। पाकिस्तान को एशियन गेम्स में सीमित ओवरों के मुकाबले खेलने हैं और हेसन इस अभियान पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।माइक हेसन ने साफ किया कि वह कम से कम 2027 वनडे विश्व कप तक पाकिस्तान क्रिकेट टीम के साथ जुड़े रहना चाहते हैं।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज से बार्टमैन बाहर, जेनसन शामिल

डरबन। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 24 सितंबर से होने वाली आगामी तीन मैचों की एकदिवसीय क्रिकेट पहले दक्षिण अफ्रीका को एक करारा झटका लगा है। उसके तेज गेंदबाज ओटनील बार्टमैन बाएं हैमस्ट्रिंग में चोट के कारण पूरी सीरीज से ही बाहर हो गए हैं। इसी कारण बार्टमैन की जगह पर युवा तेज गेंदबाज डुआन जेनसन को टीम में शामिल किया गया है। जेनसन 19 सितंबर को डरबन में टीम से जुड़ेंगे। डुआन अपने भाई और दक्षिण अफ्रीकी ऑलराउंडर मार्को जेनसन के साथ टीम कैंप में शामिल होंगे।

बार्टमैन का चोटिल होना इसलिए भी टीम के लिए चिन्ता का करण है क्योंकि पहले से ही प्रमुख तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा टीम से बाहर हैं। रबाडा भी हैमस्ट्रिंग की समस्या के कारण एकदिवसय सीरीज से बाहर हो गये हैं, जिससे दक्षिण अफ्रीकी टीम की तेज गेंदबाजी प्रभावित हुई है। बार्टमैन और रबाडा दोनों का बाहर होना निश्चित रूप से टीम की रणनीतिक योजनाओं के लिए परेशानी का कारण बना है। एकदिवसीय सीरीज का पहला मुकाबला 24 सितंबर से डरबन में खेला जाएगा। इसमें रबाडा की उपलब्धता पर बाद में फैसला लिया जाएगा। विशेषकर 9 अक्टूबर से शुरू होने वाली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए। वह फिलहाल अपनी चोट से उबरने और टेस्ट मैचों के लिए फिट होने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। उनकी उपलब्धता पर अंतिम निर्णय टेस्ट सीरीज से पहले लिया जाएगा।

पिछले सप्ताह दक्षिण अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज के लिए 16 सदस्यीय टीम घोषित की थी। इस टीम में नियमित कप्तान तेंबा बावुमा की वापसी हुई है। उनके साथ ही अनुभवी बल्लेबाज डेविड मिलर और क्विंटन डी कॉक भी टीम में शामिल हैं। गेराल्ड कोएत्जी की भी तीन साल के बाद टीम में वापसी हुई है। कोएत्जी को रबाडा की जगह टीम में शामिल किया गया है, जिससे तेज गेंदबाजी विभाग में एक अतिरिक्त और गतिशील विकल्प मिलेगा। ब्रेविस को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय टीम में जगह नहीं मिली है। वह टेस्ट सत्र की तैयारी कर रहे हैं और इस दौरान प्रथम श्रेणी क्रिकेट में हिस्सा लेंगे। वहीं, एडेन मार्करम पहले एकदिवसीय के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। वह सीरीज के दूसरे और तीसरे मुकाबले में दक्षिण अफ्रीकी टीम का हिस्सा बनेंगे।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका की एकदिवीसय टीम- तेंबा बावुमा (कप्तान), डुआन जेनसन, कॉर्बिन बॉश, मैथ्यू ब्रीट्ज़के, गेराल्ड कोएत्जी, क्विंटन डी कॉक, टोनी डी जॉर्जी, ब्योर्न फोर्टुइन, मार्को जेनसन, केशव महाराज, क्वेना मफाका, एडेन मार्करम, डेविड मिलर, लुंगी एनगिडी, रयान रिकेल्टन, ट्रिस्टन स्टब्स.

2027 विश्वकप में जीत के लिए अभी से तैयारियों में बदलाव की जरुरत-गावस्कर

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने 2027 में दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया में होने वाले एकदिवसीय विश्वकप में जीत हासिल करने के लिए टीम इंडिया को अभी से अपनी तैयारियों में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव करने की सलाह दी है। गावस्कर का मानना है कि इन बदलावों को समय रहते लागू करना भारतीय टीम के लिए निर्णायक साबित हो सकता है।

गावस्कर ने विशेष रूप से भारतीय बल्लेबाजों को बड़ी बाउंड्री वाले मैदानों पर खेलने की आदत डालने पर जोर दिया। उनका तर्क है कि मेजबान देशों में अक्सर बड़े मैदान होते हैं, और भारतीय बल्लेबाजों को अभी से इसका अभ्यास करना होगा। इसके लिए उन्होंने भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) को घरेलू क्रिकेट में बाउंड्री का आकार बढ़ाने का सुझाव दिया है। गावस्कर के अनुसार, नए घरेलू सत्र की शुरुआत के साथ ही यह बदलाव लागू कर देना चाहिए, ताकि बल्लेबाज अगले साल तक बड़े मैदानों में बाउंड्री लगाने के आदी हो सकें। उन्होंने लिखा, नया सत्र शुरू होते ही बाउंड्री का आकार बढ़ाना बेहद जरूरी है, जिससे हमारे बल्लेबाज अगले साल होने वाले विश्व कप से पहले इसकी आदत डाल सकें।

केवल बड़े शॉट लगाने से सफलता नहीं मिलती, गावस्कर ने एकदिवसीय क्रिकेट में बल्लेबाजों को मैच के हालात के अनुसार खेलने की अहमियत समझाई। उन्होंने सलाह दी कि बल्लेबाजों को यह समझना होगा कि किन गेंदबाजों के खिलाफ अनावश्यक जोखिम मोल नहीं लेना है और किन गेंदबाजों पर खुलकर शॉट खेले जा सकते हैं। उनका तर्क है कि किसी भी टीम के पास सभी पांच विश्वस्तरीय गेंदबाज नहीं होते, इसलिए हर मैच में रन बनाने के मौके हमेशा मिलते हैं, बस उन्हें पहचानने की जरूरत है।

गावस्कर ने शॉट चयन को लेकर भी महत्वपूर्ण सलाह दी। उन्होंने कहा कि बल्लेबाजों को अपनी छवि या अहंकार के दबाव में आकर हर गेंद पर बड़ा शॉट खेलने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। शॉट चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है, उन्होंने कहा, बल्लेबाज को अपने अहंकार पर नियंत्रण रखना चाहिए और हर गेंद को उसकी गुणवत्ता के अनुसार खेलना चाहिए। उन्होंने टी20 और एकदिवसीय क्रिकेट के बीच के अंतर को भी रेखांकित किया। जहां टी20 में शुरुआत से ही आक्रामक बल्लेबाजी की आवश्यकता होती है, वहीं एकदिवसीय प्रारूप में बल्लेबाजों के पास पिच और परिस्थितियों को समझने, अपनी पारी को संवारने और फिर बड़े शॉट खेलने के लिए पर्याप्त समय होता है।

नकवी पहले से जानते थे भारतीय टीम उनसे अवार्ड नहीं लेंगी

दुबई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशिया कप में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष और एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के प्रमुख मोहसिन नकवी के हाथों से ट्रॉफी लेने से साफ इनकार कर दिया। पिछले कुछ समय में जिस प्रकार की रिपोर्ट आयीं हैं उससे साफ है कि नकवी को पहले से ही इन बातों का अंदेशा था।

यहां तक कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने भी एसीसी अधिकारियों को पहले ही साफ कर दिया था कि यदि फाइनल भारतीय टीम जीतती है और अवार्ड समारोह में मोहसिन नकवी उपस्थित होते हैं, तो टीम उनके हाथों से ट्रॉफी नहीं लेगी। इस प्रकार की जानकारी के बाद भी नकवी मंच पर मौजूद रहे, जिससे यह सवाल उठता है कि क्या उन्होंने जानबूझकर ऐसी स्थिति पैदा की, जिसे भारत-पाकिस्तान के बीच जारी क्रिकेट विवाद और बढ़ जाये। गौरतलब है कि एसीसी अध्यक्ष के तौर पर मोहसिन नकवी की भूमिका और उनके फैसलों पर पहले भी कई सवाल उठे हैं। दोनो देशों के बीच क्रिकेट संबंध लंबे समय से तनावपूर्ण रहे हैं, और ऐसे में नकवी का, बीसीसीआई की पूर्व सूचना के बाद भी आवार्ड समारोह में रहना ये दिखाता है कि वह विवाद बढ़ाना चाहते थे। यदि वह चाहते, तो टीमों को किसी ऐसे व्यक्ति से ट्रॉफी दिलवा सकते थे, जो न तो भारत और न ही पाकिस्तान क्रिकेट से सीधा जुड़ा होता। इस घटना ने एक बार फिर खेल के मैदान पर राजनीति को देखाया है। प्रेजेंटेशन समारोह में भी यह तनाव साफ देखा गया, जब श्रीलंका का आखिरी विकेट गिरने और समारोह शुरू होने के बीच लगभग 40 मिनट का लंबा इंतजार करना पड़ा।

श्रीलंकाई टीम को उनके उपविजेता पदक और चेक प्रदान किए जाने के बाद अचानक ही पूरा प्रसारण अचानक समाप्त हो गया। इस दौरान भारतीय खिलाड़ियों को विजेता पदक या ट्रॉफी लेते हुए नहीं दिखाया गया। वहीं भारतीय टीम के मुख्य कोच अमोल मजूमदार ने टीम के रुख को स्पष्ट किया। उन्होंने मैच के बाद कहा कि नकवी से अवार्ड न लेने का फैसला बीसीसीआई का था।

श्रीलंकाई कप्तान अटापट्टू बोली, हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाये

दुबई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम के खिलाफ एशिया कप के फाइनल में हार से निराश श्रीलंकाई क्रिकेट टीम की कप्तान चमारी अटापट्टू ने माना है कि उनकी टीम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं करने के कारण हारी है।

खिताबी मैच के फाइनल में श्रीलंका को भारतीय टीम के हाथों 72 रनों की करारी हार झेलनी पड़ी थी। हार के बाद अटापट्टू ने कहा, हार-जीत खेल का हिस्सा है, एक टीम जीतती है और एक टीम हारती है पर अंतम में मुझे पता है कि हमने अपना सबसे अच्छा क्रिकेट नहीं खेला, खासकर पावरप्ले में गेंदबाजी में हमें काफी परेशानी हुई। उन्होंने भारतीय टीम की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने काफी अच्छा खेला। अटापट्टू ने हार के बाद भी भविष्य के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और कहा, कि हम वापसी करेंगे, क्योंकि इसके बाद एशियन खेल होने वाले हैं। इसलिए हमें कई क्षेत्रों में सुधार करने की जरूरत है, और हम उसमें सफल रहेंगे।

उन्होंने साथ ही कहा कि इस फाइनल मुकाबले को छोड़कर, उनकी टीम ने पूरे टूर्नामेंट में बहुत अच्छा क्रिकेट खेला और कुछ मजबूत टीमों को भी हराया। अटापट्टू ने जोर देकर कहा कि इस मुकाबले में मिली हार का मतलब यह नहीं है कि उनकी टीम अच्छी नहीं है। उन्होंने कहा, हमें अपनी योजनाओं पर अमल करने की जरूरत है, और मुझे उम्मीद है कि हम वापसी करेंगे। कई खिलाड़ियों ने काफी सुधार करते हुए अच्छा क्रिकेट खेला है। हर्षिता, प्रबोदा और नीलाक्षिका इस विश्वकप की खोज रहे।

फाइनल मुकाबले में श्रीलंकाई टीम उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पायी। भारत से मिले 184 रनों के चुनौतीपूर्ण लक्ष्य का पीछा करते हुए, श्रीलंकाई टीम 111 रनों पर ही आउट हो गयी।

डब्ल्ययूसीएल के तीसरे सत्र में खेलने के लिए तैयार हैं पूर्व दिग्गज

दुबई । पूर्व क्रिकेटरों की वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लेजेंड्स लीग (डब्ल्यूसीएल) का तीसरा सत्र अगले माह 3 अक्टूबर से संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में शुरु होगा। इस लीग में कई दिग्गज पूर्व क्रिकेटर भाग लेंगे जिसमें भारत के युवराज सिंह के अलावा पाकिस्तान के शाहिद अफ़रीदी, वेस्टइंडीज के क्रिस गेल दक्षिण अफ्रीका के एबी डिविलियर्स और ऑस्ट्रेलिया के डेविड वॉर्नर जैसे खिलाड़ी हैं। यह टूर्नामेंट 3 से 18 अक्टूबर तक दुबई और शारजाह के शानदार स्टेडियमों में आयोजित होगा, जहाँ प्रशंसकों को इन पूर्व क्रिकेटरों को देखने का अवसर एक बार फिर मिलेगा।

लीग के पहले दो सत्र इंग्लैंड में सफलतापूर्वक आयोजित होने के बाद, यह पहली बार है जब टूर्नामेंट कहीं ओर खेला जा रहा है। यूएई में इसका आयोजन दक्षिण-एशियाई और प्रवासी क्रिकेट प्रशंसकों के लिए रोमांचक होगा। ये जो अपने पसंदीदा सितारों को अपनी नज़दीक से खेलते हुए देख पाएंगे। लीग ने सत्र 3 के फ़ाइनल कार्यक्रम की घोषणा कर दी है।

इस लीग में दुनिया भर के पूर्व क्रिकेट सितारे अपनी-अपनी टीमों का प्रतिनिधित्व करते हुए एक साथ आएंगे। इनमें इंडिया चैंपियंस, पाकिस्तान चैंपियंस, ऑस्ट्रेलिया चैंपियंस, इंग्लैंड चैंपियंस, साउथ अफ्रीका चैंपियंस, वेस्ट इंडीज़ चैंपियंस और बांग्लादेश चैंपियंस जैसी टीमें शामिल हैं। टूर्नामेंट का सबसे बहुप्रतीक्षित मुकाबला भारत चैंपियंस और पाकिस्तान चैंपियंस के बीच होगा, जो हमेशा की तरह क्रिकेट प्रशंसकों के बीच जबरदस्त उत्साह पैदा करेगा। इसके अतिरिक्त, कई अन्य मैचों में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की पुरानी प्रतिद्वंद्विताएँ एक बार फिर ताज़ा होंगी, जिसमें खेल के कुछ सबसे जाने-माने पूर्व खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। लीग के अनुसार, दूसरे सत्र के दौरान 425 मिलियन दर्शकों की वैश्विक संख्या हासिल करने के बाद, यह टूर्नामेंट अब अपनी लोकप्रियता को भुनाने और एक नए दर्शक वर्ग तक पहुँचने के लिए तैयार है।

रूट के निशाने पर हैं सचिन के ये रिकार्ड

लंदन। इंग्लैंड की टेस्ट क्रिकेट टीम के कप्तान जो रुट की नजरें अब महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के तीन बड़े रिकार्ड पर लगी हैं। हाल में पाकिस्तान के खिलाफ सीरीज में कई रिकार्ड बनाने वाले रुट आजकल अच्छी लय में है जिसका लाभ उन्हें मिल सकता है। वह अपने अपने करियर में उत्कर्ष पर हैं। इसमें प्रत्येक मैच के साथ ही वह नई उपलब्धि हासिल कर रहे हैं। पाकिस्तान के खिलाफ तीसरे टेस्ट में रुट ने तेंदुलकर का टेस्ट में सर्वाधिक अर्धशतकों का रिकॉर्ड तोड़ दिया। तेंदुलकर ने अपने करियर में 68 अर्धशतक लगाए थे, जबकि रूट केअब 69 अर्धशतक हो गये हैं। इससे उनके लगातार बेहतर होने का अंदाजा होता है। रूट की निगाहें अब तेंदुलकर के 15921 टेस्ट रनों के रिकार्ड पर लगी हैं। वहीं रूट ने अब तक 169 टेस्ट मुकाबलों में 14278 रन बनाये हैं। रूट को सचिन के इस रिकॉर्ड को तोड़ने के लिए अब केवल 1643 रनों की ही जरुरत है। रुट जिस प्रकार से खेल रहे हैं उससे तय है कि वह बहुत जल्द टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने का विश्व रिकॉर्ड बना सकते हैं।

तेंदुलकर ने अपने करियर में 119 पारियों में 68 अर्धशतक और 51 शतक लगाये हैं। जो रूट ने अब तक 110 पारियों में 50 से अधिक अर्धशतक लगाये इस रिकॉर्ड को तोड़ने के लिए रूट को सिर्फ 9 और ऐसी पारियां खेलनी हैं, टेस्ट क्रिकेट में तेंदुलकर और जो रूट दोनों ने अपने करियर में 6-6 बार दोहरा शतक जड़ा है। रूट को तेंदुलकर से आगे निकलने के लिए अब केवल एक और दोहरे शतक की जरूरत है। रुट ने जिस प्रकार से तेंदुलकर जैसे दिग्गज के रिकॉर्ड्स को चुनौती दी है उससे उनकी क्षमता का अंदाजा होता है।

भारत की ऐतिहासिक जीत पर भाजपा नेताओं ने दी बधाई

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने श्रीलंका को हराकर रिकॉर्ड आठवीं बार एशिया कप का खिताब अपने नाम कर लिया है। इस शानदार जीत के बाद पुरस्कार वितरण समारोह में हाई-वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला, जब एशियन क्रिकेट कार्डसिल (एसीसी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी मैदान पर खड़े देखते रह गए, लेकिन भारतीय महिला टीम ने उनके हाथों से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। इस घटना ने एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया है, जिस पर देश के शीर्ष नेताओं की प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने महिला टी20 एशिया कप चैंपियनशिप 2026 जीतने पर टीम इंडिया की सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई दी है। गृह मंत्री अमित शाह ने भी एक्स पर पोस्ट कर इस जीत को सराहा। उन्होंने कहा कि भारत ने एशियाई क्रिकेट में एक और उपलब्धि हासिल की है। 8वां महिला एशिया कप खिताब जीतने पर हमारी चैंपियंस को बहुत-बहुत बधाई। पूरे टूर्नामेंट में अपने शानदार दबदबे से आपने देश को रोमांचित किया है और लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का मार्ग प्रशस्त किया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक्स पर इस जीत को ऐतिहासिक, अभूतपूर्व और असाधारण बताया। उन्होंने कहा, महिला एशिया कप 2026 का खिताब जीतने वाली भारतीय महिला क्रिकेट टीम के प्रत्येक सदस्य का हार्दिक अभिनंदन और समस्त देशवासियों को हृदयतल से बधाई। आपकी यह स्वर्णिम विजय भारत के गौरव को नई ऊंचाई देने के साथ करोड़ों बेटियों के सपनों को नई उड़ान और उनके संकल्पों को नया सामर्थ्य देगी। आप सभी भारत का गौरव हैं।

भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन ने भी भारतीय महिला क्रिकेट टीम को एशिया कप में यादगार जीत के लिए हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा, यह देश के लिए गर्व का पल है और भारत में महिला क्रिकेट के बढ़ते कद का सबूत है। उम्मीद है कि यह जीत अनगिनत युवा लड़कियों को इस खेल को अपनाने और आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगी। भारतीय टीम की यह जीत जहां एक ओर देश के लिए गौरव का क्षण है, वहीं ट्रॉफी विवाद ने एक नई बहस छेड़ दी है, जिसकी चर्चा हर तरफ हो रही है।

अभिषेक टी 20 क्रिकेट सबसे तेज 6000 रन बनाने वाले पहले भारतीय बने

दुबई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम के एशिया कप 2026 का खिताब एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी के हाथों से लेने से इंकार किये जाने को भारतीय क्रिकेटबोर्ड (बीसीसीआई) सचिव देवजीत सैकिया ने सही करार दिया है। सैकिया भी फाइनल के लिए यहां उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि यह पहली बार नहीं है। इससे पहले पुरुष टीम ने भी एशिया कप जीतने के बाद इसी तरह से नकवी से ट्रॉफी लेने से इंकार किया था। सैकिया ने कहा कि एशिया कप में ट्रॉफी लेना एक विवादित मुद्दा बन गया है और इसके पीछे अप्रैल 2025 की पहलगाम घटना प्रमुख कारण है, जिसके बाद से ही पाकिस्तान से संबंध तनावपू बने हुए हैं। बीसीसीआई सचिव ने बताया कि उस घटना के बाद देश के नागरिकों

का उन पर भारी दबाव था कि पड़ोसी देश के साथ किसी भी तरह के संबंध न रखे जाएं और न ही उनके साथ क्रिकेट खेला जाए। हालांकि, भारत सरकार की नीति है कि मल्टीनेशनल टूर्नामेंट में भारत को हर देश के खिलाफ खेलना होगा। इसी नीति का पालन करते हुए बीसीसीआई सभी मल्टीनेशनल टूर्नामेंट में अपनी टीमें भेज रहा है। सैकिया ने कहा कि इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि बीसीसीआई सारी शर्तें मान लेगा। उन्होंने कहा, जिस देश के साथ हमारे रिश्ते पहले से खराब हैं और पहले से भी अधिक बिगड़ गए हैं। उसके ही एक मंत्री से हम ट्रॉफी नहीं ले सकते हैं। यह बयान भारत के दृढ़ रुख को दर्शाता है कि खेल के मैदान पर प्रतिस्पर्धा भले हो, लेकिन सम्मान और राष्ट्रीय हितों से समझौता नहीं किया जाएगा। डेढ़ साल पहले भारतीय पुरुष टीम द्वारा लिए गए फैसले को जारी रखते हुए, महिला टीम ने भी नकवी के हाथों से ट्रॉफी नहीं लेकर उन्हें करारा झटका दिया है। सैकिया ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम के प्रदर्शन की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि टीम ने पूरे टूर्नामेंट में जबरदस्त खेल दिखाया और सभी मैच एकतरफा अंदाज में जीते। सैकिया ने टीम के प्रदर्शन पर गर्व व्यक्त किया और कहा कि देश में महिला क्रिकेट काफी तेजी से उभर रहा है।

भिवापुर में 'कचरा रोको-रास्ता रोको' आंदोलन

महिलाओं और बच्चों समेत सैकड़ों ग्रामीण सड़क पर उतरे

पद्मेश न्यूज। तिरोड़ा।

तहसील के भिवापुर ग्राम पंचायत क्षेत्र में तिरोड़ा नगर परिषद द्वारा कथित रूप से किए जा रहे कचरा डंपिंग के विरोध में रविवार, 13 सितंबर को ग्रामीणों ने 'कचरा रोको-रास्ता रोको' आंदोलन किया. महात्मा गांधी पुतला चौक पर सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक चले इस आंदोलन में महिलाओं, पुरुषों और बच्चों समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण शामिल हुए।

ग्रामीणों का आरोप है कि भिवापुर क्षेत्र में पिछले करीब 20 वर्षों से बिना आवश्यक अनुमति के तिरोड़ा शहर का कचरा डाला जा रहा है. इसके कारण गांव में प्रदूषण और बीमारी का खतरा बढ़ गया है. आंदोलन के दौरान ग्रामीणों ने 'कचरा गांव से हटाना है, गांव की शान बढ़ाना है' तथा 'जन्मभूमि के सम्मान में इस माटी के बेटे मैदान में' जैसे नारे लगाकर विरोध जताया. ग्रामीणों का कहना है कि सूचना के अधिकार के तहत प्राप्त जानकारी में भिवापुर में कचरा डंपिंग के लिए आवश्यक एनओसी नहीं होने की बात सामने आई है. ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि शुरुआत में यहां 'जैविक खाद निर्माण परियोजना' के नाम पर अनुमति लेकर शासन से निधि मंजूर कराई गई थी, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से खाद निर्माण के बजाय उक्त जगह का इस्तेमाल डंपिंग यार्ड के रूप में किया जा रहा है. इस मामले में ग्रामीणों ने निधि के कथित दुरुपयोग व भ्रष्टाचार की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की. साथ ही जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई करने और भिवापुर में तत्काल कचरा डालना बंद करने की मांग रखी. आंदोलन का नेतृत्व विमुस अध्यक्ष नलिंद्र मेश्राम व उपाध्यक्ष देवेंद्र रामटेके ने किया. इस अवसर पर राहुल रामटेके, खेमराज तुरकर, अनिल सूर्यवंशी, हेमराज मेश्राम, संजय सयाम, चंद्रकुमार मेश्राम, भाऊराव भगत, लक्ष्मण बारापात्रे, भैयालाल पटले, विजय ठाकरे, रतनलाल उईके, मोतीलाल पटले, अरुण मेश्राम, अमित दुबे, राजकमल रंगारी, पवन भगत, प्रवीण पटले, सौरभ रंगारी, योगेश्वर उईके सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे. ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि मांगों पर शीघ्र निर्णय नहीं लिया गया तो आंदोलन को और व्यापक किया जाएगा।

20 साल से समस्या, अब आर-पार की लड़ाई

आंदोलनकारियों ने कहा कि लंबे समय से गांव में कचरा डाले जाने से स्थानीय लोगों को दुर्गंध, प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है. ग्रामीणों ने इसे केवल कचरे का मुद्दा नहीं, बल्कि गांव के पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ा प्रश्न बताया.

ग्रामीणों की प्रमुख मांगें

भिवापुर में कचरा डंपिंग तत्काल बंद की जाए, डंपिंग यार्ड की वैधता व अनुमति की जांच की जाए, जैविक खाद परियोजना के नाम पर मंजूर निधि की जांच हो. कथित भ्रष्टाचार की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कार्रवाई की जाए, गांव के पर्यावरण व नागरिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए स्थायी समाधान किया जाए।

सहेसपुर में ग्रापं के खिलाफ ग्रामीण आक्रामक

जमा-खर्च का हिसाब नहीं मिलने का आरोप

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। तहसील के सहेसपुर गांव में ग्राम पंचायत के कामकाज को लेकर ग्रामीणों में नाराजगी बढ़ती जा रही है. ग्राम पंचायत के कामकाज में पारदर्शिता नहीं बरतने और बार-बार मांग करने के बावजूद जमा-खर्च का हिसाब उपलब्ध नहीं कराने का आरोप लगाते हुए ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत प्रशासन के खिलाफ असहयोग आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया है. इसके तहत ग्रामीणों ने फिलहाल किसी भी प्रकार का कर नहीं भरने का फैसला किया है।

ग्रामीणों का कहना है कि ग्रामसभा में पूछे गए ग्राम पंचायत के जमा-खर्च का स्पष्ट व उचित हिसाब जब तक सचिव, सरपंच और ग्राम पंचायत सदस्य उपलब्ध नहीं कराते, तब तक घर टैक्स, पानीपट्टी, दिवाबत्ती कर सहित किसी भी प्रकार का कर नहीं भरा जाएगा. सहेसपुर में ग्रामीणों के विभिन्न वाट्सऐप ग्रुप और निजी संदेशों के माध्यम से कर नहीं भरने संबंधी संदेश तेजी से प्रसारित हो रहा है. संदेश में ग्राम पंचायत के कामकाज में कथित मनमानी का विरोध करते हुए ग्रामीणों से एकजुट रहने की अपील की गई है. ग्रामीणों का कहना है कि यदि कर नहीं भरने के कारण ग्राम पंचायत की ओर से किसी ग्रामीण को किसी प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ता है तो पूरा गांव एकजुट होकर संबंधित समस्या का सामना करेगा और उसका समाधान करने का प्रयास करेगा. ग्रामीणों का कहना है कि ग्राम पंचायत के जमा-खर्च का पूरा व पारदर्शी हिसाब ग्रामसभा के समक्ष रखा जाए, जब तक हिसाब स्पष्ट नहीं किया जाता, तब तक वे किसी भी प्रकार का कर जमा नहीं करेंगे. हालांकि, ग्रामीणों द्वारा लगाए गए आरोपों पर ग्राम पंचायत प्रशासन की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है. प्रशासन का पक्ष सामने आने के बाद स्थिति और स्पष्ट हो सकेगी।

ड्रंक एंड ड्राइव प्रकरण में 10 हजार रु. का जुर्माना

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। शराब का सेवन कर लापरवाही से वाहन चलाने वाले चालक के खिलाफ दर्ज ड्रंक एंड ड्राइव मामले में प्रथमवर्ग न्याय दंडाधिकारी ने राष्ट्रीय लोक अदालत में आरोपी को 10 हजार रु. जुर्माने की सजा सुनाई. शनिवार को सुनाए गए इस फैसले से शराब पीकर वाहन चलाने वालों में हड़कंप मच गया है।

जानकारी के अनुसार, नवेगांवबांध पुलिस थाने में मोटर वाहन अधिनियम की धारा 185 के तहत शराब के नशे में वाहन चलाने का मामला दर्ज किया गया था. आरोपी अर्जुनी मोरगांव तहसील के महागांव का निवासी है. शनिवार को अर्जुनी मोरगांव स्थित प्रथमवर्ग न्याय दंडाधिकारी न्यायालय में आयोजित लोक अदालत में मामले की सुनवाई हुई. न्यायालय ने अपराध की गंभीरता को देखते हुए आरोपी पर 10 हजार रु. का जुर्माना लगाया. मामले की कार्रवाई और न्यायालयीन प्रक्रिया में नवेगांवबांध थाने के प्रभारी अजित पाटील के मार्गदर्शन में ट्रैफिक पुलिस अमलदार बावनकर तथा पुलिस शिपाई निर्वाण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मोटरसाइकिल चालक पर मामला दर्ज

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। डुग्गीपार थाने के तहत ग्राम कोहमारा चौक में अर्जुनी मोरगांव तहसील के राजगुड़ा निवासी विकास मोहन कुंभरे (24) को शराब के नशे में मोटरसाइकिल चलाते हुए पकड़ा गया. फरियादी पुलिस उपनिरीक्षक रंजित मट्टामी की शिकायत पर डुग्गीपार पुलिस ने मामला दर्ज किया है. जांच हवलदार घनश्याम उईके कर रहे हैं।

रेलवे ट्रेनों की देरी से विद्यार्थी परेशान

गोंदिया-बालाघाट मार्ग पर ट्रेनें समय पर चलाने की पालकों की मांग

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। गोंदिया-बालाघाट रेल मार्ग पर पिछले कुछ दिनों से ट्रेनें रोजाना 2 से 3 घंटे देरी से चलने के कारण स्कूल-कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों की परेशानी बढ़ गई है. समय पर ट्रेन नहीं मिलने से विद्यार्थियों को कक्षाओं, परीक्षाओं और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में नुकसान उठाना पड़ रहा है.

इस मार्ग पर बड़ी संख्या में विद्यार्थी रोजाना शिक्षा के लिए रेल सेवा पर निर्भर रहते हैं. ट्रेन के इंतजार में उन्हें स्टेशनों पर लंबे समय तक रुकना पड़ता है. इसके बाद ट्रेन के विलंब से पहुंचने पर स्कूल-कॉलेज पहुंचने में भी देरी होती है. इससे विद्यार्थियों की उपस्थिति और पढ़ाई प्रभावित होने की चिंता पालकों ने व्यक्त की है. पालकों व विद्यार्थियों ने रेल प्रशासन से गोंदिया-बालाघाट मार्ग की ट्रेनों का संचालन निर्धारित समयानुसार करने तथा लगातार हो रही देरी का कारण स्पष्ट करने की मांग की है. विद्यार्थियों के शैक्षणिक नुकसान को देखते हुए रेल प्रशासन से जल्द ठोस कदम उठाने की अपेक्षा व्यक्त की गई है।

शराब परियोजना नहीं, गोंदिया की जनता का स्वास्थ्य और भविष्य बचाएं

महुआ डिस्टिलरी की 18 सितंबर की जनसुनवाई का सांसद डॉ. प्रशांत पडोले ने किया विरोध

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। गोरेगांव एमआईडीसी के ए-12 क्षेत्र में प्रस्तावित 5 केएलपीडी महुआ फूल/फल आधारित स्पिरिट डिस्टिलरी व ब्लेंडिंग-बॉटलिंग यूनिट की 18 सितंबर 2026 को होने वाली जनसुनवाई का सांसद डॉ. प्रशांत पडोले ने कड़ा विरोध किया है. उन्होंने जनसुनवाई तत्काल स्थगित कर परियोजना की पूरी जानकारी आम नागरिकों को उपलब्ध कराने की मांग की है।

सांसद पडोले ने कहा कि शराब के अत्यधिक सेवन से व्यक्ति के स्वास्थ्य के साथ परिवार की आर्थिक स्थिति और सामाजिक जीवन भी प्रभावित होता है. ऐसे में गोंदिया की धरती पर नए शराब निर्माण प्रकल्प का निर्णय लेते समय स्थानीय जनता की राय लेना जरूरी है. उन्होंने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने 23 अगस्त को जनसुनवाई का आदेश जारी किया, लेकिन तारीख, समय, स्थान और परियोजना की जानकारी जिले के प्रमुख समाचार पत्रों में पर्याप्त रूप से प्रकाशित नहीं की गई. जनता को जानकारी दिए बिना होने वाली जनसुनवाई केवल औपचारिकता बनकर रह जाएगी. सांसद ने मांग की कि 18 सितंबर की सुनवाई स्थगित कर परियोजना के पर्यावरणीय, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी संभावित प्रभावों की जानकारी सार्वजनिक की जाए, नागरिकों को आपत्तियां और सुझाव रखने के लिए पर्याप्त समय देने के बाद ही नई जनसुनवाई आयोजित की जाए।

गोंदिया में उद्योग आएं, लेकिन वे रोजगार देने वाले और पर्यावरणपूरक होने चाहिए. जनता के स्वास्थ्य और भावी पीढ़ियों के भविष्य की कीमत पर विकास मंजूर नहीं है।

-डॉ. प्रशांत पडोले, सांसद

गणेशोत्सव में डी.जे. की कर्कश आवाज पर पुलिस की नजर

लेजर लाइट, मिड मिक्सर व मिक्सर लाइट पर प्रतिबंध

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। आगामी गणेशोत्सव के दौरान जिले में कानून-व्यवस्था बनाए रखने और उत्सव शांतिपूर्ण व सुचारु रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से पुलिस प्रशासन ने डीजे संचालकों और मालिकों को सख्त निर्देश दिए हैं. शनिवार को पुलिस मुख्यालय स्थित प्रेरणा हॉल में जिले के डीजे संचालक-मालिकों की बैठक आयोजित की गई. बैठक की अध्यक्षता पुलिस अधीक्षक गोरख भामरे ने की।

बैठक में उपविभागीय पुलिस अधिकारी, थाना प्रभारी व अन्य पुलिस अधिकारी, जिले के गोपनीय अमलदार तथा करीब 100 डीजे संचालक-मालिक उपस्थित थे. पुलिस अधीक्षक भामरे ने स्पष्ट निर्देश दिए कि गणेशोत्सव की रैलियों और विसर्जन जुलूस के दौरान लेजर लाइट, मिड मिक्सर व मिक्सर लाइट का उपयोग नहीं किया जाए. इनका उपयोग पाए जाने पर संबंधित मंडल और डीजे संचालक-मालिक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी. उन्होंने कहा कि डीजे की कर्कश आवाज से नागरिकों के जनजीवन पर प्रतिकूल असर पड़ता है. इसलिए निर्धारित ध्वनि सीमा का कड़ाई से पालन करना आवश्यक है. निर्धारित सीमा से अधिक आवाज में डीजे बजाने पर तत्काल कार्रवाई की जाएगी. पुलिस अधीक्षक ने बताया कि डीजे वाहनों में दोनों ओर पैनल बाहर निकालकर चलाने से कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं. इसे गंभीरता से लेते हुए उपप्रादेशिक परिवहन विभाग, गोंदिया के समन्वय से जिले के डीजे वाहनों की जांच की जाएगी. नियमों का उल्लंघन करने वाले अथवा अवैध तरीके से तैयार किए गए डीजे वाहनों के खिलाफ नियमानुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी. बैठक के दौरान उपस्थित डीजे संचालक-मालिकों की समस्याएं व सुझाव भी सुने गए. पुलिस प्रशासन ने स्पष्ट किया कि गणेशोत्सव के दौरान नियमों का पालन करना सभी के लिए अनिवार्य होगा और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरती जाएगी।

विसर्जन जुलूस शांतिपूर्ण रखने के निर्देश

गणेश प्रतिमा विसर्जन के दौरान ध्वनि मर्यादा व अन्य निर्धारित नियमों का पालन करने के निर्देश भी दिए गए. पुलिस प्रशासन ने गणेश मंडलों और डीजे संचालकों से विसर्जन जुलूस तथा विसर्जन प्रक्रिया को शांतिपूर्ण व व्यवस्थित तरीके से संपन्न कराने में सहयोग करने की अपील की।

नवेगांवबांध जलाशय में 85.10 प्रश. उपयोगी जलसंचय

रबी-खरीफ की सिंचाई के साथ पेयजल संकट दूर करने में मिलेगी बड़ी मदद

पद्मेश न्यूज। गोंदिया। पर्यटन और सिंचाई की दृष्टि से महत्वपूर्ण नवेगांवबांध जलाशय (शाखा क्र. 1) में इस वर्ष संतोषजनक जलसंचय हुआ है. 13 सितंबर 2026 को दर्ज आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार जलाशय का जलस्तर 277.10 मीटर (11 फीट) तक पहुंच गया है. जलाशय में 25.190 दशलक्ष घनमीटर उपयोगी जलसंचय दर्ज किया गया है, जो कुल उपयोगी जलसंचय का 85.10 प्रश. है।

जलाशय में पर्याप्त पानी जमा होने से आगामी खरीफ व रबी मौसम में फसलों के लिए सिंचाई का पानी उपलब्ध होने की उम्मीद बढ़ गई है. इसके साथ ही आसपास के क्षेत्रों में पेयजल की जरूरत पूरी करने में भी यह जलसंचय महत्वपूर्ण साबित होगा. जलाशय में पर्याप्त पानी होने से किसानों में राहत और संतोष का माहौल है. सिंचाई विभाग के उपविभागीय अधिकारी समीर बनसोडे ने बताया कि 13 सितंबर को जलाशय का जलस्तर 277.10 मीटर तथा उपयोगी जलसंचय 25.190 दशलक्ष घनमीटर दर्ज किया गया है. जलाशय 85.10 प्रश. भर चुका है. सिंचाई विभाग के अधीक्षक अभियंता प्रवीण झोड, कार्यकारी अभियंता मोरघडे, पठारे, सिंग तथा उपविभागीय अधिकारी समीर बनसोडे ने जलाशय का दौरा कर जलाशय व नहर की स्थिति का निरीक्षण किया. जलाशय में पर्याप्त पानी जमा होने से रबी और आगामी खरीफ मौसम की फसलों के लिए

सिंचाई सुविधा मजबूत हुई है. किसानों को समय पर पानी मिलने की संभावना से कृषि क्षेत्र को भी इसका लाभ मिलने की उम्मीद है. साथ ही आसपास के गांवों की पेयजल व्यवस्था के लिए भी यह जलसंचय राहत देने वाला है।

जलाशय की खूबसूरती ने बढ़ाया आकर्षण

85 प्रश. से अधिक जलसंचय होने से नवेगांवबांध जलाशय का प्राकृतिक सौंदर्य भी निखर उठा है. चारों ओर फैला जल और जलाशय परिसर में दिखाई देने वाले पक्षियों का वावर पर्यटकों व प्रकृतिप्रेमियों को आकर्षित कर रहा है. जलाशय में भरपूर पानी होने से पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है. 25.190 दशलक्ष घनमीटर उपयोगी जलसंचय और 85.10 प्रश. भराव के साथ नवेगांवबांध जलाशय इस वर्ष कृषि, पेयजल और पर्यटन तीनों दृष्टि से महत्वपूर्ण साबित होने जा रहा है।

पद्मेश न्यूज़
शहर | समाज | गांव

बालाघाट एक्सप्रेस
/padmeshmedia /padmeshmedia
epaper.balaghatexpress.in
E-mail: balaghatexpress@gmail.com

न्यूज गैलरी

बस स्टैंड में यात्री की संदिग्ध हालत में मौत

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। नगर के बस स्टैंड मे बीती देर शाम उस समय हड़कंप मच गया, जब नागपुर से बालाघाट लौट रहे एक यात्री की बस में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक की पहचान गढ़ी क्षेत्र के ग्राम बलगांव निवासी तिहारी सिंह धुर्वे के रूप में हुई है।बताया गया कि वह कुछ दिन पूर्व रोजगार की तलाश में नागपुर गया था, जहां स्वास्थ्य खराब होने के बाद वापस अपने गांव लौट रहा था। लेकिन बस में ही उसकी संदिग्ध स्थिति में मौत हो गई।

रास्ते मे ही मजदूर की हो चुकी थी मौत

प्राप्त जानकारी के अनुसार तिहारी सिंह धुर्वे 13 सितंबर को नागपुर से बस में सवार होकर बालाघाट आ रहा था। सफर के दौरान उसकी मौत हो गई। बस के बालाघाट बस स्टैंड पहुंचने के बाद चालक ने उसे नीचे उतारने के लिए जगाने का प्रयास किया, लेकिन यात्री की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर जांच की गई। इस दौरान उसके मृत होने की जानकारी सामने आई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बरामद कर आवश्यक कार्रवाई शुरू की। पुलिस ने मृतक की शिनाख्त गढ़ी क्षेत्र के बलगांव निवासी तिहारी सिंह धुर्वे के रूप में की। घटना की सूचना परिजनों को दी गई, जिसके बाद उन्हें बालाघाट बुलाया गया।सोमवार की शाम परिजनों की मौजूदगी में शव का पोस्टमार्टम कराया गया, जिसके बाद शव अंतिम संस्कार के लिए शव उनके परिजनों के सुपुर्द किया गया है। फिलहाल मौत के वास्तविक कारणों का पता नहीं चल सका है पुलिस मामले की जांच कर रही है।

तीखे सवालों के घेरे में घिर गई सेवा संकल्प अभियान की जानकारी

बाहरी इन्फ्लुएंसर विवाद पर नीता पटेरिया से तीखे सवाल, फेसबुक पोस्ट हटाने से लेकर बच्चों की मौत तक पत्रकारों ने मांगा जवाब

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। स्थानीय भाजपा कार्यालय में 14 सितंबर को पूर्व सांसद नीता पटेरिया ने भाजपा के राष्ट्रव्यापी सेवा संकल्प अभियान को लेकर प्रेसवार्ता की, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी देने पहुंची भाजपा की प्रेसवार्ता में स्थानीय पत्रकारों ने संगठन और सरकार से जुड़े कई तीखे सवाल दाग दिए। सेवा संकल्प अभियान की जानकारी से शुरू हुई प्रेसवार्ता देखते ही देखते बाहरी इन्फ्लुएंसर विवाद, भाजपा के सोशल मीडिया पोस्ट और आदिवासी बच्चों की मौत के मुद्दे पर सवाल-जवाब का मंच बन गई।

पूर्व सांसद नीता पटेरिया ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक जिलेभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। सेवा संकल्प अभियान के तहत आशीर्वाद का दीया, मेरे सपनों का भारत, नमो सेवा, सेवा की कहानी और सेवा मेरा योगदान सहित कई कार्यक्रम होंगे। इसके अलावा 25 साल-25 कहानी और विकसित भारत संकल्प यात्रा जैसे आयोजनों के माध्यम से भी भाजपा कार्यकर्ताओं को सेवा गतिविधियों से जोड़ा जाएगा। हालांकि प्रेस वार्ता की जानकारी के बाद पत्रकारों ने बीते दिनों बालाघाट में सामने आए बाहरी इन्फ्लुएंसर और यूट्यूबर विवाद को लेकर सवालों का रुख कर दिया । बताया गया कि प्रदेश स्तर से सरकार की छवि को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से बाहरी सोशल मीडिया क्रिएटरों को बुलाए जाने की बात सामने आई थी, जबकि इसी दौरान स्थानीय पत्रकारों के साथ कथित तौर पर विवाद और अपमानजनक व्यवहार की स्थिति बनी थी। पत्रकारों ने इस पूरे घटनाक्रम को पूर्व सांसद के सामने रखते हुए पूछा कि जब जिले में स्थानीय मीडिया मौजूद है तो सरकार की छवि प्रस्तुत करने के लिए बाहर से लोगों को बुलाने की जरूरत क्यों पड़ी ?, पत्रकारों ने यह सवाल भी उठाया कि यदि बाहरी इन्फ्लुएंसरों को सरकारी स्तर से बुलाया गया था, तो स्थानीय पत्रकारों के साथ हुए कथित विवाद की जिम्मेदारी आखिर किसकी है। इस पर नीता पटेरिया ने मामले की जानकारी नहीं होने की बात कहते हुए इसे संज्ञान में लेने और वरिष्ठ स्तर तक पहुंचाने की बात कही।प्रेसवार्ता में भाजपा के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर डाली गई एक पोस्ट का मुद्दा भी जमकर उठा। भाजपा के जिला अध्यक्ष रामकिशोर कावरे के सोशल मीडिया अकाउंट पर अभिजीत दीपके को लेकर बालाघाट के पत्रकारों ने खदेड़ा जैसी पोस्ट किए जाने पर पत्रकारों ने सवाल खड़े किए। बताया गया कि सवाल उठने के बाद उक्त पोस्ट को तत्काल हटवा दिया गया। पत्रकारों ने पूछा कि ऐसी पोस्ट आखिर किस आधार पर डाली गई और स्थानीय पत्रकारों को लेकर इस तरह की धारणा सोशल मीडिया पर क्यों प्रस्तुत की गई ?, बाहरी इन्फ्लुएंसरों को भोपाल से बुलाकर सरकार की अच्छाई दिखाने के आरोपों पर भी नीता पटेरिया से सवाल किया गया। इस दौरान प्रेसवार्ता में मौजूद निशांत बिसेन ने नीता पटेरिया को बचाने स्वयं सामने आ गये , लेकिन सवालों से खुद को घिरता देख सवाल को नीता पटेरिया पर ही डाल दिया गया। अंततः नीता पटेरिया ने पूरे मामले की जानकारी नहीं होने का हवाला देते हुए वरिष्ठ स्तर पर विषय रखने की बात कही। प्रेसवार्ता में आदिवासी अंचल में बच्चों की लगातार हो रही मौत का मुद्दा भी उठा। नीता पटेरिया ने इसे बेहद दुखद घटना बताया। उन्होंने क्षेत्र में विकास की कमी को नक्सलवाद से जोड़ते हुए कहा कि नक्सल प्रभावित क्षेत्र में लंबे समय तक विकास प्रभावित रहा है। उन्होंने दावा किया कि आने वाले छह महीनों में सरकार नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास की दिशा में काम करेगी और वहां के लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयास किया जाएगा। भाजपा जिला अध्यक्ष रामकिशोर कावरे ने भी बच्चों की मौत की घटना को दुखद बताया और कहा कि सरकार इस मामले को संवेदनशीलता के साथ देख रही हैं। जो कमियां सामने आई हैं, उन्हें दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि फिलहाल प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना प्राथमिकता है, जबकि जिम्मेदार लोगों की जिम्मेदारी भी धीरे-धीरे तय की जाएगी। इस पूरी प्रेसवार्ता में भाजपा के सेवा संकल्प अभियान से ज्यादा चर्चा उन सवालों की रही, जो स्थानीय पत्रकारों ने संगठन के सामने रखे। एक तरफ भाजपा सेवा और जनकल्याण का संदेश देने की तैयारी कर रही है, वहीं दूसरी तरफ स्थानीय पत्रकारों के सम्मान, बाहरी इन्फ्लुएंसरों की भूमिका और आदिवासी बच्चों की मौत जैसे मुद्दे संगठन के सामने असहज सवाल बनकर खड़े हैं। अब देखना यह होगा कि इन सवालों पर सिर्फ संज्ञान लेने की बात होती है या वास्तव में जिम्मेदारी भी तय होती है।

540 डिग्री की स्पिनिंग किक से लांजी के तोषराम बने राष्ट्रीय चैंपियन

74 किलो भार वर्ग में जीता स्वर्ण पदक, आधिकारिक सीनियर राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता में जिले का बढ़ाया मान

पद्मेश न्यूज। लांजी। राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता के फाइनल में लांजी के तोषराम कनोजे ने ऐसा दमदार प्रदर्शन किया कि मुकाबला देखने वाले भी रोमांचित हो उठे। निर्णायक क्षण में तोषराम ने 540 डिग्री की शानदार घूमती हुई किक लगाकर प्रतिद्वंद्वी को नॉकआउट कर दिया। इस जबरदस्त प्रदर्शन के साथ उन्होंने 74 किलोग्राम भार वर्ग का फाइनल अपने नाम करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया और राष्ट्रीय चैंपियन बनने का गौरव प्राप्त किया। इंदौर के पुष्प वाटिका में 8 से 12 सितंबर तक आयोजित भारतीय किकबॉक्सिंग संगठन की आधिकारिक सीनियर एवं मास्टर्स राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता 2026 में देशभर के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इसी प्रतियोगिता में लांजी निवासी तोषराम कनोजे ने 74 किलोग्राम भार वर्ग में हिस्सा लिया और अपने शानदार प्रदर्शन से स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया।

फाइनल में तकनीक और आक्रामकता का दिखा शानदार मेल

फाइनल मुकाबले में तोषराम ने शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाते हुए प्रतिद्वंद्वी पर दबाव बनाए रखा। उन्होंने अपनी गति, संतुलन और तकनीक का बेहतरीन इस्तेमाल किया। मुकाबले के निर्णायक दौर में तोषराम ने 540 डिग्री

की घूमती हुई किक लगाई, जिसके बाद प्रतिद्वंद्वी मुकाबला जारी नहीं रख सका और नॉकआउट के साथ तोषराम को विजेता घोषित किया गया। स्वर्ण पदक जीतने के साथ ही तोषराम ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उनकी इस उपलब्धि से लांजी के खेल जगत में खुशी का माहौल है।

जिले के किकबॉक्सिंग इतिहास में पहली बड़ी राष्ट्रीय उपलब्धि

तोषराम कनोजे की इस सफलता को लांजी ही नहीं अपितु बालाघाट जिले के किकबॉक्सिंग इतिहास में महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। आधिकारिक एवं मान्यता प्राप्त सीनियर राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता में जिले के खिलाड़ी द्वारा पदक जीतने का गौरव पहली बार तोषराम के नाम दर्ज हुआ है। राष्ट्रीय मंच पर स्वर्ण पदक जीतकर उन्होंने न केवल अपनी प्रतिभा साबित की, बल्कि बालाघाट जिले के युवा खिलाड़ियों के लिए भी नई राह तैयार की है।

विनेश ने भी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में लिया हिस्सा

इसी राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बालाघाट जिले के विनेश कनोजे ने भी 63 किलोग्राम भार वर्ग में हिस्सा लिया। उन्होंने प्रतियोगिता में संघर्षपूर्ण प्रदर्शन करते हुए नौवां स्थान प्राप्त किया।

खिलाड़ियों को प्रशिक्षण भी देते हैं तोषराम

तोषराम कनोजे स्वयं एक खिलाड़ी होने के साथ-साथ अन्य खिलाड़ियों को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन भी देते हैं। उनके मार्गदर्शन में अभ्यास करने वाले खिलाड़ियों ने भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। ऐसे में राष्ट्रीय चैंपियनशिप में स्वयं स्वर्ण पदक जीतना उनके लिए दोहरी उपलब्धि मानी जा रही है। तोषराम की इस सफलता से जिले के युवा खिलाड़ियों में उत्साह बढ़ा है। खेल प्रेमियों का मानना है कि राष्ट्रीय स्तर पर मिली इस उपलब्धि से जिले में किकबॉक्सिंग को नई पहचान मिलेगी और अधिक युवा इस खेल को करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। 540 डिग्री की घूमती हुई किक से नॉकआउट और उसके बाद स्वर्ण पदक—तोषराम कनोजे की यह जीत जिले के खेल इतिहास में लंबे समय तक याद की जाएगी।

बालाघाट पुलिस महकमे में फेरबदल, एक अधिकारी की आमद तो दो की रवानगी

प्रीतम सिंह बालरे होंगे बालाघाट के नए नगर पुलिस अधीक्षक, महिला सुरक्षा और अजाक डीएसपी का भी तबादला

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। मध्यप्रदेश शासन के गृह विभाग ने 13 सितंबर की देर शाम पुलिस अधिकारियों के तबादले का आदेश जारी किया है। आदेश के तहत 10 आईपीएस अधिकारी तो 137 पुलिस अफसरों को इधर से उधर किया गया है। जारी की गई स्थानातंरण सूची के मुताबिक बालाघाट पुलिस महकमे में भी फेरबदल किया गया है। जिले में प्रीतम सिंह बालरे को नया नगर पुलिस अधीक्षक बालाघाट पदस्थ किया गया है। वहीं बालाघाट में पदस्थ दो अधिकारियों को जिले से बाहर भेजा गया है।

इन्हें किया गया इधर से उधर

जारी आदेश के अनुसार प्रीतम सिंह बालरे, जो वर्तमान में मंडला जिले के निवास में एसडीओपी के पद पर पदस्थ थे, उन्हें नगर पुलिस अधीक्षक, बालाघाट की जिम्मेदारी सौंपी गई है।इसी तरह बालाघाट में महिला सुरक्षा की उप पुलिस अधीक्षक रहीं प्रतिष्ठा राठौर का तबादला कर उन्हें सहायक पुलिस आयुक्त, मुख्यालय एवं प्रशिक्षण, नगरीय पुलिस इंदौर पदस्थ किया गया है।वहीं अजाक के उप पुलिस अधीक्षक बिंदुसार सिंह को बालाघाट से स्थानांतरित कर उप पुलिस अधीक्षक ग्रामीण,ग्वालियर पदस्थ किया गया है।गृह विभाग ने यह पदस्थापन आगामी आदेश तक अस्थायी रूप से किए जाने की बात आदेश में कही है।

बंजारीटोला में महिला की संदिग्ध मौत

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। मलाजखंड थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 8 बंजारीटोला में एक महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आने के बाद क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सोमवार को महिला नेहा विश्वकर्मा का शव उसके घर में बिस्तर पर मिला। प्रथमदृष्टया मामला हत्या से जुड़ा होने की आशंका जताई जा रही है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है और मृतिका के परिजनों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं।

रविवार रात की बताई जा रही घटना

घटना 13 सितंबर की रात की बताई जा रही है। सोमवार को महिला का शव बरामद होने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। मलाजखंड थाना प्रभारी मनोज मांगरे के अनुसार महिला की मौत को लेकर सभी पहलुओं पर जांच की जा रही है। शव का पोस्टमार्टम कराए जाने के बाद अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को सौंप दिया गया है।

पति पर संदेह, चरित्र को लेकर विवाद की चर्चा

मामले में मृतिका के पति दुर्गेश विश्वकर्मा पर हत्या की आशंका जताई जा रही है। सूत्रों के अनुसार पति द्वारा कथित तौर पर कुछ लोगों के सामने पत्नी की गला दबाकर हत्या करने की बात कहे जाने की चर्चा है। हालांकि, पुलिस ने इस बात की अभी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।बताया जा रहा है कि पति को पत्नी के चरित्र पर संदेह था और इसी को लेकर दोनों के बीच विवाद की बात सामने आ रही है।पुलिस अब इस एंगल सहित अन्य संभावित कारणों की भी जांच कर रही हैं।

दो छोटे बच्चों के सिर से उठा मां का साया

जानकारी के अनुसार मृतिका के दो छोटे बच्चे हैं। इनमें एक की उम्र करीब 4 वर्ष और दूसरे की करीब 2 वर्ष बताई जा रही है। घटना के बाद दोनों मासूमों के सिर से मां का साया उठ गया है। वहीं महिला की मौत की खबर सामने आने के बाद बंजारीटोला क्षेत्र में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं।पुलिस का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद ही महिला की मौत के वास्तविक कारण और घटना की परिस्थितियां स्पष्ट हो सकेंगी।

कथित पुलिस ज्यादती के खिलाफ मरार माली समाज का आज किरनापुर में शक्ति प्रदर्शन

गर्भवती महिला और उसके पति की गिरफ्तारी व कथित अमानवीय यातना का मामला,10 विकासखंडों से समाज के लोगों के जुटने का दावा

पद्मेश न्यूज। बालाघाट। किरनापुर थाना क्षेत्र के टिमकीटोला गांव की महिला सावित्री चौधरी और उसके पति कैलाश चौधरी की गिरफ्तारी तथा पुलिस पर लगाए गए कथित अमानवीय व्यवहार के आरोपों ने अब सामाजिक आंदोलन का रूप ले लिया है। मामले में दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग को लेकर जिला मरार माली समाज के आह्वान पर 15 सितंबर को किरनापुर में एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन आयोजित किया जाएगा। समाज ने इस प्रदर्शन के जरिए पुलिस कार्रवाई की निष्पक्ष जांच और कथित दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाने का ऐलान किया है। जिला मरार माली समाज के अध्यक्ष रमेश पंचे ने पत्रकारवार्ता में बताया कि 15 सितंबर को सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक किरनापुर के उत्कृष्ट विद्यालय मैदान में धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। इससे पहले समाज की ओर से रैली निकाली जाएगी, जो क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से होते हुए धरना स्थल तक पहुंचेगी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की सूचना प्रशासन को पहले ही दी जा चुकी है। समाज के अध्यक्ष रमेश पंचे के अनुसार अगस्त माह में किरनापुर क्षेत्र में चोरी की घटना हुई थी। इसी मामले में संदेह के आधार पर किरनापुर पुलिस द्वारा 2 सितंबर को टिमकीटोला निवासी कैलाश चौधरी और उसकी गर्भवती पत्नी सावित्री चौधरी को घर से ले जाने का आरोप लगाया गया है। समाज का आरोप है कि थाने में दोनों के साथ मारपीट और अमानवीय व्यवहार किया गया। महिला के संबंध में लगाए गए गंभीर आरोपों को लेकर समाज ने निष्पक्ष जांच की मांग की है। पंचे ने आरोप लगाया कि गर्भवती महिला के साथ पुरुष पुलिसकर्मियों द्वारा कथित तौर पर मारपीट की गई और उसे निर्वस्त्र कर प्रताड़ित किया गया। समाज का कहना है कि महिला के शरीर पर कथित मारपीट के निशान भी देखे जा सकते हैं। इन गंभीर आरोपों के बाद समाज ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने और दोषी पाए जाने वाले पुलिसकर्मियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की थी। अब इसी मांग को लेकर समाज ने आंदोलन का रास्ता अपनाया है।15 सितंबर को प्रस्तावित रैली राणा हनुमान सिंह कॉलेज परिसर से शुरू होगी। रैली शहीद लिखीराम कावरे चौक होते हुए किरनापुर बाजार पहुंचेगी और विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करने के बाद उत्कृष्ट विद्यालय मैदान पहुंचेगी। यहां समाज द्वारा धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। मरार माली समाज ने दावा किया है कि इस प्रदर्शन में जिले के सभी 10 विकासखंडों से समाज के लोग शामिल होंगे। इसके जरिए प्रशासन पर मामले में निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई का दबाव बनाने का प्रयास किया जाएगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक उमेश बागरेचा द्वारा पद्मेश पब्लिकेशन, वार्ड नं.9, गुजरी चौक, बालाघाट (म.प्र.) से मुद्रित कराकर दैनिक बालाघाट एक्सप्रेस कार्यालय, काली पुतली चौक, बालाघाट(म.प्र.) से प्रकाशित,
प्रधान संपादक : उमेश बागरेचा, मो.नं. :9425138710, , ई-मेल- balaghatexpress@gmail.com पंजीयन क्रं. MPHIN/2009/32311, न्यायालयीन क्षेत्राधिकार बालाघाट